RNI No. RAJHIN/2020/11458

वर्ष : 6 अंक : 11 नवंबर, 2026 मूल्य : 80 रु. पृष्ठ : 44

राजस्थान टुडे



आधुनिकता में खो गई पारम्परिक दीपावली 5

ज्योत से ज्योत जगाते चलो.... 7

त्योहार मनाएं, कर्ज का बोझ न बढ़ाएं 11

तेज रोशनी में अपनों को ढूंढती आंखें 17


ESTD. 1927
Shri Mishrilal® Hotel
दिपावली
की हार्दिक शुभकामनाएँ
SHRI MISHRILAL HOTEL
Shri Mishrilal Hotel
घंटाघर, जोधपुर
सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर

राजस्थान टुडे

आपकी पत्रिका, आपकी बात
www.rajasthantoday.online

RNI No. RAJHIN/2020/11458
वर्ष 6, अंक 11, नवंबर 2026

प्रधान सम्पादक - दिनेश रामावत
प्रबंध सम्पादक - राकेश गांधी
राजनीतिक सम्पादक - सुरेश व्यास
कार्यकारी सम्पादक - अजय अस्थाना
सह सम्पादक - बलवंत राज मेहता

विशेष प्रतिनिधि
नई दिल्ली - राधा रमण
जयपुर - मणिमाला शर्मा
अजमेर - धर्मेंद्र प्रजापति
उदयपुर - मधुलिका सिंह
कोटा - अरविन्द गुप्ता
बीकानेर- राकेश आचार्य
पाली - चैनराज भाटी
सिरोही - गणपत सिंह
जालोर - तरुण गहलोत
बाड़मेर - धर्मसिंह भाटी

रेखाचित्र- राजेंद्र यादव

विज्ञापन प्रतिनिधि
जोधपुर - प्रवीण गिरी - 99280 26609

संपादकीय कार्यालय
बी-4, फोर्थ फ्लोर, एम.आर. हाईट्स महावीर कॉलोनी,
भास्कर सर्किल, रातानाड़ा, जोधपुर - 342 011
व्हाट्सएप नंबर - 81078 00000
ई-मेल - rajasthantoday@gmail.com

सभी विवादों का निपटारा जोधपुर की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में किया जाएगा।

राजस्थान टुडे में प्रकाशित आलेख लेखकों की राय है। इसे राजस्थान टुडे की राय नहीं समझा जाए। राजस्थान टुडे के मुद्रक, प्रकाशक और प्रधान सम्पादक इसके लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। हमारी भावना किसी वर्ग या व्यक्ति को आहत करना नहीं है। विज्ञापनदाताओं के किसी भी दावे का उत्तरदायित्व राजस्थान टुडे का नहीं होगा।

मारवाड़ मीडिया प्लस के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक पूनम अस्थाना द्वारा बी-4, फोर्थ फ्लोर, महावीर कॉलोनी, रातानाड़ा, जोधपुर-342 011 से प्रकाशित और डी.बी. कॉर्प लिमिटेड, 10 जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर में मुद्रित। संपादक : अजय अस्थाना*
(*पी आर पी एक्ट के तहत उत्तरदायी)

अंदर विशेष

4 अपनी बात
एक दीप भीतर भी

नियमित कॉलम

21 बोल हरि बोल
24 बात बेलगाम
38 अभिव्यक्ति
42 ग्रहों की चाल

5 **आधुनिकता में खो गई पारम्परिक...**



7 **ज्योत से ज्योत जगाते चलो....**



9 **स्क्रीन से रिसता सन्नाटा**



11 **आर्थिक विवेक...**
त्योहार मनाएं, कर्ज का बोझ न बढ़ाएं

13 **सुविधा की कीमत...**
क्या हमारा अपना बाजार पीछे छूट रहा है?

15 **डिजिटल अलर्ट...**
एक गलत क्लिक पड़ सकता है भारी

17 **संवेदना...**
तेज रोशनी में अपनों को ढूंढती आंखें



19 **डिजिटल थकान...**
मन को थका रहीं हमारी डिजिटल आदतें

25 **बातचीत...**
मारवाड़ी मेरे दिल की जुबान

29 **उपभोक्तावाद और त्योहार...**
चकाचौंध में गुम हो रहीं असली खुशियां

31 **दायित्व बोध...**
उत्सव मेरा, जिम्मेदारी भी मेरी

33 **आत्मनिर्भरता...**
हुनर का नया बाजार



36 **डांडिया महोत्सव...**
डांडिया की खनक से गूंजा ब्ल्यू सिटी

39 **मायाजाल...**
स्क्रीन के हवाले बचपन

एक दीप भीतर भी



घर चमक रहा है, बाजार चमक रहा है। बस मन का कोना हर बार अछूता रह जाता है।

हर साल दिवाली से पहले हमारे घरों में एक अघोषित अभियान चलता है। जाले उतरते हैं, पुराना सामान बाहर आता है, दीवारें नए रंग में नहाती हैं। नजर इस पर भी रहती है कि पड़ोसी की झालर कहीं हमारी झालर से लंबी तो नहीं। घर चमकता है, बाजार चमकता है। बस एक कोना हर बार अछूता रह जाता है, मन का कोना।

पिछली बार आपने दिवाली से पहले किसी पुराने झगड़े की सफाई कब की थी? जवाब शायद असुविधाजनक होगा।

हम स्टोर रूम की धूल तो झाड़ लेते हैं, पर बरसों पुरानी नाराजगी को संदूक में सहेजकर रखते हैं, जैसे वह कोई पुश्तैनी गहना हो।

पहले फोन की प्रतीक्षा... असल दिक्कत यह है कि मन की सफाई में कोई ठेकेदार नहीं मिलता। घर की पुताई कोई और कर देता है, यह काम खुद करना पड़ता है। और इसकी शुरुआत वहीं से होती है, जहां सबसे ज्यादा तकलीफ होती है। अपनी गलती मानने से। हम दूसरों की चूक पर फौरन फैसला सुना देते हैं, पर अपनी बारी आने पर अचानक वकील बन जाते हैं।

मतभेद होता है तो इंतजार करते हैं कि पहला फोन सामने वाला करे। वह भी यही इंतजार करता है। नतीजा यह कि दो लोग बरसों एक-दूसरे की प्रतीक्षा में बिता देते हैं, और रिश्ता बीच में पड़ा सूखता रहता है।

'माफी मांगना सबसे महंगा सौदा है, क्योंकि इसमें अहंकार चुकाना पड़ता है।'

माफी मांगना कमजोरी नहीं है। जो इसे चुका देता है, वह अक्सर फायदे में रहता है।

खर्च की होड़, खुशी की कीमत... दिवाली धीरे-धीरे खर्च की प्रतियोगिता बनती जा रही है। महंगे तोहफे, भारी सजावट, और सोशल मीडिया पर दिखाई जाने वाली रोशनी। जिस दौर में रसोई का बजट हर महीने नई परीक्षा लेता है, उसमें त्योहार की खुशी को बिल की रकम से नापना न सिर्फ गलत है, बल्कि अन्यायपूर्ण भी। जो परिवार इस दौड़ में पीछे रह जाता है, उसे बेवजह यह एहसास कराया जाता है कि उसकी दिवाली अधूरी रह गई।

सच यह है कि किसी रूठे को मना लेना, बुजुर्ग माता-पिता के पास दो घंटे बैठ जाना या बच्चों के साथ जमीन पर बैठकर दीये सजाना, इन पर कोई जीएसटी नहीं लगता, और खुशी इन्हीं से बनती है।

'किसी रूठे को मना लेने पर कोई जीएसटी नहीं लगता।'

यहां एक सुविधाजनक तर्क दिया जाता है कि खर्च करना तो अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा है। बात ठीक है, पर शर्त यह है कि पैसा कहां जा रहा है। जब आप अपने शहर के कुम्हार से दीये, मोहल्ले के दुकानदार से मिठाई और स्थानीय कारीगर से सजावट खरीदते हैं, तो आपकी दिवाली किसी और के घर का चूल्हा भी जलाती है। यही त्योहार का असली अर्थशास्त्र है, जो किसी बजट भाषण में नहीं मिलेगा।

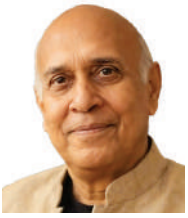
धुएं का हिसाब... और पटाखे? हर साल बहस वही होती है, और हर साल धुआं भी वही होता है। हम पर्यावरण पर चिंता सार्वजनिक रूप से जताते हैं और छत पर चुपचाप अनार जलाते हैं। पर जरा सोचिए। जिस धुएं से किसी बुजुर्ग की सांस फूलती है, किसी बीमार की रात बेचैन होती है और किसी नन्हे बच्चे की खांसी बढ़ती है, वह आपकी खुशी की कीमत नहीं हो सकती। रोशनी का त्योहार अगर किसी की सांस पर भारी पड़े, तो कहीं न कहीं हमने मतलब ही उलट दिया है।

"खुशी के नाम पर किसी की सांस छीनना, उत्सव नहीं, संवेदनहीनता है।"

दिवाली अच्छाई की जीत का पर्व है। लेकिन अच्छाई की जीत किसी और की हार से नहीं होती। वह तब होती है जब हम अपने भीतर के क्रोध की जगह धैर्य, नफरत की जगह प्रेम और अहंकार की जगह विनम्रता को चुनते हैं। यह आसान नहीं है। पर क्या कभी कोई जरूरी चीज आसान रही है?

तो इस बार एक छोटा-सा हिसाब कीजिए, किसी बही-खाते में नहीं, अपने भीतर। ये सवाल न रंगीन हैं, न सजे-धजे, पर इन्हीं में असली सफाई छिपी है।

दीवारों का रंग अगले साल फिर फीका पड़ जाएगा, दीये भी बुझ जाएंगे। पर एक टूटा रिश्ता अगर जुड़ गया, तो उसकी रोशनी बहुत देर तक टिकेगी। घर में दीप जरूर जलाइए, पर एक दीप भीतर भी रखिए। क्योंकि घर तो सब सजा लेते हैं, उजाला वही है जो मन तक पहुंचे।



दिनेश रामावत
प्रधान सम्पादक

इस दिवाली खुद से पूछें कि बीते साल अपनों को कितना समय दिया? किसका दिल दुखाया, जाने में या अनजाने में? किसकी मदद कर सकते थे, पर टाल गए?

आधुनिकता में खो गई पारम्परिक दीपावली

शायद हमें परंपरा को वैसे ही जीवित रखने की जरूरत नहीं, जैसे वह पचास साल पहले थी। जरूरत है उसकी आत्मा को बचाने की- साझा भोजन, साझा पूजा, साझा रोशनी और साझा मुस्कान की।





सुरेश व्यास ✍ वरिष्ठ पत्रकार

हर साल जब दिवाली आती है तो आंखों में बचपन की वो यादें तैरने लगती है, जिनसे शायद हमारे बाद की पीढ़ी का काम ही नहीं पड़ा। न तो इस पीढ़ी ने वो परम्पराएं देखी हैं और न ही वो उल्लास महसूस किया है, जो हमारे दौर में चेहरे पर साफ नजर आता था। पारम्परिक व्यंजनों के नाम सुनते ही आज की पीढ़ी कहती है, ये क्या होता है।

खैर, कोशिश करता हूं आपको नोस्टालजिक दौर में ले जाने की। दीपावली की उल्लास वैसे तो दशहरा के तुरंत बाद दिखने लगता था। घरों में साफ-सफाई और लिपाई-पुताई में घर-परिवार के सभी लोगों की मेहनत लगती थी। आज की तरह कोई काम ठेके पर देने की परम्परा नहीं थी। आंखें बंद करते ही वही पुराना आंगन सामने आ जाता है। गोबर से लीपा हुआ नम और माटी की महक बिखेरता आंगन। उस पर गेरू और खड़िया के मांडणे। मुख्य द्वार से कोठार तक लक्ष्मी जी के पगलिए। दीवारों पर नील मिले चूने की सफेदी और कंवळों पर टिमटिमाते दीपक। यह आज भी मेरे बचपन की सबसे सुंदर तस्वीर है।

तब घर केवल सजता नहीं था, वह जागता था। दीपावली से कई दिन पहले ही घर में खास तरह का उल्लास फैलने लगता था। पिताजी बाजार से पूजन सामग्री के साथ मिट्टी के दीए, बाती और अन्य सामान लाते। मां और परिवार की अन्य महिलाएं परिवार के पुरुष सदस्यों के साथ कळी-चूने से पुताई करती। गोबर और बालू मिट्टी के गारे से फर्श लीपतीं और आपस में बातें करती हुए पारम्परिक लोक गीत गुनगुनाती। गेरूआ रंग से मांडणे मांडती। हम बच्चे इधर-उधर दौड़ते। कभी रंग में हाथ गंदा कर देते। कभी मांडणों पर पैर रखने के लिए डांट खाते।

मुख्य द्वार की दीवार जिसे कंवळा कहा जाता था, वहां चित्रकारी होती। मुख्य दरवाजे के दोनों ओर स्वास्तिक बनाया जाता। शुभ-लाभ जैसे बीजाक्षर उकेरे जाते। सबसे अलहदा होते थे लक्ष्मी जी के पदचिह्न, जिन्हें पगलिया कहा जाता था। मुख्य द्वार से कोठार तक छोटे-छोटे पदचिह्न बनाए जाते थे, मानो मां लक्ष्मी के कदमों का इंतजार हो। बचपन में मैं सोचता था कि लक्ष्मी जी सच में उन पगलियों पर चलकर घर में आएंगी।

अब न तो कच्चे फर्श हैं और न ही वे दीवारें, जिन्हें चित्रों से सजाया जा सके। मांडणे आज भी बनते हैं, लेकिन बने बनाए चित्र लाकर चिपका दिए जाते हैं। पगलियों के रूप में प्लास्टिक के स्टीकर आ गए हैं। त्योंहार की सामूहिकता बाजार ने छीन ली है। सजावट भी आर्टिफिशियस फूलों से होने लगी है। त्योहार का उल्लास जैसे बंद कमरों और सीमित परिवार में कहीं खो गया है।

न वे व्यंजन, न वह मिठास

दीपावली के दो दिन पहले ही रसोई महकने लगती थी। मिठाई बाजार से लाने की परम्परा नहीं थी। मेहमानों को भी घर में बने व्यंजन ही परोसे जाते थे और ये व्यंजन लगभग हर घर में कॉमन ही होते थे, लेकिन हर घर में सामूहिक तैयारी नजर आती थी। मां आटे या बेसन की चक्की बनाने के लिए घी में सिकाई कर रही है। पास बैठी ताई या चाची चाशनी बना रही है। कोई सांकली, पापड़ी, खाजे बेल रहा है और कोई इन्हें तल रहा है। तलते हुए पापड़-खिचियों व गाळ की सेवों की चटचटाहट पूरे आंगन में गूंजती रहती थी। मुझे अब भी वह दृश्य याद है...चूल्हे के पास बैठी मां, चेहरे पर पसीना, हाथों में आटा और आंखों में वह खुशी, जो किसी बाजार से खरीदी गई चीज में कभी नहीं होती। हमें जब आटे की चक्की और अन्य मिष्ठान खाने को मिलते तो लगता था कि ये त्योंहार रोज-रोज क्यों नहीं आते। आज तो दुकानों पर हजारों किस्म की मिठाइयां मिल जाती हैं। सुंदर डिब्बे, चमकदार रैपिंग, विदेशी नाम, सब कुछ है, लेकिन वह स्वाद नहीं मिलता। मिठास में कमी नहीं हुई। कमी है उस मेहनत, साझेदारी और इंतजार की, जब पूरा परिवार एक ही चूल्हे के इर्द-गिर्द बैठता था।

पूजा भी तो बदल गई

दीपावली की शाम होते ही घर की सभी महिलाएं सज-धजकर तैयार हो जाती। थाली में दीपक सजाए जाते। कतारे में सजाए जाते और देखते ही देखते सारा घर दीयों की रोशनी से जगमग हो उठता था। बाहर पटाखों की गूंज और आसमां में बिखरती रंगीनियां अहसास करवाती थी कि आज दिवाली है। दीप जलाने के बाद पूजा होती तो पूरा परिवार एक साथ बैठा नजर आता। दादाजी सबसे पहले लक्ष्मी पूजन करवाते। प्रसाद में कील-बताशे, चपड़ा, शक्कर के बने महल-माळिया, लक्ष्मी जी के कंगन, अलग-अलग पशु-पक्षियों की बनी आकृतियां और शक्कर के मोतियों से बनी माला के साथ ऋतु फल और लड्डू चढ़ाए जाते। लक्ष्मीजी की आरती सभी लोग बारी-बारी से करते। इसके बाद दीवार पर कुंकुम से माताजी की त्रिशूलाकार आकृति, सूर्य-चंद्रमा व स्वास्तिक बनाए जाते। गुड़ के हलवा का भोग लगाकर गोटा यानी सूखा नारियल चढ़ाया जाता।

हठड़ी पूजन की लुप्त होती परम्परा



लक्ष्मी पूजन के साथ घरों में हठड़ी पूजन होता था। हठड़ी मिट्टी से बना चार मुंहा पात्र होता है। इसमें कील-बताशे, चने-फूलियां और मिठाई आदि डालकर पारम्परिक रूप से बनने वाली खाजलिया-सांकलियां व्यंजन से ढका जाता है। परिवार में जितने सदस्य होते हैं, उनके नाम की हठड़ी होती है। घर में नई बहू या नए बच्चे के जन्म के साथ ही इसमें नई हथड़ी जुड़ती जाती है। पूजा के वक्त हठड़ियां गिनी जाती थी, जैसे परिवार की गिनती की जा रही हो। उस दिन लगता था कि परिवार केवल लोगों से नहीं, उनके नामों से भी बनता है। हठड़ी पूजन केवल अनुष्ठान नहीं था; वह परिवार का विस्तार, उसकी पहचान और उसकी एकता का प्रतीक था। अब घरों में लोग कम रहते हैं। जो रहते भी हैं, वे अक्सर अलग-अलग शहरों में बिखर जाते हैं। हठड़ी पूजन कई घरों में अब एक याद भर रह गया है। कभी-कभी लगता है कि हमने तकनीक बढ़ा ली, पर परिवार की गिनती छोटी कर दी।

परिवार की रौनक दिखती थी

पूजा के बाद सभी लोग बुजुर्गों का आशीर्वाद लेते और साथ में मिलती थी खर्ची। बाद में परिवार के सभी लोग एक साथ बैठकर भोजन करते। इसकी भी जोधपुर में तो सभी घरों में एक ही तरह की डिश होती थी। रतालू, गोभी, आलू की सब्जी, गुड़ का हलवा, तेहरी (पुलाव) और पूरियां। परिवार के सभी सदस्य एक ही थाली में खाना खाते थे। बड़ा सा घेरा और फिर हंसी-विनोद, माहौल भी कुछ अलग लगता था। आज पारम्परिक सब्जी की जगह पनीर और शाही सब्जियों ने ले ली है। सभी डाइनिंग टेबल पर अलग-अलग प्लेट में खाना खाते हैं और हाथ में मोबाइल चलता रहता है, जैसे पास बैठे किसी से कोई मतलब ही नहीं हो। खैर, अब संयुक्त परिवार ही कहां बचे हैं, जहां परिवार की रौनक नजर आए।

खो गई बाजारों की रौनक

लक्ष्मी पूजन के बाद परिवार के सभी लोग रोशनी देखने निकलते थे। अंदरूनी शहर के बाजार और मुख्य सड़कों पर आकर्षक रोशनी व सजावट देखने वालों की भीड़ आधी रात बाद भी कम नहीं होती थी। दुकान पर पूजन करने के बाद व्यापारी भी रोशनी देखने वाले परिचितों का अभिवादन करते और रुकने पर सूखे मेवे या सुपारी-इलायची से मनुहार करते। किसी दुकान पर रुकते... किसी से दीवाली की बधाई लेते, किसी को बधाई देते। मुख्य रौनक सोजती गेट और नई सड़क पर नजर आती थी। दूर-दूर तक पैदल घूमने के बाद घर लौटने में घंटे लग जाते थे, लेकिन उस वक्त थकान नहीं, एक संतुष्टि होती थी। बाजार आज भी सजते हैं। दीपावली पर सजावट व रोशनी की तैयारियां होती हैं, लेकिन भीड़ और वह ठहराव नहीं रहा। लोग जल्दी लौट जाते हैं। फोन की स्क्रीन चमकती है। चेहरों से बातचीत कम हो गई है। रोशनी अब भी है, पर वह रोशनी नहीं जो आंखों से निकलकर दिल तक पहुंचती थी।

व्हाट्सएप की शुभकामनाएं

दिवाली के अगले दिन रामा-स्यामा के दिन पहले लोग घर-घर जाते थे। रिश्तेदारों से मिलना, पड़ोसियों को शुभकामनाएं देना और मिठाई व उपहारों का आदान-प्रदान त्योहार की असली परंपरा थी। अब वही काम एक संदेश से हो जाता है। सुबह फोन खोलता हूं तो दर्जनों शुभकामनाएं मिलती हैं। सुंदर चित्र, चमकते दीप, सुनहरे शब्द-सब कुछ है, लेकिन चेहरा किसी का दिखता नहीं। आवाज किसी की सुनाई नहीं देती। जो रिश्ता पैदल मिलने से बनता था, वह फॉरवर्ड किए गए संदेश से नहीं बनता।

समय बदला, हम बदले

मैं इसे किसी का दोष नहीं मानता। समय बदला है, जिंदगी व्यस्त हो गई है। फिर भी यह सच है कि जो गर्मजोशी हाथ मिलाने से आती थी, वह इमोजी से नहीं आती। फिर भी मैं निराश नहीं हूं। भले ही बहीखाते कम्प्यूटर पर लिखे जाने लगे हैं, लेकिन आज भी दीपावली पर बही-खातों की पूजा होती है। नई बही पर 'श्री' लिखा जाता हैं और व्यापारी नए वर्ष की शुरुआत करते हैं। शायद हमें परंपरा को वैसे ही जीवित रखने की जरूरत नहीं, जैसे वह पचास साल पहले थी। जरूरत है उसकी आत्मा को बचाने की—साझा भोजन, साझा पूजा, साझा रोशनी और साझा मुस्कान की। दीप तो आज भी जलते हैं, बस उन्हें फिर से खिड़कियों से बाहर, लोगों तक ले जाने की जरूरत है। क्योंकि दीपावली की असली रोशनी दीयों में नहीं थी। वह उस घर में थी, जहां हर सदस्य के नाम की हठड़ी थी, हर दरवाजे पर पगलियां थीं, और हर गली में किसी अपने से मिलने की उम्मीद थी।

आज भी जब दीपावली आती है, तो मैं खिड़की से बाहर देखता हूं। कहीं दूर दीये जलते दिखते हैं। और मन में एक ही सवाल उठता है कि क्या वे दीये अब भी वही कहानी कह रहे हैं, जो कभी हमारे घर कहते थे?

ज्योत से ज्योत जगाते चलो....

दीपावली केवल अपने घर की चौखट तक रोशनी समेटने का पर्व नहीं, बल्कि समाज के वंचित वर्ग तक खुशियां पहुंचाने और साझा संवेदनशीलता का अवसर है। दिखावे, प्रतिस्पर्धा और शोर-शराबे से परे प्रेम, सद्भाव और मानवीय गरिमा को रेखांकित करता आलेख।



ज्ञान चंद पाटनी, वरिष्ठ पत्रकार

दीपावली का नाम आते ही मन में रोशनी से जगमगाते घरों, दीपों की कतारों, मिठाइयों की खुशबू, रंगोली के रंगों और अपनों के साथ खुशियां बांटने की तस्वीर उभरती है। यह ऐसा त्योहार है, जो अंधकार पर प्रकाश, निराशा पर आशा और बुराई पर अच्छाई की विजय का संदेश देता है। इस मौके पर दीपों का उजाला केवल हमारे घरों की चौखट तक सीमित नहीं रहना चाहिए। त्योहार की खुशियां सिर्फ परिवार, मित्रों और परिचितों के बीच ही नहीं समाज के वंचित वर्ग से भी बांटनी चाहिए।

दीपावली पर घरों की सफाई, सजावट, खरीदारी और पकवान बनाने की परंपरा तो है ही। घर की सजावट पर हजारों रुपए खर्च करने वाला व्यक्ति यदि अपने आसपास अभाव में जी रहे परिवार की परेशानी से अनजान बना रहे, तो उत्सव का मानवीय पक्ष अधूरा ही माना जाएगा। दीपावली का दीपक अपने आसपास के अंधकार को दूर करता है। उसका प्रकाश यह नहीं पूछता कि सामने कौन खड़ा है, किसकी भाषा क्या है, वह किस समुदाय से आता है या उसकी आर्थिक स्थिति कैसी है। प्रकाश उदारता के साथ सभी के लिए उपलब्ध रहता है। हमारी भी ऐसी ही उदार भावना रहनी चाहिए। इस लिहाज से दीपावली के अवसर पर संत ज्ञानेश्वर फिल्म का गीत 'ज्योत से ज्योत जगाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो, राह में आए जो दीन दुखी सबको गले से लगाते चलो', ज्यादा प्रासंगिक हो जाता है। छह दशक पूर्व फिल्माए गए गीत की उक्त दो लाइनें दीपावली के त्योहार की भावना व्यक्त करती नजर आती हैं।

हमारे आसपास ऐसे अनेक लोग होते हैं, जो त्योहार पर भी हाड़तोड़ मेहनत करते हैं। अनेक भरपेट भोजन के लिए भी तरस रहे होते हैं। यदि हम दीपावली पर उनका सम्मान करें, उनकी जरूरतों का ध्यान रखें और उन्हें उत्सव में भागीदार बनाएं, तो त्योहार का आनंद कई गुना बढ़ सकता है। सम्मान के साथ की गई मदद, दिया गया छोटा-सा उपहार या आत्मीय बातचीत हाशिए के लोगों की आंखों में चमक ला सकती है। जरूरतमंद परिवारों को राशन, कपड़े, मिठाइयां और उपयोगी घरेलू वस्तुएं दी जा सकती हैं, लेकिन इस दौरान उनकी गरिमा का ध्यान रखना भी आवश्यक है। सहायता पाने वाले लोगों की तस्वीरें खींचकर उन्हें प्रचार के लिए इस्तेमाल करना या सोशल मीडिया पर उनकी गरीबी का प्रदर्शन करना अनुचित है। सेवा का उद्देश्य किसी की प्रतिष्ठा कम करना नहीं, बल्कि उसकी कठिनाई को कम करना होना चाहिए। दीपावली का सबसे सुंदर दृश्य वह नहीं, जिसमें सबसे बड़ा घर सबसे अधिक रोशनी से जगमगा रहा हो। सबसे सुंदर दृश्य वह है, जिसमें किसी एक घर का दीपक दूसरे घर तक आशा और उम्मीद पहुंचाए, जहां किसी की खुशी दूसरे के लिए भी मुस्कान का कारण बने और जहां अलग-अलग पहचान रखने वाले लोग एक-दूसरे के सम्मान और सुरक्षा को अपनी साझा जिम्मेदारी समझें।

दूसरों की सुविधा का भी रखें ध्यान



हमें यह ध्यान रखना भी जरूरी है कि हर व्यक्ति की परिस्थितियां एक जैसी नहीं होतीं। किसी के लिए त्योहार उल्लास का अवसर है, तो किसी के लिए यह परिवार से दूर रहने, किसी प्रियजन को खोने या आर्थिक कठिनाई के कारण उदासी का समय भी हो सकता है। अस्पतालों में मरीजों की देखभाल करने वाले कर्मचारी, सार्वजनिक सेवाओं में लगे लोग और कई श्रमिक त्योहार के दिन भी अपनी जिम्मेदारियां निभाते हैं। उनके योगदान को पहचानना और उनकी सुविधा का ध्यान रखना भी जरूरी है। इसी तरह, पटाखे चलाते समय बच्चों, बुजुर्गों, बीमार व्यक्तियों तथा पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। इसलिए पटाखे कम आवाज और धुएं वाले चलाएं। प्रतिबंधित समय में पटाखे न चलाएं। यह उत्सव दूसरों के लिए परेशानी का कारण नहीं बनना चाहिए। ध्यान रहे, त्योहार दूसरों को खुशी बांटने का भी अवसर होते हैं।

बना रहे आपसी सद्भाव और विश्वास



भारत की सामाजिक संरचना विविधता से भरी है। यहां अलग-अलग धर्मों, भाषाओं, जातियों, परंपराओं और जीवनशैलियों के लोग साथ रहते हैं। यह विविधता हमारी सामाजिक वास्तविकता भी है और सामूहिक शक्ति भी। इसके बावजूद कई बार पूर्वाग्रह और अफवाहों के कारण अविश्वास पनपता है। ऐसी स्थिति में त्योहार के जरिए आपसी परिचय और संवाद का अवसर मिलता है। इस मौके का फायदा उठाकर आपसी विश्वास को मजबूत किया जा सकता है।

यदि किसी मोहल्ले में दीपावली पर हिंदू परिवार अन्य समुदायों के पड़ोसियों को मिठाई देकर शुभकामनाएं देते हैं, तो यह केवल एक सामाजिक शिष्टाचार नहीं है। यह इस विश्वास का संकेत है कि अलग-अलग आस्थाओं के बावजूद लोगों के बीच आत्मीय संबंध संभव हैं। इसी तरह, दूसरे समुदायों के त्योहारों पर शुभकामनाएं देना, उनकी खुशियों में शामिल होना और उनकी परंपराओं को सम्मानपूर्वक समझना आपसी विश्वास को मजबूत करता है। हम अपनी धार्मिक, भाषायी और सांस्कृतिक पहचान बनाए रखते हुए भी एक-दूसरे के अधिकारों, सम्मान और सुख-दुख के प्रति संवेदनशील रहें। किसी व्यक्ति के साथ हमारा संबंध केवल उसकी धार्मिक पहचान से निर्धारित नहीं होना चाहिए। वह हमारा पड़ोसी है, सहकर्मी है, मित्र है और इस देश का नागरिक भी है।

डिजिटल तकनीक का प्रभाव

आज त्योहारों का स्वरूप डिजिटल तकनीक से भी प्रभावित हो रहा है। शुभकामनाओं के संदेश, वीडियो, तस्वीरें और ऑनलाइन उपहार कुछ ही क्षणों में दूर-दराज के लोगों तक पहुंच जाते हैं। परिवार से दूर रहने वाले सदस्य वीडियो कॉल के जरिए एक-दूसरे से जुड़ सकते हैं और डिजिटल भुगतान के माध्यम से सहायता भी भेज सकते हैं। तकनीक का यह पक्ष उपयोगी है। इस बात को ध्यान में रखा जाना चाहिए कि डिजिटल संपर्क और वास्तविक आत्मीयता एक ही बात नहीं हैं। दीपावली पर सोशल मीडिया पर शुभकामना संदेश दें, लेकिन यथासंभव व्यक्तिगत संपर्क भी करें। एक जरूरी बात यह है कि सोशल मीडिया पर सजावट और उपहारों की तस्वीरें साझा करने की होड़ से बचा जाना चाहिए। डिजिटल माध्यमों का इस्तेमाल संबंधों को मजबूत करने के लिए होना चाहिए, न कि दूसरों को कमतर बताने के लिए।



किसी जरूरतमंद परिवार तक सहायता पहुंचाने, स्थानीय सामुदायिक कार्यक्रम की जानकारी साझा करने या पड़ोसियों को एक साथ जोड़ने में तकनीक प्रभावी भूमिका निभा सकती है। मगर इसके साथ साइबर सुरक्षा का ध्यान रखना भी जरूरी है।

त्योहारों का विकृत होता स्वरूप

- दीपावली और दूसरे त्योहार मूलतः प्रेम, सद्भाव, उल्लास, सामाजिक एकता और मानवीय संवेदनाओं के प्रतीक रहे हैं। इनका उद्देश्य केवल धार्मिक परंपराओं का निर्वाह करना नहीं, बल्कि परिवारों को जोड़ना, रिश्तों में मिठास घोलना और समाज में परस्पर विश्वास को मजबूत करना भी रहा है। बदलते समय में त्योहारों के स्वरूप में कई ऐसे बदलाव आए हैं, जिन्होंने इनके मूल संदेश को कहीं पीछे छोड़ दिया है। आस्था की जगह दिखावा, आत्मीयता की जगह प्रदर्शन और सामूहिक उल्लास की जगह प्रतिस्पर्धा लेने लगी है।
- दीपावली पर घरों को रोशन करने की परंपरा अब महंगी सजावट, ब्रांडेड उपहारों और खरीदारी की होड़ से जुड़ती जा रही है। त्योहार की खुशी का आकलन इस बात से होने लगा है कि किसने कितनी महंगी रोशनी की, किसने कितने कीमती उपहार दिए और किसकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर अधिक आकर्षक दिखाई दीं। दूसरे त्योहार भी इस प्रवृत्ति से अछूते नहीं हैं। होली पर रंगों और मेल-मिलाप की जगह जबरन रंग लगाने, पानी की बर्बादी और नशे का चलन बढ़ता है, तो त्योहार की सहजता प्रभावित होती है। धार्मिक जुलूसों में तेज आवाज वाले डीजे, आतिशबाजी और शक्ति प्रदर्शन के कारण बच्चों, बुजुर्गों, बीमारों तथा पशु-पक्षियों को परेशानी होती है। आस्था के नाम पर दूसरों की सुविधा और अधिकारों की अनदेखी किसी भी त्योहार की भावना के विपरीत है।
- त्योहारों का एक विकृत रूप तब भी सामने आता है, जब धार्मिक भावनाओं को सामाजिक विभाजन का माध्यम बना दिया जाता है। जिन त्योहारों का उद्देश्य लोगों को जोड़ना है, वे यदि दूसरे समुदाय के प्रति संदेह या वैमनस्य बढ़ाने लगें, तो हमें उनके स्वरूप पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। धर्म की सार्थकता दूसरों को छोटा दिखाने में नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर करुणा, संयम और उदारता विकसित करने में है। त्योहारों को दिखावे और प्रतिस्पर्धा से मुक्त करके प्रेम और सद्भाव का उत्सव बनाएं।

स्क्रीन से रिसता सन्नाटा



राकेश गांधी ✍ वरिष्ठ पत्रकार

दीपावली पर घर सजते हैं, दीये जलते हैं और मोबाइल शुभकामना संदेशों से भर जाते हैं। मगर अपनों से बातचीत के लिए समय कम पड़ रहा है। क्या हम इस त्योहार पर घर की रोशनी के साथ रिश्तों की गर्माहट भी लौटा सकते हैं?

दीपावली की शाम है। घर जगमगा रहा है, मिठाइयों की खुशबू है, नए कपड़े हैं और परिवार के सभी सदस्य एक साथ हैं। बस, एक छोटी-सी कमी है। कोई किसी से बात नहीं कर रहा!

पिता मोबाइल पर शुभकामना संदेशों के जवाब दे रहे हैं, मां रिश्तेदारों को दीपावली की बधाइयां भेज रही हैं, बेटा ऑनलाइन खेल में उलझा है और बेटी दोस्तों की तस्वीरें देख रही है। तभी आवाज आती है, 'चलो, सब एक साथ फोटो खिंचवाते हैं।' मोबाइल का कैमरा खुलता है, सबके चेहरे पर मुस्कान आती है और एक सुंदर पारिवारिक तस्वीर तैयार हो जाती है। तस्वीर रिश्तेदारों और दोस्तों को भेज दी जाती है। कुछ ही पलों में लाइक और शुभकामनाओं के जवाब भी आने लगते हैं। फिर सब अपने-अपने मोबाइल में व्यस्त हो जाते हैं।

तस्वीर में पूरा परिवार है, चेहरों पर मुस्कान भी है। मगर एक सवाल है, जिसका जवाब उस तस्वीर में नहीं मिलता। क्या परिवार के ये सदस्य सचमुच एक-दूसरे के साथ भी हैं?

यह दृश्य किसी एक घर की कहानी नहीं है। त्योहारों पर हम दूर बैठे अपनों से जुड़ने के लिए समय निकालते हैं, वीडियो कॉल करते हैं और संदेशों का आदान-प्रदान करते हैं। यह तकनीक की खूबी है कि दूरियां सिमट गई हैं। लेकिन एक अजीब विडंबना भी हमारे जीवन में जगह बना चुकी है। सैकड़ों किलोमीटर दूर बैठे किसी रिश्तेदार से बात करने के लिए हमारे पास वक्त है, लेकिन बगल में बैठे अपनों की बात सुनने की फुर्सत नहीं। हम दुनिया से जुड़े रहने की कोशिश में कहीं अपने ही घर के लोगों से दूर तो नहीं होते जा रहे?

मन की बात के लिए वक्त नहीं

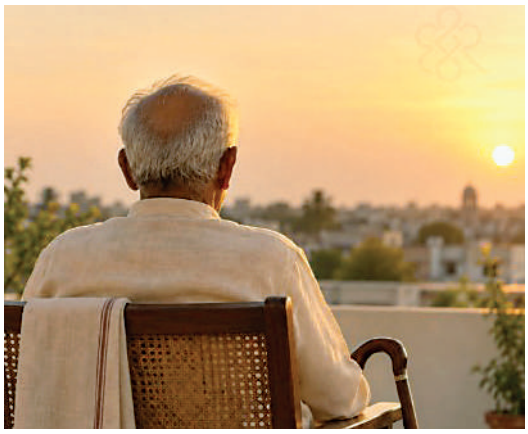


- सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक मोबाइल हमें लगातार किसी न किसी से जोड़े रखता है। किसी का संदेश, किसी की तस्वीर, किसी समूह की चर्चा और किसी नई खबर की सूचना। लगता है, कुछ छूट न जाए, इसलिए बार-बार स्क्रीन देखने का मन होता है। इस आपाधापी में कई बार वह व्यक्ति छूट जाता है, जो हमारे पास बैठा होता है।
- किसी को 'हैप्पी दीपावली' लिखकर भेजना आसान है, लेकिन अपने ही घर में किसी से पूछना कि 'आजकल तुम्हारे मन में क्या चल रहा है?' शायद उतना आसान नहीं रह गया। शुभकामना संदेश कुछ सेकंड में भेजा जा सकता है, मगर किसी की बात सुनने के लिए समय देना पड़ता है। उसके चेहरे के भाव समझने पड़ते हैं, उसकी चुप्पी पर ध्यान देना पड़ता है और कभी-कभी बिना सलाह दिए केवल उसके पास बैठना पड़ता है।
- यही संपर्क और संवाद का अंतर है। संपर्क हमें एक-दूसरे तक पहुंचाता है, संवाद हमें एक-दूसरे को समझने का अवसर देता है। रिश्ते केवल हालचाल पूछ लेने से नहीं चलते। उन्हें यह भरोसा भी चाहिए कि जरूरत पड़ने पर कोई हमारी बात सुनेगा, हमें समझने की कोशिश करेगा और हमारी परेशानी को मामूली कहकर टाल नहीं देगा।
- मोबाइल अपने आप में समस्या नहीं है। उसी के सहारे दूर रहने वाले माता-पिता अपने बच्चों को देख पाते हैं, भाई-बहन त्योहार पर एक-दूसरे से जुड़ते हैं और पुराने मित्र संपर्क में रहते हैं। परेशानी तब शुरू होती है, जब फोन हमारे इस्तेमाल की चीज रहने के बजाय हमारे समय और ध्यान का मालिक बनने लगता है।

बच्चे आखिर अपनी बातें किससे कहें?

- घर में बच्चा स्कूल से लौटकर कोई दिलचस्प घटना बताना चाहता है। हो सकता है, उसे किसी दोस्त ने परेशान किया हो या किसी छोटी-सी उपलब्धि पर उसे खुशी हो रही हो। वह उत्साह से अपनी बात शुरू करता है, लेकिन सामने बैठे माता-पिता की नजर मोबाइल पर है। जवाब मिलता है, 'हां, अच्छा है, पहले मुझे यह काम कर लेने दो।'
- बात यहीं रुक जाती है। जरूरी नहीं कि माता-पिता जानबूझकर ऐसा कर रहे हों। उनके पास भी काम हैं, चिंताएं हैं और जिम्मेदारियां हैं। लेकिन जब यह स्थिति बार-बार बनती है, तो बच्चा अपनी छोटी-छोटी बातें साझा करना कम कर सकता है। धीरे-धीरे माता-पिता को लगने लगता है कि बच्चा कुछ बताता ही नहीं, जबकि बच्चे को लग सकता है कि उसकी बात सुनने वाला कोई नहीं है।
- हर परेशानी शब्दों में सामने नहीं आती। कभी बच्चे का चिड़चिड़ापन, कभी अचानक बढ़ती चुप्पी और कभी मोबाइल में जरूरत से ज्यादा डूबे रहना भी इस बात का संकेत हो सकता है कि उसे ध्यान और साथ की जरूरत है। ऐसे में केवल स्क्रीन टाइम कम करने का नियम बना देना पर्याप्त नहीं। यह भी देखना होगा कि घर में उसके पास अपनी बात कहने के कितने अवसर हैं।
- बच्चों से मोबाइल दूर रखने की अपेक्षा करने वाले बड़ों को खुद से भी एक सवाल पूछना चाहिए। जब बच्चा हमसे बात करना चाहता है, तब क्या हम सचमुच उसके लिए उपलब्ध होते हैं? बच्चे हमारी सलाह से जितना सीखते हैं, उससे कहीं अधिक हमारे व्यवहार से सीखते हैं।

बुजुर्गों के पास कहने को बहुत कुछ है



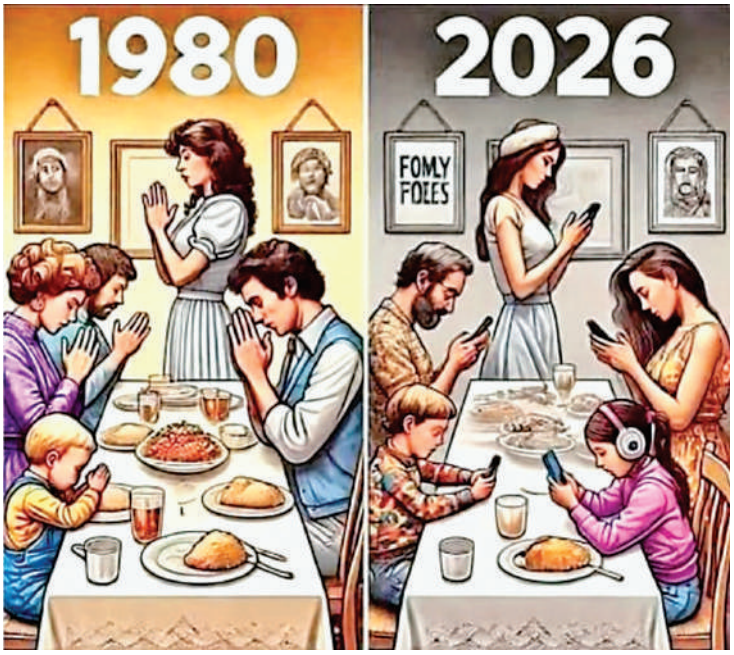
एक दूसरी तस्वीर घर के उस कोने में दिखाई देती है, जहां दादा-दादी या माता-पिता बैठे हैं। वे पुराने दिनों की कोई घटना सुनाना चाहते हैं। युवा सदस्य शायद वह कहानी पहले भी सुन चुके हैं, इसलिए मुस्कराकर टाल देते हैं या फोन देखते रहते हैं।

बुजुर्गों के लिए वही पुरानी घटना केवल बीते समय की कहानी नहीं होती। उसमें उनके जीवन के अनुभव, उनकी यादें और परिवार से जुड़ी भावनाएं होती हैं। कई बार वे किसी खास विषय पर बात करने के बजाय केवल बातचीत के बहाने अपनों के करीब रहना चाहते हैं।

पीढ़ियों के बीच सोच और पसंद का अंतर स्वाभाविक है। युवाओं की दुनिया अलग है और बुजुर्गों के अनुभव अलग। हर बात पर सहमत होना जरूरी भी नहीं। लेकिन किसी को सुनने का अर्थ उससे सहमत होना नहीं, बल्कि उसे सम्मान देना है। परिवार में जब हर व्यक्ति को अपनी बात कहने की जगह मिलती है, तब मतभेद भी रिश्तों को कमजोर करने के बजाय एक-दूसरे को समझने का अवसर बन सकते हैं।

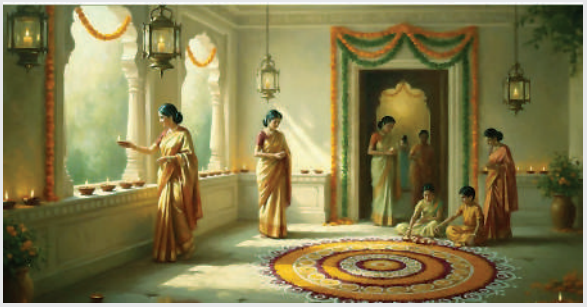
यह भी सच है कि हर दूरी के लिए मोबाइल को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। नौकरी का दबाव, लंबी यात्राएं, आर्थिक चिंताएं और बदलती जीवनशैली भी परिवारों का समय कम करती हैं। इसलिए जरूरत तकनीक से भागने की नहीं, बल्कि यह तय करने की है कि उसे हमारे जीवन में कितनी जगह मिलनी चाहिए।

इस दीपावली एक छोटा-सा बदलाव करके देखें



- त्योहार पर घर की सफाई होती है, सजावट बदली जाती है और पुरानी चीजों को व्यवस्थित किया जाता है। क्यों न इस बार कुछ समय रिश्तों के लिए भी निकाला जाए?
- भोजन के समय मोबाइल अलग रखे जा सकते हैं। दीपावली की शाम कुछ देर ऐसी हो सकती है, जब परिवार के सभी सदस्य एक साथ बैठें और स्क्रीन के बजाय एक-दूसरे की ओर देखें। पुराने त्योहारों की यादें ताजा हों, बच्चों से उनकी पसंद पूछी जाए और बुजुर्गों की बातें सुनी जाएं। किसी को अपनी परेशानी बतानी हो, तो उसे बीच में टोके बिना बोलने दिया जाए।
- इसके लिए किसी औपचारिक नियम या लंबे कार्यक्रम की जरूरत नहीं है। कभी साथ बैठकर हंस लेना, कभी दिनभर की कोई छोटी-सी घटना साझा करना और कभी बिना किसी खास वजह के हाल पूछ लेना भी रिश्तों को मजबूत बनाता है।
- हां, बातचीत को पूछताछ में बदलने से बचना होगा। बुजुर्गों को हर बात पर सलाह देना जरूरी नहीं। कभी-कभी यह पूछना भी काफी होता है कि 'तुम्हारा दिन कैसा रहा?' और फिर जवाब सुनने के लिए सचमुच तैयार रहना। परिवार के साथ बिताए समय की अहमियत केवल इस बात से तय नहीं होती कि हम कितनी देर एक कमरे में बैठे रहे। यह भी मायने रखता है कि उस दौरान हमारा ध्यान कहां था। कुछ मिनट की सच्ची बातचीत कई बार घंटों साथ बैठे रहने से अधिक मायने रखती है।

घर रोशन हो, तो रिश्तों में भी उजाला हो



यह मानना ठीक नहीं कि पहले हर परिवार में खूब बातचीत होती थी और अब रिश्तों में संवाद समाप्त हो गया है। पहले भी परिवारों में मतभेद थे, मन की बातें दबाई जाती थीं और कई रिश्तों में चुप्पी बनी रहती थी। फर्क यह है कि आज हमारा ध्यान बांटने वाले साधन हर समय हमारे हाथ में हैं। इसलिए अपनों के लिए समय निकालने का फैसला अब अधिक सचेत होकर करना पड़ता है।

दीपावली हमें रोशनी का उत्सव मनाने का अवसर देती है। हम घर के हर कोने को सजाते हैं, दीयों की कतार लगाते हैं और चाहते हैं कि हमारे घर में सुख-समृद्धि आए। लेकिन घर की असली रौनक केवल सजावट से नहीं आती। वह तब महसूस होती है, जब कोई अपनी परेशानी बेझिझक बता सके, कोई अपनी खुशी साझा करे और किसी की चुप्पी को भी अनदेखा न किया जाए।

इस दीपावली दूर बैठे अपनों को संदेश जरूर भेजें, तस्वीरें साझा करें और वीडियो कॉल पर उनका हाल पूछें। लेकिन घर में मौजूद लोगों के लिए भी कुछ समय बचाकर रखें। आखिरकार, परिवार की पहचान इस बात से नहीं होती कि उसकी एक साथ कितनी तस्वीरें हैं या कितने लोगों से उसका संपर्क है। असली बात यह है कि उस घर में हर व्यक्ति को कितना अपनापन मिलता है और क्या उसे भरोसा है कि उसकी बात सुनी जाएगी। इस दीपावली दीये घर में ही नहीं, रिश्तों में भी जलने दें।

त्योहार मनाएं, कर्ज का बोझ न बढ़ाएं

फिजूलखर्ची और झूठा दिखावा

आसान किस्तों और छूट के लालच में त्योहार की खुशी बाद के महीनों की आर्थिक परेशानी न बने, इसलिए बजट बनाकर सादगी से दीपावली मनाएं।



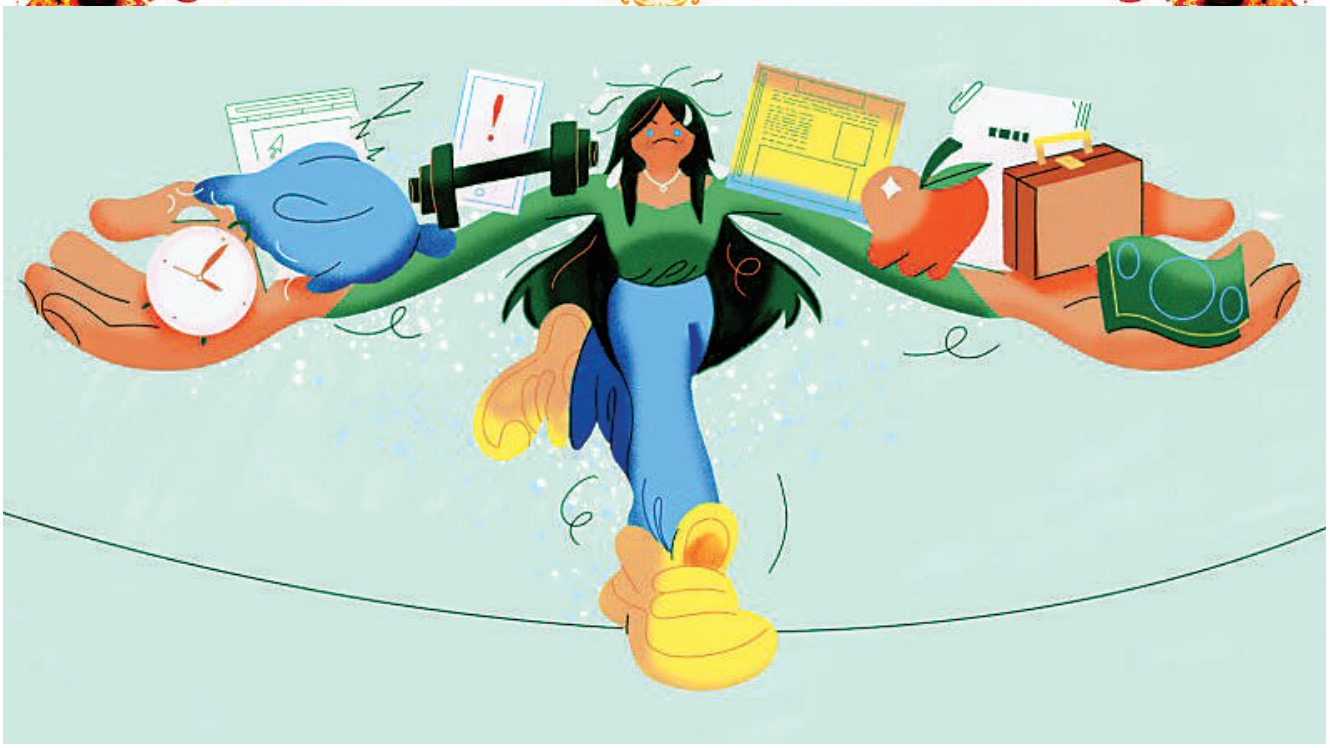
अजय अस्थाना ✍ वरिष्ठ पत्रकार

शरद की मीठी धूप और हवा में घुली हल्की सी ठंडक जब दस्तक देती है, तो समझ लीजिए कि दीपों का महापर्व आ पहुंचा है। बाजारों की सजी हुई गलियां, जगमगाती कतारें, खील बताशों की सोंधी महक और चारों तरफ फैली चहल पहल हर उदास चेहरे पर भी मुस्कान बिखेर देती है। भारतीय घरों में दीपावली केवल एक तिथि नहीं, बल्कि पूरे साल की थकान मिटाकर नई उमंग भरने का उत्सव है। हम सब चाहते हैं कि हमारे घर का कोना कोना दमके, थाली में पकवानों की मिठास घुले और अपनों के चेहरों पर खुशी की चमक दिखाई दे। किंतु जरा ठहरिए और सोचिए, क्या इस उजाले के पीछे हम अपनी जेब और भविष्य पर अंधेरे का साया तो नहीं डाल रहे हैं। पिछले कुछ बरसों में हमारे त्योहारों की सादगी को बाजार के शोर ने निगलना शुरू कर दिया है। आज उत्सव का अर्थ खुशियां बांटने से ज्यादा नया सामान बटोरना बन गया है, और यहीं से शुरू होता है दिखावे तथा अनचाहे कर्ज का खतरनाक खेल।

दीपावली के आते ही हर हाथ में थमे मोबाइल फोन और चौराहों पर लगे बड़े फलक केवल एक ही मंत्र जपते नजर आते हैं, भारी छूट, शून्य ब्याज और अभी ले जाओ बाद में चुकाओ। बाजार ने हमारी भावनाओं की नस को बहुत बारीकी से पकड़ लिया है। जब हम अपनी जेब से नकद नोट निकालकर गिनते हैं, तो मन में एक स्वाभाविक रोक लगती है कि कहीं हाथ जरूरत से ज्यादा तो नहीं खुल रहा। लेकिन आसान किस्तों और जादुई प्लास्टिक के कार्डों ने उस हिचक को पूरी तरह मिटा दिया है। अब तो बस अंगूठा दबाइए और सामान आपके घर। व्यक्ति को लगता है कि अभी तो कुछ लगा ही नहीं, बस छोटी सी किस्त ही तो बंधेगी। लेकिन वह यह भूल जाता है कि बूंद बूंद से जैसे घड़ा भरता है, वैसे ही छोटी छोटी किस्तें मिलकर पूरे वेतन पर कुंडली मारकर बैठ जाती हैं। जिस वस्तु की घर में कोई खास जरूरत नहीं थी, वह भी केवल छूट के लालच में ड्राइंग रूम की शोभा बढ़ाने आ जाती है।



इस फिजूलखर्ची में थोड़ा घी हमारे समाज का झूठा दिखावा भी डाल देता है। आजकल एक अजीब सी होड़ मची है कि किसके घर में कितना बड़ा पर्दा लगा, किसने कितनी महंगी धातु खरीदी और किसने कितने भारी उपहार बांटे। हम अपनी असली खुशी तलाशने के बजाय दूसरों को प्रभावित करने में ज्यादा ऊर्जा खपा रहे हैं। पड़ोस में नई गाड़ी आई है तो हमारे आंगन में भी कुछ नया दिखना ही चाहिए, भले ही इसके लिए बैंक से झटपट मिलने वाला महंगा कर्ज ही क्यों न उठाना पड़े। उपहार देना कभी स्नेह और आदर जताने का कोमल भाव हुआ करता था, लेकिन आज वह हैसियत नापने का पैमाना बन गया है। हम दूसरों की नजरों में बड़ा दिखने के चक्कर में अपनी ही नजरों में गिरते चले जाते हैं। जब पर्व आंतरिक शांति के बजाय सामाजिक मुकाबले का मैदान बन जाए, तो समझ लीजिए कि लक्ष्मी का पूजन पीछे छूट गया और केवल अहंकार की पूजा हो रही है।



बुनियादी जरूरतों को मिले प्राथमिकता

अगर आप चाहते हैं कि इस बार लक्ष्मी जी आपके घर सचमुच स्थाई वास करें, तो सबसे पहले अपने पारिवारिक बजट को एक मजबूत ढाल बनाइए। बजट कोई बंधन नहीं है जो आपकी खुशियों का गला घोंट दे, बल्कि वह एक ऐसा पहरेदार है जो त्योहार बीत जाने के बाद भी आपको चैन की नींद सोने देता है। घर के सभी सदस्यों को, विशेषकर बच्चों को साथ बिठाइए और तय कीजिए कि इस बार की सीमा क्या होगी। पहली प्राथमिकता घर की उन बुनियादी जरूरतों को मिलनी चाहिए जिनके बिना गुजारा नहीं, जैसे राशन, दवा, बच्चों की पढ़ाई और घर के जरूरी बिल। दूसरी प्राथमिकता उन पारंपरिक रीति रिवाजों और आवश्यक खरीदारी को दीजिए जो दीपावली की रौनक हैं, जैसे नए वस्त्र, पूजन सामग्री और घर की सज्जा। तीसरी और सबसे अहम बात यह है कि भविष्य के लिए रखी गई आपातकालीन बचत को इस चकाचौंध में कतई हाथ न लगाएं।

थोड़ी सी समझदारी और सूझबूझ से बिना बजट बिगाड़े भी घर का कोना कोना महकाया जा सकता है। कुम्हार के चाक पर बनी माटी के दीयों की सादगी में जो पवित्रता और अपनत्व है, वह बिजली की बेजान झालरों में कहां। जब हम किसी स्थानीय कारीगर से सूप, बताशे या दीये खरीदते हैं, तो हमारे थोड़े से धन से उसके घर का चूल्हा भी जलता है। क्या इससे बड़ा पुण्य और उत्सव कुछ और हो सकता है। बाजार जाने से पहले एक पक्की पर्ची बनाइए और मन में यह संकल्प दोहराइए कि जो उस कागज पर नहीं लिखा, वह कितना भी सुंदर या सस्ता दिखे, घर नहीं आएगा। बच्चों को भी यह समझाइए कि त्योहार का असली मजा महंगे खिलौनों या पटाखों के धुएं में नहीं, बल्कि पूरे परिवार के साथ बैठकर गुझिया बनाने, रंगोली सजाने और हंसी ठहाके लगाने में है।

कर्ज पर तमाशा, फूलती सांसें...

पर्व तो तीन चार दिनों में धूमधाम से बीत जाएगा, घर की मिठाइयां भी समाप्त हो जाएंगी और फूल मालाएं भी सूख जाएंगी। लेकिन सोचिए कि यदि आपने यह सारा तमाशा कर्ज के दम पर खड़ा किया है, तो आने वाले महीनों का क्या होगा। जब दिसंबर और जनवरी की सुबह नए साल की उम्मीदों के बजाय कर्ज चुकाने के संदेश और किस्तों के तकाजे लेकर आएगी, तो घर का माहौल कैसा होगा। उस समय वही कीमती सामान घर के लोगों को चिढ़ाता हुआ सा लगेगा। आर्थिक तंगी सीधे इंसान के मन पर वार करती है, जिससे चिड़चिड़ापन बढ़ता है, पति पत्नी में तकरार होती है और घर की सुख शांति हवा हो जाती है। जरा ठंडे दिमाग से सोचिए, क्या चार दिन की झूठी वाहवाही के लिए पूरे साल का मानसिक सुकून और पारिवारिक सौहार्द दांव पर लगाना कोई समझदारी है।



दीपावली का पावन पर्व हमें तमस से ज्योति की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर और भटकाव से विवेक की ओर ले जाने की प्रेरणा देता है। इसका सबसे बड़ा संदेश यही है कि पर्व का उल्लास किसी भी हाल में बाद के महीनों की आर्थिक विपत्ति और मानसिक संताप का कारण नहीं बनना चाहिए। अपनी वास्तविक सामर्थ्य के अनुसार सादगी से पर्व मनाना किसी भी दृष्टि से हीनता नहीं, बल्कि एक परिपक्व और सुलझे हुए परिवार की सबसे बड़ी पहचान है। इस बार दीप जलाते समय यह प्रण लें कि हम घर में रोशनी तो खूब करेंगे, लेकिन अपने सिर पर कर्ज का अंधेरा रत्ती भर भी नहीं चढ़ने देंगे। सच्ची दीपावली वही है जब रात को दीये बुझने के बाद भी मन के भीतर निश्चिंतता का प्रकाश जगमगाता रहे और आने वाले कल के लिए चेहरे पर बिना किसी फिक्र की खिली हुई मुस्कान हो।

क्या हमारा अपना बाजार पीछे छूट रहा है?





बलवंत राज मेहता, ✍ वरिष्ठ पत्रकार

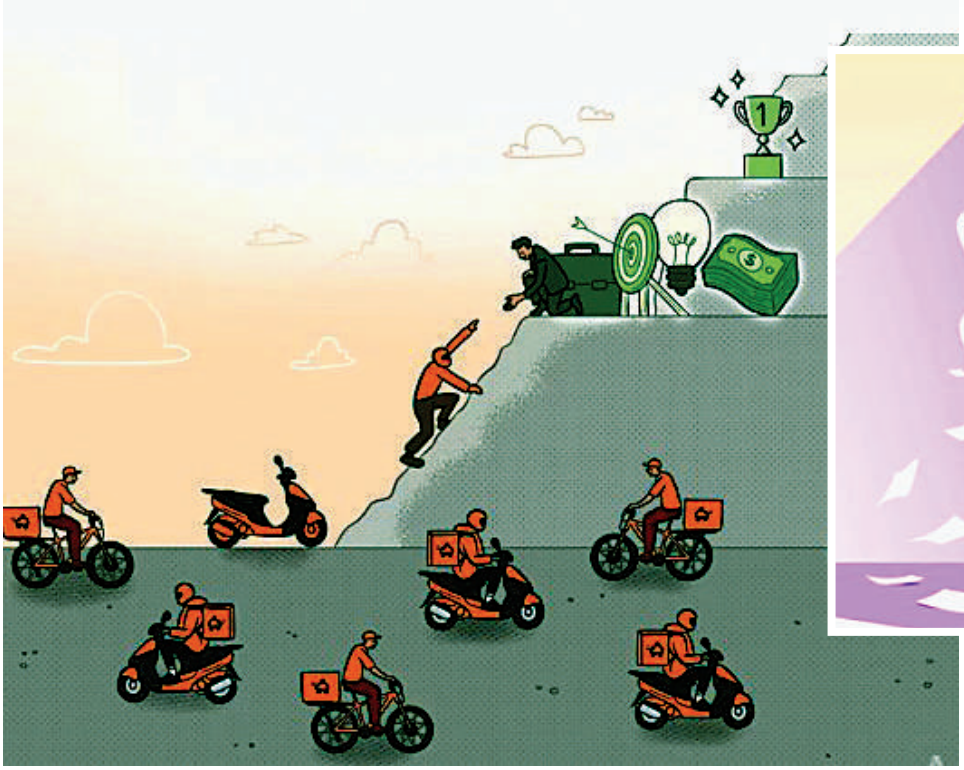
सुबह चाय बनाते समय पता चला कि दूध खत्म है। पहले पड़ोस की दुकान तक जाना पड़ता था, अब मोबाइल पर कुछ स्पर्श करते ही दूध दरवाजे पर आ सकता है। रात में अचानक मेहमान आ जाएं, बारिश में बाहर निकलना मुश्किल हो या घर में कोई जरूरी वस्तु खत्म हो जाए, तो क्विक कॉमर्स की सुविधा उपयोगी साबित होती है। मगर इसी सुविधा के बीच एक सवाल खड़ा हो रहा है। जब हर छोटी जरूरत मोबाइल से पूरी होने लगेगी, तब मोहल्ले की वह दुकान कहां होगी, जहां से वर्षों से हमारा घर चलता आया है? क्या कुछ मिनट बचाने के लिए हम अपने ही बाजार की आर्थिक और सामाजिक जीवंतता को दांव पर लगा रहे हैं?

क्विक कॉमर्स यानी त्वरित वाणिज्य ने खरीदारी की परिभाषा बदल दी है। ब्लिंकिट, जेप्टो और स्विगी इंस्टामार्ट जैसी सेवाएं किराना, फल-सब्जी और घरेलू उपयोग की वस्तुएं कम समय में पहुंचाने का दावा करती हैं। व्यस्त परिवारों, बुजुर्गों और तत्काल जरूरत वाले ग्राहकों के लिए यह सुविधा उपयोगी है। लेकिन इसका मूल्यांकन केवल डिलीवरी की गति से नहीं होना चाहिए। यह भी देखना होगा कि सामान कितना सस्ता है, गुणवत्ता कैसी है और इस व्यवस्था से स्थानीय रोजगार पर क्या असर पड़ रहा है।

बाजार के विस्तार के आंकड़े इस बदलाव की गति बताते हैं। बिजनेस स्टैंडर्ड ने 7 जुलाई 2026 को इक्विरस की रिपोर्ट के हवाले से बताया कि भारत का क्विक कॉमर्स बाजार 2026 में लगभग 1.08 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचने का अनुमान था। ब्लिंकिट, इंस्टामार्ट और जेप्टो के डार्क स्टोर की संयुक्त संख्या मई 2026 में 5,026 हो गई, जबकि एक साल पहले यह 3,405 थी। यानी लगभग 48 प्रतिशत वृद्धि। डार्क स्टोर वे गोदाम हैं जहां सामान पहले से रखा जाता है और ऑर्डर मिलते ही उसकी पैकिंग तथा डिलीवरी की प्रक्रिया शुरू हो जाती है।

इस विस्तार के पीछे उपभोक्ता की सुविधा के साथ कंपनियों की प्रतिस्पर्धा भी है। गोदामों का किराया, सामान का भंडारण, कर्मचारियों का भुगतान, तकनीक, परिवहन, पैकिंग और प्रचार पर खर्च इस कारोबार की लागत बढ़ाते हैं। ग्राहक को मिलने वाली छूट हमेशा कंपनी के मुनाफे का प्रमाण नहीं होती। कई बार छूट ग्राहक बढ़ाने की रणनीति होती है, तो कई बार प्रतिस्पर्धियों से आगे निकलने का तरीका।

- कंपनियों के वित्तीय नतीजे भी यही बताते हैं कि तेजी से बढ़ते कारोबार में लाभ कमाना आसान नहीं है। रॉयटर्स की 22 जुलाई 2026 की रिपोर्ट के अनुसार, ब्लिंकिट का समायोजित परिचालन लाभ अप्रैल-जून तिमाही में 102 करोड़ रुपये रहा और उसका समायोजित ईबीआईटीडीए मार्जिन नेट ऑर्डर वैल्यू का 0.6 प्रतिशत था।ईबीआईटीडीए यानि ब्याज, टैक्स, डेप्रिसिएशन और एमॉर्टाइजेशन से पहले की आय । यह सुधार महत्वपूर्ण है, लेकिन परिचालन लाभ को अंतिम शुद्ध मुनाफा नहीं समझना चाहिए। इसी क्षेत्र में कंपनियों की वित्तीय स्थिति अलग-अलग है। इसलिए केवल कारोबार के विस्तार को लाभप्रदता का प्रमाण मानना उचित नहीं होगा।
- उपभोक्ता के सामने सबसे बड़ा सवाल है कि क्या यह सुविधा वाकई बचत कराती है। मान लीजिए, किसी परिवार को दूध, ब्रेड और बिस्कुट खरीदने हैं। स्थानीय दुकान और मोबाइल ऐप की कुल कीमत की तुलना किए बिना यह तय नहीं किया जा सकता कि सस्ता विकल्प कौन-सा है। ऐप पर छूट आकर्षक हो सकती है, लेकिन डिलीवरी शुल्क या न्यूनतम ऑर्डर की शर्त से कुल खर्च बढ़ सकता है। दूसरी ओर, बाहर जाने में समय और परिवहन का खर्च लगता हो, तो घर तक सामान मंगाना फायदेमंद भी हो सकता है। इसलिए क्विक कॉमर्स न हमेशा महंगा है, न हमेशा सस्ता।





- ग्रांट थॉर्नटन भारत के 2022 के सर्वेक्षण में 81 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने क्विक कॉमर्स के उपयोग का कारण छूट और ऑफर बताया था। यह पुराना सर्वेक्षण है, इसलिए इसे आज के उपभोक्ताओं की पसंद का ताजा आकलन नहीं माना जा सकता। फिर भी यह सवाल प्रासंगिक है कि खरीदारी जरूरत के कारण हो रही है या छूट के आकर्षण में।
- उपभोक्ता जागरूकता यहीं महत्वपूर्ण हो जाती है। खरीदारी से पहले जरूरत और बजट तय करना चाहिए। केवल छूट का प्रतिशत देखकर निर्णय न लें, बल्कि समान मात्रा वाले उत्पादों की प्रति इकाई कीमत, पैक पर अंकित अधिकतम खुदरा मूल्य, डिलीवरी शुल्क और अन्य शर्तें भी देखें। उत्पाद की गुणवत्ता, मात्रा, निर्माण तिथि और समाप्ति तिथि पर ध्यान दें। हर छोटे ऑर्डर के बजाय जरूरत के सामान की सूची बनाना अनावश्यक खरीदारी घटा सकता है। महीने के अंत में ऐप से हुई कुल खरीदारी का हिसाब स्थानीय दुकान से किए गए खर्च के साथ मिलाकर देखना चाहिए। ग्राहक का समय कीमती है, लेकिन उसकी बचत भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

इस बदलाव का दूसरा पक्ष स्थानीय किराना दुकानदार हैं। भारत में मोहल्ले की दुकान केवल सामान बेचने का केंद्र नहीं है। दुकानदार ग्राहक की जरूरत पहचानता है, कई बार उधार देता है, कम मात्रा में सामान उपलब्ध कराता है और जरूरत पड़ने पर घर तक पहुंचाता है। उसके कारोबार से परिवार, कर्मचारी, स्थानीय वितरक और छोटे आपूर्तिकर्ता जुड़े होते हैं। ग्राहक की खरीदारी का बड़ा हिस्सा डिजिटल मंचों पर जाने से इस पूरी आर्थिक श्रृंखला पर दबाव पड़ सकता है।

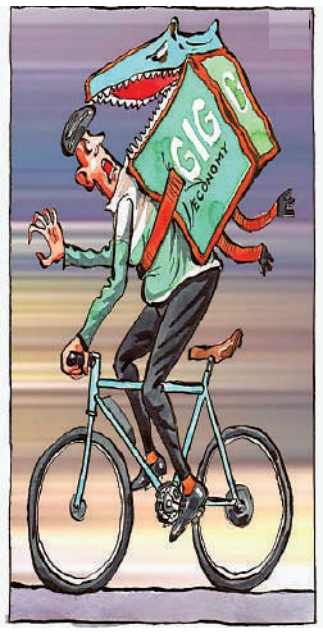
हालांकि स्थानीय दुकानों की चुनौतियों के लिए केवल क्विक कॉमर्स को जिम्मेदार ठहराना सही नहीं होगा। महंगाई, दुकान का किराया, पूंजी की कमी, बड़ी खुदरा दुकानों से प्रतिस्पर्धा और बदलती उपभोक्ता पसंद भी इसके कारण हैं। लेकिन बड़ी कंपनियों की भारी छूट, विज्ञापन और तकनीकी निवेश के सामने सीमित संसाधनों वाले दुकानदार के लिए प्रतिस्पर्धा कठिन जरूर है।

समाधान तकनीक का विरोध नहीं, बल्कि छोटे व्यापारियों को उसके साथ सक्षम बनाना है। दुकानदार डिजिटल भुगतान, फोन या संदेश से ऑर्डर लेने, स्थानीय डिलीवरी और ग्राहकों से बेहतर संपर्क जैसे उपाय अपना सकते हैं। ओएनडीसी जैसे खुले डिजिटल वाणिज्य नेटवर्क उन्हें ऑनलाइन बाजार में भागीदारी का विकल्प देते हैं। हालांकि केवल डिजिटल मंच से जुड़ने से बिक्री बढ़ने की गारंटी नहीं है। उचित कीमत, विश्वसनीय आपूर्ति और अच्छी सेवा भी जरूरी हैं। सरकार को डिजिटल बाजार में निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा, पारदर्शी शुल्क और उपभोक्ता शिकायतों के प्रभावी समाधान पर ध्यान देना चाहिए।

रोजगार के संदर्भ में भी संतुलित दृष्टिकोण जरूरी है। क्विक कॉमर्स ने गोदाम, पैकिंग, परिवहन और डिलीवरी में काम के अवसर पैदा किए हैं। लेकिन कर्मचारियों की सुरक्षा, उचित भुगतान और काम की स्थिरता भी महत्वपूर्ण हैं। तेज डिलीवरी की होड़ में किसी कर्मचारी पर असुरक्षित समय-दबाव नहीं पड़ना चाहिए। ग्राहक की सुविधा किसी दूसरे व्यक्ति के जोखिम की कीमत पर नहीं मिलनी चाहिए।

सवाल यह नहीं है कि खरीदारी मोबाइल से की जाए या बाजार जाकर। सवाल यह है कि हम किस परिस्थिति में कौन-सा विकल्प चुनते हैं। तत्काल जरूरत में क्विक कॉमर्स उपयोगी है, जबकि स्थानीय दुकान उचित कीमत, अच्छी गुणवत्ता और भरोसेमंद सेवा दे रही हो, तो उससे खरीदारी करना भी समझदारी है। खरीदारी का निर्णय सुविधा के साथ गुणवत्ता, उचित कीमत और स्थानीय रोजगार को ध्यान में रखकर किया जा सकता है।

बाजार की कीमत केवल सामान के बिल से नहीं मापी जाती। उसमें स्थानीय परिवारों की आजीविका, आपसी भरोसा और शहर की सामाजिक जीवंतता भी शामिल है। तकनीक हमारा समय बचाए और जीवन सरल करे, इसका स्वागत होना चाहिए। मगर विकास की दौड़ में यह नहीं भूलना चाहिए कि ग्राहक के दरवाजे तक सामान पहुंचाने वाली व्यवस्था तभी सार्थक है, जब वह समाज की व्यापक आर्थिक सेहत को भी मजबूत करे। आखिर क्लिक हमारी उंगली करती है, लेकिन उसके दूरगामी परिणाम पूरे बाजार और समाज को भुगतने पड़ सकते हैं।



एक गलत क्लिक पड़ सकता है भारी

दीपावली की खुशियों के बीच फर्जी गिफ्ट, क्यूआर कोड और एआई संदेशों से साइबर ठग सक्रिय हैं। राजस्थान में साढ़े तीन साल में 2307 करोड़ रुपए की ठगी के आंकड़े डिजिटल सतर्कता की जरूरत बताते हैं।



धर्मेन्द्र प्रजापति, वरिष्ठ पत्रकार

दीपावली पर बाजार सज रहे हैं। घरों में खरीदारी की तैयारियां हैं। मोबाइल पर आकर्षक ऑफर, गिफ्ट और कैशबैक के संदेश आने लगे हैं। लेकिन सावधान करने वाली खबर यह है कि त्योहार की इन खुशियों के बीच एक ऐसा खतरा भी है, जो बिना घर में घुसे आपकी जीवनभर की कमाई साफ कर सकता है। राजस्थान में साइबर ठग वर्ष 2023 से 12 सितंबर 2026 तक करीब 2307 करोड़ रुपए की चपत लगा चुके हैं। इस अवधि में प्रदेश में चार लाख से अधिक साइबर शिकायतें दर्ज हुई हैं। अकेले वर्ष 2025 में करीब 768 करोड़ रुपए की ठगी हुई। वर्ष 2026 के शुरुआती साढ़े छह महीनों में ही 387 करोड़ रुपए की ठगी दर्ज हो चुकी थी। ये आंकड़े चेतावनी हैं कि डिजिटल दुनिया में एक गलत क्लिक कितना महंगा पड़ सकता है।

अब साइबर अपराधी केवल ओटीपी मांगकर ठगी नहीं करते। वे त्योहार की शुभकामनाओं, आकर्षक उपहारों, नकली वेबसाइट, क्यूआर कोड और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जरिए लोगों का विश्वास जीतकर उन्हें निशाना बनाते हैं। सवाल है कि दीपावली पर जब डिजिटल खरीदारी और भुगतान बढ़ेंगे, तब आपकी मेहनत की कमाई कितनी सुरक्षित रहेगी?

राजस्थान में बढ़ता साइबर ठगी का जाल

- प्रदेश में साइबर अपराध के आंकड़े चिंताजनक तस्वीर पेश करते हैं। वर्ष 2023 में करीब 354 करोड़ रुपए की ठगी दर्ज हुई। अगले वर्ष यह रकम बढ़कर लगभग 795 करोड़ रुपए पहुंच गई। वर्ष 2025 में करीब 768 करोड़ रुपए की ठगी हुई। वर्ष 2023 में लगभग 78 हजार शिकायतें दर्ज हुई थीं, जबकि वर्ष 2025 में इनकी संख्या बढ़कर 1.27 लाख से अधिक हो गई। वर्ष 2026 में अक्टूबर तक करीब 90 हजार लोग साइबर क्राइम का शिकार हो चुके हैं।
- पुलिस की रिपोर्ट के अनुसार, निवेश के नाम पर धोखाधड़ी साइबर अपराध के बड़े तरीकों में शामिल है। अधिक मुनाफे का लालच देकर लोगों को फर्जी ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म और निवेश योजनाओं में फंसाया जाता है। जयपुर, अलवर, भरतपुर, दौसा और जोधपुर से जुड़े क्षेत्र साइबर अपराध के प्रमुख हॉटस्पॉट के रूप में सामने आए हैं। हालांकि साइबर ठगी का खतरा किसी एक शहर या वर्ग तक सीमित नहीं है। बुजुर्ग, महिलाएं, नौकरीपेशा लोग, कारोबारी और तकनीक से परिचित युवा भी इसके शिकार हो रहे हैं।



अजमेर की दो वारदातें, जो सबक हैं

80 लाख की ठगी : डिजिटल अरेस्ट के नाम पर शिक्षिका को डराया

अजमेर की एक सेवानिवृत्त शिक्षिका से डिजिटल अरेस्ट के नाम पर करीब 80 लाख रुपए ठगने का मामला साइबर अपराधियों के खतरनाक तरीकों को उजागर करता है। अपराधियों ने महिला को बताया कि उनके पहचान दस्तावेजों का इस्तेमाल संदिग्ध बैंक खातों में हुआ है। धनशोधन के मामले में गिरफ्तारी का डर दिखाकर वीडियो कॉल के जरिए उन पर दबाव बनाया गया। महिला से अलग-अलग खातों में रकम ट्रांसफर करवाई गई।

नवंबर 2024 में दर्ज शिकायत की जांच के दौरान अक्टूबर 2026 में एक और आरोपी गिरफ्तार हुआ। पुलिस के अनुसार, मामले में अब तक 29 आरोपियों की गिरफ्तारी हो चुकी है। यह घटना बताती है कि साइबर ठग केवल तकनीक नहीं, बल्कि व्यक्ति के डर और विश्वास का भी इस्तेमाल करते हैं।

6.74 लाख की ठगी: बैंक खातों के जरिए अपराध का नेटवर्क

सितंबर 2026 में अजमेर पुलिस ने 'ऑपरेशन म्यूल हंटर' के तहत साइबर ठगी से जुड़े बैंक खातों की जांच में कार्रवाई की। पुलिस के अनुसार, अजमेर के एक बैंक खाते से जुड़ी चार साइबर शिकायतों में कुल 6.74 लाख रुपए की धोखाधड़ी सामने आई। जांच के दौरान जोधपुर से तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया गया।

ऐसे खातों को 'म्यूल अकाउंट' कहा जाता है, जिनका इस्तेमाल ठगी की रकम प्राप्त करने और आगे भेजने के लिए किया जाता है। कमीशन के लालच में किसी दूसरे व्यक्ति को अपना बैंक खाता उपलब्ध कराना भी गंभीर कानूनी परेशानी पैदा कर सकता है।

दीपावली पर ठगी के 5 बड़े खतरे

1. फर्जी गिफ्ट और कैशबैक... 'बधाई हो! आपने दीपावली पर 25 हजार रुपए का उपहार जीता है।'

ऐसे संदेशों में लिंक खोलकर व्यक्तिगत जानकारी भरने या मामूली शुल्क जमा करने को कहा जाता है। जिस प्रतियोगिता में आपने भाग नहीं लिया, उसमें पुरस्कार मिलने का दावा संदेह पैदा करता है। अनजान लिंक पर क्लिक करने या अपनी बैंकिंग जानकारी देने से बचें।

2. नकली ऑनलाइन सेल... दीपावली पर 80 से 90 प्रतिशत छूट के विज्ञापन आकर्षित करते हैं। ठग प्रसिद्ध कंपनियों से मिलती-जुलती वेबसाइट बनाकर भुगतान करवा सकते हैं। वेबसाइट का पता, कंपनी की विश्वसनीयता और भुगतान का तरीका जांचना जरूरी है। केवल वेबसाइट पर ताले का निशान होना उसकी प्रामाणिकता की गारंटी नहीं है।

3. क्यूआर कोड से ठगी... कैशबैक या रिफंड भेजने के नाम पर क्यूआर कोड स्कैन कराकर यूपीआई पिन डालने को कहा जा सकता है। याद रखें, पैसा प्राप्त करने के लिए यूपीआई पिन डालने की आवश्यकता नहीं होती। पिन दर्ज करने का अर्थ आमतौर पर भुगतान को अधिकृत करना है। भुगतान करने से पहले स्क्रीन पर प्राप्तकर्ता और रकम अवश्य जांचें।

4. नकली ग्राहक सेवा... ऑनलाइन ऑर्डर, रिफंड और डिलीवरी की शिकायतों का फायदा उठाकर अपराधी फर्जी ग्राहक सेवा अधिकारी बनते हैं। वे ओटीपी, बैंक विवरण या मोबाइल की स्क्रीन साझा करने को कह सकते हैं। ग्राहक सेवा के लिए हमेशा संबंधित कंपनी के आधिकारिक ऐप या वेबसाइट का उपयोग करें।

5. एआई से आवाज और वीडियो की नकल... आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने धोखाधड़ी के नए रास्ते खोल दिए हैं। परिचित व्यक्ति जैसी आवाज या चेहरा दिखाकर आपातकाल के नाम पर पैसे मांगे जा सकते हैं। ऐसी कॉल आने पर घबराएं नहीं। संबंधित व्यक्ति को उसके पहले से सुरक्षित नंबर पर फोन करके पुष्टि करें।

राजस्थान सरकार की नई चेतावनी

राजस्थान सरकार के सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग ने सितंबर 2026 में साइबर सुरक्षा से जुड़ी महत्वपूर्ण एडवाइजरी जारी कीं। 18 सितंबर को क्यूआर कोड के जरिए फिशिंग यानी 'क्विशिंग' से सावधान रहने और 24 सितंबर को बैंक खाते किराए पर देने से संबंधित धोखाधड़ी के बारे में चेतावनी जारी की गई। इससे स्पष्ट है कि साइबर अपराध के नए तरीकों को लेकर सतर्कता जरूरी है। अनजान लिंक, संदिग्ध क्यूआर कोड और दूसरों को बैंक खाता उपलब्ध कराने जैसे जोखिमों से बचना चाहिए।

ठगी का सबसे बड़ा हथियार है जल्दबाजी

- साइबर अपराधियों की रणनीति में एक बात अक्सर समान होती है कि वे पीड़ित को सोचने का समय नहीं देते। 'दस मिनट में ऑफर खत्म हो जाएगा।' 'तुरंत भुगतान नहीं किया तो बैंक खाता बंद हो जाएगा।' 'किसी को बताया तो गिरफ्तार कर लिया जाएगा।' ऐसी धमकियां व्यक्ति को मानसिक दबाव में लाती हैं।
- ध्यान रखें, भारत में डिजिटल अरेस्ट नाम की कोई वैध गिरफ्तारी प्रक्रिया नहीं है। कोई वास्तविक जांच एजेंसी वीडियो कॉल पर व्यक्ति को बंधक बनाकर पैसे जमा करने का आदेश नहीं देती। किसी भी संदिग्ध कॉल पर भुगतान करने के बजाय संबंधित संस्था से स्वतंत्र रूप से पुष्टि करें।

ठगी हो जाए तो चुप न रहें

- साइबर ठगी का शिकार होने पर शर्म या बदनामी के डर से चुप रहना नुकसान बढ़ा सकता है। तत्काल अपने बैंक को सूचना दें। संबंधित कार्ड या भुगतान सुविधा को सुरक्षित करवाएं। इसके बाद राष्ट्रीय साइबर अपराध हेल्पलाइन 1930 पर शिकायत करें। भारत सरकार के राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल cybercrime.gov.in पर भी शिकायत दर्ज की जा सकती है।
- शिकायत के लिए लेन-देन की तारीख, समय, रकम, ट्रांजेक्शन आईडी, संदिग्ध मोबाइल नंबर और स्क्रीनशॉट सुरक्षित रखें। जितनी जल्दी सूचना दी जाएगी, संदिग्ध रकम को रोकने की संभावना उतनी बेहतर हो सकती है। हालांकि शिकायत करने से पूरी रकम वापस मिलने की गारंटी नहीं होती, लेकिन समय पर सूचना मिलने से पुलिस को रकम बचाने में मदद मिल सकती है।
- पुलिस के आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2025 में पीड़ितों को 10 करोड़ रुपए से अधिक की राशि वापस दिलाई गई। यह वर्ष 2023 के मुकाबले लगभग दस गुना है। वर्ष 2024 की तुलना में 2025 में ठगी की फ्रीज कराई गई रकम में 65.54 करोड़ रुपए की वृद्धि हुई। वर्ष 2023 के मुकाबले रकम होल्ड कराने में 339 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। वर्ष 2026 में जुलाई तक विशेष अभियानों के तहत 9,744 फर्जी बैंक खाते, वेबसाइट और ऐप बंद या निष्क्रिय कराए गए। प्रदेश में 43 साइबर पुलिस थाने और 1930 हेल्पलाइन की 53 लाइनें संचालित हैं।

एक दीपक डिजिटल जागरूकता का भी जलाएं

- दीपावली अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने का पर्व है। आज डिजिटल दुनिया में भी जागरूकता का ऐसा ही दीपक जलाने की आवश्यकता है। त्योहार पर केवल घरों और दुकानों की सुरक्षा पर्याप्त नहीं है। डिजिटल लेन-देन की सुरक्षा भी उतनी ही जरूरी है।
- बुजुर्गों को डिजिटल अरेस्ट जैसी फर्जी धमकियों के बारे में बताएं। बच्चों को अनजान गेमिंग और गिफ्ट लिंक से सावधान करें। दुकानदार भुगतान मिलने की पुष्टि अपने बैंक या यूपीआई ऐप में करें। ग्राहक के दिखाए स्क्रीनशॉट मात्र पर भरोसा न करें। मोबाइल और बैंकिंग ऐप अपडेट रखें। मजबूत पासवर्ड अपनाएं। ओटीपी और यूपीआई पिन किसी से साझा न करें।
- तकनीक से दूर भागना समाधान नहीं है। उसका सुरक्षित इस्तेमाल करना सीखना जरूरी है। हम घर की सुरक्षा के लिए मजबूत ताले लगाते हैं, लेकिन मोबाइल में मौजूद बैंक खाते और निजी जानकारी की सुरक्षा में अक्सर लापरवाही कर बैठते हैं। इस दीपावली खरीदारी जरूर कीजिए, उपहार भी बांटिए, लेकिन किसी अनजान लिंक या संदेश को अपनी मेहनत की कमाई तक पहुंचने का रास्ता मत दीजिए। डिजिटल साक्षरता केवल ऐप चलाना नहीं, धोखे को पहचानना भी है। सुरक्षित डिजिटल दीपावली ही खुशहाल दीपावली है।

सरकारी ई-मेल आईडी को खतरा, पुलिस की एडवाइजरी

एक्सपर्ट की राय : शमशेर खान, आरपीएस, अजमेर साइबर क्राइम सेल प्रभारी

अजमेर साइबर क्राइम सेल के उपाधीक्षक शमशेर खान का कहना है कि सावधानी से ही साइबर ठगी से बचाव हो सकता है। उन्होंने बताया कि अपराधियों के निशाने पर सरकारी ई-मेल और आईडी भी हैं। इसके लिए राजस्थान पुलिस ने सरकारी कर्मचारियों और अधिकारियों के लिए एडवाइजरी जारी की है। निर्देश दिए गए हैं कि शॉपिंग और सोशल मीडिया ऐप पर सरकारी ई-मेल का इस्तेमाल न करें। एक ही पासवर्ड रखने से सरकारी सिस्टम में सेंध का खतरा बढ़ जाता है। कई बार कर्मचारी सरकारी ई-मेल आईडी का इस्तेमाल अमेजन, फ्लिपकार्ट, जोमैटो, फेसबुक, कैब बुकिंग और गेमिंग ऐप जैसी निजी सेवाओं पर खाते बनाने के लिए करते हैं। यदि इन प्लेटफॉर्म पर सरकारी ई-मेल के समान पासवर्ड भी रखा जाता है, तो संबंधित प्लेटफॉर्म का डेटा लीक होने की स्थिति में सरकारी खाते की सुरक्षा भी खतरे में पड़ सकती है।

साइबर घटना होने पर कहां करें शिकायत... यदि सरकारी ई-मेल खाते के दुरुपयोग या साइबर धोखाधड़ी की आशंका हो, तो तत्काल संबंधित आईटी हेल्पडेस्क या सुरक्षा संचालन केंद्र (एसओसी) को सूचित करें। साइबर सुरक्षा में चूक या ठगी की घटना होने पर निकटतम पुलिस थाने, साइबर पुलिस स्टेशन या राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल cybercrime.gov.in पर शिकायत करें। इसके अलावा त्वरित सहायता के लिए साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 अथवा साइबर हेल्पडेस्क नंबर 9256001930 / 9257510100 पर संपर्क करें।

तेज रोशनी में अपनों को ढूंढती आंखें



डिजिटल युग में स्क्रीन पर दुनिया तो सिमट आई, पर बुजुर्गों का हाथ थामने का वक्त घट गया। त्योहार की असली आभा मिट्टी के दीयों से नहीं, अपनों की जीवंत मौजूदगी से है।



मणिमाला शर्मा, ✍ वरिष्ठ पत्रकार

जगमगाती रोशनियों में दमकते बाज़ार, मिठाइयों की महक और पटाखों का तेज शोर। दीपावली हमारी चौखट पर खड़ी है। पूरा देश इस समय उल्लास के एक अनूठे महासागर में हिचकोले खा रहा है। हर घर की खिड़की से हंसी और खिलखिलाहट छनकर बाहर आ रही है। लेकिन इसी उत्सव की चकाचौंध के समानांतर हमारी सोसायटियों और मोहल्लों में कुछ ऐसे बंद दरवाजे भी हैं, जिनके पीछे केवल एक भारी, डरावनी खामोशी का पहरा है। यह सन्नाटा उन बुजुर्ग आंखों का है, जिनके बच्चे करियर और आधुनिक जीवनशैली की होड़ में सात समंदर पार या दूसरे महानगरों में जा बसे हैं।

जब पूरा समाज खुशियां मना रहा होता है, तब ये बुजुर्ग अपनी सूनी देहरी पर अकेले बैठे बीते कल की स्मृतियों के दीये जलाते हैं। वे यादें, जब बच्चे छोटे थे, जब आंगन में उनकी किलकारियां गूंजती थीं और जब त्योहार सचमुच एक उत्सव जैसा महसूस होता था। आज उनकी दीपावली महज कैलेंडर के पन्नों पर सिमटी एक तारीख भर रह गई है। इस कसकते अकेलेपन को महसूस करना और उनके चेहरों पर मुस्कान वापस लाना ही आज के सभ्य समाज की सबसे बड़ी नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी है।

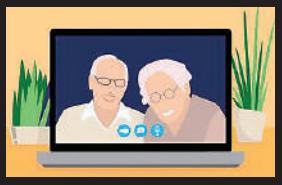
अकेलेपन का भयानक सच

बुजुर्गों का अकेलापन केवल भावनात्मक परेशानी नहीं, बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़ी गंभीर चिंता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, दुनिया में 60 वर्ष और उससे अधिक आयु के लगभग 11.8 प्रतिशत लोग अकेलेपन का अनुभव करते हैं। संगठन के अनुसार, लगभग हर चार में से एक बुजुर्ग सामाजिक रूप से अलग-थलग है। यहां यह समझना जरूरी है कि अकेलापन और सामाजिक अलगाव एक ही स्थिति नहीं हैं। सामाजिक अलगाव का संबंध सामाजिक संपर्कों की कमी से है, जबकि अकेलापन व्यक्ति का भावनात्मक अनुभव है। भारत के लॉन्जिट्यूडिनल एजिंग स्टडी इन इंडिया के 2017–18 के आंकड़ों पर आधारित अध्ययन में शामिल 30,394 बुजुर्गों में से 13.4 प्रतिशत ने अक्सर अकेलापन महसूस करने की बात कही थी। यह आंकड़ा बताता है कि इस समस्या को कुछ परिवारों तक सीमित मानकर नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

शोधों में सामाजिक अलगाव और अकेलेपन का संबंध अवसाद, हृदय रोग, स्ट्रोक और डिमेंशिया जैसे स्वास्थ्य जोखिमों से पाया गया है। हालांकि, इन जोखिमों का स्तर परिस्थितियों के अनुसार बदलता है। त्योहारों के दौरान यह अकेलापन और गहरा महसूस होता है। चारों तरफ परिवारों के मिलन, बच्चों की हंसी और उत्सव की तस्वीरें हों, तो अपनों की अनुपस्थिति और अधिक खलती है। ऐसे में परिवार और समाज की जिम्मेदारी केवल शुभकामना भेजने तक सीमित न रहकर उनके साथ वक्त बिताने की होनी चाहिए।

कांच की स्क्रीन बनाम अपनों का जीवंत स्पर्श

आज की युवा पीढ़ी अक्सर यह कहकर अपनी जिम्मेदारियों से पल्ला झाड़ लेती है कि 'हमने वीडियो कॉल करके बधाई दे दी है' या हम रोज बात करते हैं। तकनीक ने बेशक दूरियां कम की हैं और सात समंदर पार बैठे बच्चों को एक क्लिक पर सामने ला खड़ा किया है। मगर हमें ठहरकर सोचना होगा कि क्या पांच इंच की ठंडी स्क्रीन पर चमकता चेहरा बुजुर्ग मां-बाप के हाथ थामने वाले उस जादुई अहसास का विकल्प बन सकता है? क्या वह वीडियो कॉल त्योहार की उस तन्हाई को मिटा सकती है, जो अपनों की अनुपस्थिति में दीवारों से रिसती है? वीडियो कॉल औपचारिकता तक सीमित रह जाए, तो वह उस सूनेपन को नहीं भर सकती जो त्योहार की शाम को चुभता है। हमारे बुजुर्गों को त्योहार पर डिजिटल स्क्रीन की कृत्रिम आभा के साथ-साथ स्नेह की मानवीय गर्माहट भी चाहिए।



सब जानते हैं कि दूर रहने वाले बच्चों के लिए हर त्योहार पर घर पहुंचना संभव नहीं होता। आजीविका, आर्थिक स्थितियां और अन्य जिम्मेदारियां भी अपनी जगह हैं। लेकिन नियमित बातचीत, ध्यान से सुनी गई बात, जरूरतों की जानकारी और मिलने की ठोस योजना यह भरोसा दिलाती है कि दूरी के बावजूद रिश्ता जीवंत है। डिजिटल संपर्क को जिम्मेदारी का विकल्प नहीं, बल्कि उसे निभाने का एक माध्यम बनना चाहिए।

मनोचिकित्सक डॉ. रेहाना अज़ीम का कहना है कि इंसान को मानसिक संतुष्टि और सुरक्षा के लिए सार्थक सामाजिक संबंधों की जरूरत होती है। अपनों की मौजूदगी, स्नेहपूर्ण बातचीत और जरूरत के समय मिलने वाला सहयोग बुजुर्गों के लिए विशेष महत्व रखता है। जब कोई संतान झुककर मां के पैर छूती है या पिता को गले लगाती है, तो उस स्पर्श में केवल परंपरा नहीं, अपनेपन का भरोसा भी होता है। वीडियो कॉल इस जुड़ाव का माध्यम बन सकती है, लेकिन आमने-सामने की मौजूदगी और व्यावहारिक मदद की जगह नहीं ले सकती।



एकाकीपन का स्वास्थ्य पर प्रहार

अकेलेपन को अक्सर महज एक जज्बाती स्थिति मान लिया जाता है, लेकिन लंबे समय तक सामाजिक अलगाव मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य पर गहरा असर डालता है। त्योहारों पर यह दंश और गहरा हो जाता है, जब चारों तरफ फैली दूसरों की खुशियां उनके एकांत को और नुकीला बना देती हैं। ऐसे में वे खुद को समाज में अनचाहा महसूस करने लगते हैं। कई बार बुजुर्ग इस डर से अपने बच्चों को फोन पर अपनी बीमारी या उदासी का जिक्र तक नहीं करते कि कहीं दूर बैठा बच्चा परेशान न हो जाए। वे तकलीफ छिपाते हैं, जरूरतें टालते हैं और अकेले ही जूझते रहते हैं।

यह भी समझना जरूरी है कि अकेला रहने वाला हर बुजुर्ग दुखी या असहाय नहीं होता। बहुत से लोग स्वतंत्र जीवन पसंद करते हैं और अपने निर्णय खुद लेना चाहते हैं। चिंता तब बढ़ती है, जब व्यक्ति साथ और भावनात्मक सहारा चाहता हो, लेकिन उसे देखभाल न मिले। इसलिए बुजुर्गों की जरूरतों को समझना और बिना उनकी स्वतंत्रता में दखल दिए मदद करना जरूरी है।

हमारी सामाजिक जिम्मेदारी : पड़ोस का धर्म

यदि परिस्थितिवश बच्चे दूर हैं, तो क्या बतौर समाज हमारी कोई जवाबदेही नहीं बनती? क्या हमारा दायित्व सिर्फ अपने परिवार की चारदीवारी तक ही सीमित है? हमारी संस्कृति हमें 'वसुधैव कुटुंबकम्' की सीख देती है। पड़ोस में रहने वाले बुजुर्ग केवल किसी के माता-पिता नहीं, वे समाज की जीती-जागती धरोहर हैं, जिन्होंने अपनी जवानी इस देश और समाज के निर्माण में खपा दी है। हम सब मिलकर छोटे, संवेदनशील प्रयासों से उनकी दीपावली का परिदृश्य बदल सकते हैं।



1. **समय का दानः** इस त्योहार पर बुजुर्गों को दिया जाने वाला सबसे अनमोल उपहार आपका वक्त है। अपनी व्यस्तताओं में से मात्र आधा घंटा निकालकर उनके पास बैठिए, उनके दौर की दीपावली के किस्से सुनिए। संवाद के उन चंद लम्हों में उनकी आंखों में जो संतोष दिखेगा, वह किसी भी महंगे उपहार से अनमोल होगा।
2. **उत्सव के सहयात्रीः** अपने घर में बनने वाले पकवानों और मिठाइयों का एक हिस्सा पूरे सम्मान के साथ उन तक पहुंचाइए। उन्हें अपने घर के लक्ष्मी पूजन या सोसायटी के दीपोत्सव में विशेष रूप से आमंत्रित कीजिए। उन्हें महसूस होना चाहिए कि वे आज भी हमारे उत्सव का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।
3. **एक दीया उनके द्वार परः** यदि पड़ोस में कोई वृद्ध दंपती अकेले रहता है, तो उनकी सहमति से मुख्य द्वार को सजाने या वहां दीये रखने में हाथ बंटाइए। यह छोटा-सा कदम उनके जीवन में अपनेपन की रोशनी ला सकता है। सबसे जरूरी है कि उन्हें लगे कि वे उत्सव में शामिल हैं, किसी की दया के पात्र नहीं।
4. **सुरक्षा का अहसासः** एक सजग पड़ोसी के नाते उनकी सहमति से उनके किसी आपातकालीन संपर्क की जानकारी हमारे पास होनी चाहिए। सुबह-शाम उनका हालचाल लेना हमारी आदत में शुमार होना चाहिए, ताकि उन्हें भरोसा रहे कि जरूरत पड़ने पर आसपास कोई मदद के लिए मौजूद है। पड़ोस की यह जिम्मेदारी केवल दीपावली तक सीमित न रहे। आवासीय समितियां और स्वयंसेवी समूह बुजुर्गों के लिए नियमित मिलन, स्वास्थ्य जांच और सांस्कृतिक गतिविधियां आयोजित कर सकते हैं।

उत्सव की वास्तविक परिभाषा... दीपावली केवल मिट्टी के दीये जलाने, नए परिधान पहनने या सोशल मीडिया पर बधाई संदेशों की बाढ़ लाने का नाम नहीं है। त्योहार की असली सार्थकता इसी बात में निहित है कि हमारे रहते उम्र के इस पड़ाव पर खड़ा कोई भी बुजुर्ग खुद को उपेक्षित या असहाय महसूस न करे। जब तक हम किसी उदास चेहरे पर मुस्कान की रोशनी नहीं बिखेर सकते, तब तक हमारे अपने घरों में जलाए गए दीयों का उजाला अधूरा है। उत्सव की पूर्णता केवल अपना घर रोशन करने में नहीं, किसी दूसरे के जीवन का अंधेरा बांटने में है।

मन को थका रहीं हमारी डिजिटल आदतें

हर छोटे फैसले के लिए तकनीक पर बढ़ती निर्भरता, ऑनलाइन तुलना और लगातार स्क्रीन की मौजूदगी मानसिक शांति व आपसी संवाद छीन रही है। तकनीक को सहायक बनाएं, जीवन का नियंत्रक नहीं।



संदीप खमेसरा, वरिष्ठ पत्रकार

सुविधाओं की चमक के बीच मानसिक सुकून की तलाश, दूसरों की जिंदगी से अपनी जिंदगी की तुलना और हर पल ऑनलाइन रहने का दबाव हमें भीतर से थका रहा है। तकनीक ने जीवन आसान बनाया है, लेकिन क्या हमने अपनी सोचने समझने की क्षमता, आपसी संवाद और मन की शांति की कीमत पर यह सुविधा हासिल की है? त्योहारों के इस दौर में यह सवाल और भी प्रासंगिक हो जाता है कि आखिर अपने समय, ध्यान और मन पर नियंत्रण वापस कैसे पाया जाए।

इस बात को कुछ यूं समझते हैं। शाम को किसी पार्टी में जाना है। श्रीमती जी वार्डरोब के सामने खड़ी होकर पूछती हैं, सुनो कौन सी साड़ी पहनूं? आप जानते हैं कि अंतिम चुनाव उन्हीं का होगा। फिर भी दिमाग के घोड़े दौड़ाते हैं। कुछ मिनट बातचीत होती है, नोकझोंक और हंसी मजाक का दौर चलता है। इस छोटे से संवाद में रिश्ते की आत्मीयता है, एक दूसरे को समझने का अभ्यास है और साथ बिताए गए समय की सहज खुशी है। आज यही काम किसी एआई टूल से कराया जा रहा है। अवसर बताइए, कपड़ों की तस्वीरें दिखाइए और सुझाव हासिल कर लीजिए। काम आसान हो गया, लेकिन उस बहाने होने वाली बातचीत भी समाप्त हो गई।

सुबह चाय नाश्ते की मेज पर सवाल उठता है कि आज क्या सब्जी बनाऊं? आप पिछले दो तीन दिनों के भोजन को याद करते हैं। विकल्प सुझाते हैं और फिर चर्चा आगे बढ़ती है। संभव है कि अंततः वही बने जो पहले से तय था, लेकिन इस प्रक्रिया में याददाश्त, कल्पना और संवाद तीनों सक्रिय रहते हैं। अब एआई से पूछिए कि आज क्या बनाना चाहिए और कैसे बनाना चाहिए, जवाब तुरंत मिल जाएगा। तकनीक का उपयोग गलत नहीं है, मगर हर छोटे फैसले का जिम्मा किसी डिजिटल सहायक को सौंप देना हमें आत्मीय संबंधों से दूर कर सकता है।



आखिर किस ऐप पर मिलेगी मन की शांति?

यह सवाल आज के डिजिटल युग की सबसे बड़ी विडंबनाओं में से एक है। हम अपनी हर जरूरत के लिए ऐप खोज रहे हैं। क्या पहनना है, क्या खाना है, किस रास्ते जाना है, किस बीमारी में कौन सी सावधानी बरतनी है, यहां तक कि किसी संदेश का जवाब कैसे देना है, इसके लिए भी तकनीक से सलाह लेने लगे हैं। हमारी जेब में मौजूद स्मार्टफोन और उसमें एआई टूल मानो जीवन का सर्वज्ञ सलाहकार बन गए हैं। लेकिन इस तमाम सुविधा के बीच एक सवाल लगातार अनुत्तरित है कि क्या हमारा मन भी पहले से ज्यादा शांत, स्थिर और संतुष्ट हुआ है? यदि नहीं, तो हमें अपनी डिजिटल आदतों पर गंभीरता से विचार करना होगा।

सुविधा बढ़ी, मानसिक सक्रियता घटी?

अनजान रास्तों पर गूगल मैप्स ने यात्रा को निश्चित रूप से आसान बनाया है। पहले लोग रास्ते पूछते थे, स्थानीय लोगों से बातचीत करते थे, दिशाओं और संकेतों को याद रखते थे। कभी रास्ता भटकते भी थे, तो उसी बहाने किसी अनजान जगह, भाषा और संस्कृति से परिचय हो जाता था। आज पांच सौ किलोमीटर की यात्रा में भी हम स्क्रीन पर चलती एक रेखा के पीछे-पीछे पहुंच जाते हैं। यह सुविधा उपयोगी है, विशेषकर अपरिचित स्थानों और आपात परिस्थितियों में। लेकिन यदि हम हर दिशा पहचानने, आसपास के संकेतों को समझने और रास्ता याद रखने का अभ्यास पूरी तरह छोड़ दें, तो हमारी दिमागी क्षमताओं का इस्तेमाल कम होने लगता है।

आज हमने मोबाइल नंबर याद रखने, छोटी मोटी गणना करने, वर्तनी सुधारने, उपकरण चलाने और जानकारी खोजने के लिए भी तकनीक को अपना स्थायी सहायक बना लिया है। एलेक्सा और सिरी जैसे वॉइस असिस्टेंट हमारे निर्देशों पर काम करते हैं, ऑटो करेक्ट लिखने में मदद करता है और एआई कठिन विषयों को सरल बना देता है। इन सुविधाओं से इनकार नहीं किया जा सकता। समस्या तब शुरू होती है, जब सहायता धीरे धीरे आदत बनती है और आदत निर्भरता में बदल जाती है।

मानसिक सुकून छीनती है अनावश्यक तुलना

- डिजिटल थकान का सबसे गहरा पहलू सोशल मीडिया से जुड़ा है। यहां हर दिन किसी की शानदार छुट्टियों की तस्वीरें, किसी की नई कार, किसी की बड़ी उपलब्धि, किसी का खूबसूरत घर और किसी की मुस्कुराती हुई जिंदगी दिखाई देती है। स्क्रीन पर सब कुछ चमकदार नजर आता है। धीरे-धीरे हम अपनी सामान्य जिंदगी की तुलना दूसरों के चुने हुए बेहतरीन पलों से करने लगते हैं। किसी की सफलता हमें अपनी असफलता लगने लगती है, किसी की खुशी अपनी कमी का एहसास कराती है।
- हम भूल जाते हैं कि सोशल मीडिया पर दिखाई देने वाली तस्वीर पूरी जिंदगी नहीं, उसका चुना हुआ एक हिस्सा होती है। लेकिन इस लगातार तुलना का असर आत्मविश्वास, संतोष और मानसिक सुकून पर पड़ता है। मन में अनजानी बेचैनी जन्म लेती है कि हम कहीं पीछे तो नहीं छूट रहे? मनोरंजन के लिए खोला गया ऐप कब हमारी भावनाओं और आत्ममूल्य का पैमाना बन जाता है, पता ही नहीं चलता। मन की शांति खोजने के लिए हम एक के बाद दूसरा वीडियो देखते हैं, लेकिन कई बार स्क्रीन बंद करने के बाद बेचैनी पहले से ज्यादा हो जाती है।

हर समय उपलब्ध रहने का दबाव

डिजिटल जीवन ने समय और दूरी की बाधाएं घटाई हैं, लेकिन साथ ही हर समय उपलब्ध रहने की अपेक्षा बढ़ाई है। संदेश आया है तो जवाब अभी देना है, कार्यालय का ईमेल देर रात भी देखा जाना चाहिए, किसी समूह में चर्चा चल रही है तो उससे अलग कैसे रहें! नोटिफिकेशन की आवाज या स्क्रीन पर चमकता संकेत हमारा ध्यान बार बार खींचता है। हम किसी काम में पूरी तरह एकाग्र नहीं हो पाते। पढ़ते समय फोन, परिवार के साथ बैठते समय फोन और सोने से पहले भी फोन। शरीर एक जगह रहता है, लेकिन ध्यान और मन लगातार कई दिशाओं में भटकता रहता है।

तकनीक पर भरोसा, अपनी क्षमता पर भी विश्वास

तकनीक का अतिरेक केवल संवाद और एकाग्रता तक सीमित नहीं है। स्वास्थ्य संबंधी परेशानी होने पर इंटरनेट पर लक्षण खोजते खोजते व्यक्ति अनावश्यक चिंता में घिर जाता है। डॉक्टर की सलाह को समझने के लिए विश्वसनीय जानकारी लेना उपयोगी है, लेकिन अधूरी ऑनलाइन सूचनाओं के आधार पर इलाज पर संदेह करना या स्वयं दवाइयां बदलना नुकसानदेह हो सकता है। इसी तरह एआई से लिखवाने की सुविधा के बीच स्वयं लिखने, विचार करने और तर्क विकसित करने का अभ्यास भी जरूरी है। तकनीक हमारी क्षमताओं को बढ़ाए, न कि उनका स्थान ले ले।

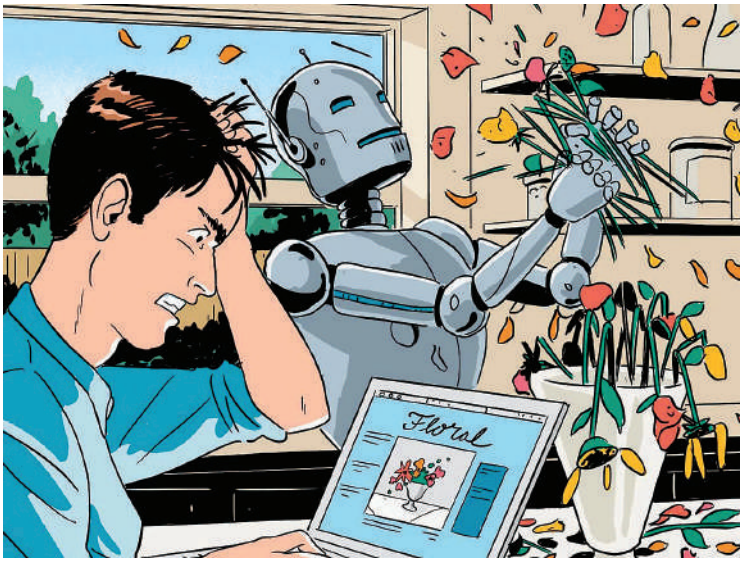
त्योहारों में लौटाएं अपने समय को अपनापन

त्योहारों का मौसम इस आदत को बदलने का अच्छा अवसर है। होली दीपावली हो, दशहरा हो या कोई अन्य पर्व, इनका वास्तविक आनंद केवल तस्वीरें खींचने और शुभकामना संदेश भेजने में नहीं है, बल्कि साथ बैठने, बातचीत करने और रिश्तों को समय देने में है। इस बार कोशिश कीजिए कि परिवार के साथ भोजन करते समय फोन एक तरफ रखा जाए। मिलने आए लोगों से बातचीत के बीच बार बार स्क्रीन न देखी जाए। बच्चों के साथ खेलें, बुजुर्गों की बातें सुनें और मित्रों से आमने सामने मिलकर हालचाल पूछें। हर खुशी को तुरंत पोस्ट करना जरूरी नहीं है, कुछ पल केवल अपने और अपनों के लिए भी बचाकर रखे जा सकते हैं।

दिमाग को आराम दें, लेकिन उसे निष्क्रिय न बनाएं

जीवन की पहेलियां स्वयं सुलझाइए। कभी अनजान रास्ते पर आसपास के संकेतों को समझने की कोशिश कीजिए। लोगों से मशवरा लीजिए, अपने अनुभवों को कलम से लिखिए, नई चीजें सीखिए और कठिनाई आने पर तुरंत तैयार जवाब खोजने के बजाय कुछ देर स्वयं सोचिए। गलतियां होने दीजिए, उनसे सीखिए और अपने निर्णयों पर भरोसा करना भी सीखिए। मनुष्य की रचनात्मकता अक्सर उसी समय सामने आती है, जब वह किसी समस्या से जूझता है, विकल्प तलाशता है और असफलता के बाद दोबारा प्रयास करता है।

तकनीक हमारी सहायक बने, स्वामी नहीं



तकनीक अच्छी है, बशर्ते कि वह हमारी सहायक बनी रहे, हमारी स्वामी न बन जाए। दिन में कुछ समय नोटिफिकेशन बंद रखना, सोने से पहले स्क्रीन से दूरी बनाना, सोशल मीडिया के लिए निश्चित समय तय करना और सुबह उठते ही फोन देखने के बजाय कुछ देर स्वयं के साथ रहना छोटे लेकिन प्रभावी कदम हो सकते हैं। डिजिटल दुनिया में जुड़े रहना उपयोगी है, लेकिन अपने परिवार, समाज, प्रकृति और स्वयं से जुड़ाव बनाए रखना उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। मन की शांति किसी डाउनलोड बटन से नहीं मिलती। वह संतुलन, आत्मीय संवाद, संतोष, सक्रिय सोच और अपने समय पर अपने अधिकार से जन्म लेती है। इसलिए तकनीक का इस्तेमाल जरूर कीजिए, लेकिन अपने मन और समय का नियंत्रण अपने पास रखिए। आखिर जीवन केवल आसान बनाने के लिए नहीं, महसूस करने, समझने और जीने के लिए भी है।

दीपावली पर मां लक्ष्मी के दरबार में बड़े-बड़े नेताओं की लंबी कतार

कुर्सी बचाओ, कृपा बरसाओ!



हरीश मलिक, ✍ लेखक और व्यंग्यकार

जब आप इस व्यंग्य को पढ़ रहे होंगे, तब चहुँओर दिवाली की रौनक बिखरी होगी। प्रभु श्रीराम के साथ मां लक्ष्मी के स्वागत की तैयारियां चरम पर होंगी। हम आमजन महालक्ष्मी का स्वागत सामर्थ्यानुसार अपनी झोली फैलाकर करेंगे। ऐसे में एक सवाल सहज ही ज़ेहन में आता है कि इस पावन अवसर पर बड़े-बड़े नेता मां लक्ष्मी से क्या और कैसे मांगते होंगे?

आइए, आपको सीधे मां लक्ष्मी के दरबार में ले चलते हैं। यहां भक्तों की लंबी कतार लगी है। किसी को धन की चाह, किसी को सुख-समृद्धि की तो कोई परिवार की खुशहाली के लिए नतमस्तक। लेकिन एक अलग वीआईपी कतार भी है, जिसमें नेता सबसे ज्यादा हैं। सबके चेहरे पर विनम्रता का लेप और मन में इच्छाओं का पूरा घोषणा-पत्र। किसी को सत्ता चाहिए। किसी को सत्ता बचानी है। मां लक्ष्मी शांत भाव से विराजमान हैं। उनके वाहन उल्लू ने नेताओं की कतार देखी तो अपनी गोल-गोल आंखें और फैला लीं। दरअसल, वह सदियों से इनकी चालाकियां देखता आया है, लेकिन राजनीति के इस रंगमंच पर उसे हर बार कुछ नया देखने को मिल जाता है।



पता नहीं उल्लू की नजर सबसे पहले राहुल गांधी पर ही क्यों पड़ी! उनके चेहरे पर ऐसी गंभीरता विराजमान, मानो देश की सारी समस्याएं उनके पास शिकायत लेकर आई हों और वे अभी उनकी यात्रा निकालने वाले हों। इसके साथ ही सत्ता में वापसी की प्रबल आकांक्षा भी साफ झलकी। उल्लू ने मन ही मन सोचा- इनकी इच्छा बड़ी नेक है। हर चुनाव के बाद फिर से नई शुरुआत के लिए मजबूत हौसला चाहिए। इसी बीच राहुल ने कहा- माता, हमें जनता का प्यार मिले, संगठन मजबूत हो और हमारे भाषणों के बाद लोग यह न पूछें कि अगला कदम क्या है! मां ने पूछा- वत्स, जनता तुम्हें समझे, इससे पहले तुम जनता को समझने का प्रयास करो। यहां साथ खड़ी प्रियंका चहक उठीं- मां, हम तो देश ही नहीं विदेश की जनता के बीच भी जाते हैं। मां बोलीं- जनता के बीच जाना और जनता के मन तक पहुंचना दो अलग-अलग यात्राएं हैं। इसलिए अगले चुनाव से पहले जन-मन तक जाने की यात्रा जरूरी है।

अगली बारी अमित शाह की आई। उनके हाथ में चुनावी नक्शे और मन में रणनीतियों का पूरा संसार नजर आया। उल्लू बुदबुदाया- इनको वरदान भी शायद सीटों के हिसाब से चाहिए। जहां बहुमत कम हो, वहां थोड़ा अतिरिक्त आशीर्वाद और जहां मुकाबला कड़ा हो, वहां विशेष कृपा! राजनीति में इनकी गणना इतनी तेज है कि मेरी रात की दृष्टि भी इनके सामने धुंधली पड़ जाती है। शाह हाथ जोड़कर बोले- हे मां, देश में समृद्धि बनी रहे, उद्योग बढ़ें और जिस राज्य में हमारी सरकार नहीं है, वहां भी बन जाए। मां कुछ कहतीं इसे पहले ही योगी जी बोले- मां, मेरी विनती बस चार शब्द की है। इसे पूरा कर दीजिए-योगी सरकार, तीसरी बार!

अरविंद केजरीवाल की बारी आई तो उल्लू को शिक्षा, स्वास्थ्य और मुफ्त सुविधाओं की बहस याद आ गई। उसने सोचा कि जनता को राहत मिले, इससे अच्छी बात और क्या होगी! मगर राहत की घोषणा और उसका हिसाब, दोनों साथ चलें तो खजाने को भी चैन मिले। इस बीच केजरीवाल बोले- माता, ऐसी कृपा करो कि हमारे हर सवाल का जवाब भी मिले और उस जवाब पर फिर से सवाल उठाने के लिए हमें एक प्रेस कॉन्फ्रेंस का समय मिल जाए! फिर भगवंत मान की ओर इशारा कर कहा, अभी तो बस इन्हें विजयी भव का आशीर्वाद दे दीजिए। उल्लू ने सोचा, ये मां के दरबार में दीप जलाने आए हैं या अपनी-अपनी राजनीतिक दुकान की बत्ती ठीक कराने?

ममता बनर्जी के सामने उल्लू ने अपनी गर्दन कुछ तिरछी की। बंगाल की राजनीति में जोश और टकराव की चर्चा उसे खूब सुनाई दी थी। ममता बोलीं- हे मां, मुझे इतना साहस दो कि हर चुनौती का सामना कर सकूं। उल्लू धीरे से बुदबुदाया- साहस तो तुम्हारे पास है। पर कभी-कभी सामने वाले की बात सुनने का धैर्य भी रख लिया करो। उल्लू की बात ममता के तेज कानों में जा पहुंची और इसे विपक्ष की साजिश बोलकर और आगे बढ़ गईं। पीछे खड़े अखिलेश यादव ने तुरंत कहा- मां, गठबंधन में प्रेम बना रहे, सीटों का बंटवारा सहज हो और चुनाव आते-आते कोई पुराना मित्र नया रास्ता न पकड़ ले। उल्लू से रहा नहीं गया और बोल दिया- गठबंधन में एकता का वरदान मांगने से पहले अपनी ही पार्टी के दबंगों के मतभेदों को शांत कराओ। तभी सियासत की विरासत में मिली साइकिल चल पाएगी, वरना पैडल भी खुद मारने पड़ेंगे।

मां लक्ष्मी और उनके वाहन ने सबकी ओर मुस्कुराकर देखा, मानो कह रहे हों कि धन मांगना आसान है, जनविश्वास कमाना कठिन। दीप जलाने से पहले अपने कर्मों का अंधेरा भी देखना चाहिए। तुम कृपा मांगते हो, लेकिन जनता के विश्वास का हिसाब कौन देगा? दीपावली पर दीया जलाना आसान है, अपने कामकाज में पारदर्शिता का दीया पहले जलाना होगा। नेताओं ने दूरदृष्टि से इसे सुना तो सबके चेहरों पर अलग-अलग भाव उभरे। किसी को संदेश में दर्शन दिखा। किसी को पक्ष-विपक्ष तंज लगा। अंत में एक नेता ने धीरे से पूछा- मां, अगले चुनाव में क्या होगा? मां लक्ष्मी ने अपना कमल उठाया और कहा- यह मुझसे मत पूछो। जनता के दरबार में जाओ। वहां न आरती से और न भाषण से काम चलेगा। वहां अपने कार्यों का हिसाब देना होगा। यह सुनते ही दरबार खाली हो गया।

कंक्रीट के कारोबार में कल्पनाओं के शिल्पी रमेश जोशी



तकनीकी दक्षता, कारोबारी दूरदृष्टि और रचनात्मक सोच से आरएमसी उद्योग में बनाई विशिष्ट पहचान

पांच वर्षों में कारोबार 5.8 गुना

जोशी के प्रोफेशनल जीवनवृत्त के अनुसार, दक्षिण और पश्चिम भारत के संबंधित अल्ट्राटेक आरएमसी कारोबार का टर्नओवर पांच वर्षों में लगभग 5.8 गुना बढ़ा और इस अवधि में करीब 42 प्रतिशत चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर दर्ज की गई। कारोबार का विस्तार चुनौतीपूर्ण है, लेकिन लागत और लाभप्रदता के बीच संतुलन बनाए रखना प्रबंधन की महत्वपूर्ण कसौटी है।

निर्माण की दुनिया में कंक्रीट केवल इमारतों के ढांचे को मजबूती नहीं देता, बल्कि विकास की कल्पनाओं को आकार भी देता है। इस कारोबार में कुछ लोग बाजार के साथ चलते हैं, जबकि कुछ अपनी दूरदृष्टि, तकनीकी समझ और नवाचार से उसके विस्तार में योगदान देते हैं। रमेश जोशी का तीन दशक से अधिक का पेशेवर सफर इसी दूसरी श्रेणी की प्रेरक कहानी है। सिविल इंजीनियरिंग की शिक्षा, विपणन की दक्षता, कारोबारी रणनीति और कविता की रचनात्मकता का मेल उनके व्यक्तित्व को विशिष्ट बनाता है।

श्री सीमेंट में नई जिम्मेदारी

वर्तमान में जोशी श्री सीमेंट लिमिटेड के रेडी मिक्स कंक्रीट यानी आरएमसी कारोबार का नेतृत्व कर रहे हैं। यह भूमिका उनके लंबे औद्योगिक अनुभव को नए कारोबारी मंच पर आगे बढ़ाने का अवसर है।

अल्ट्राटेक में तकनीकी अधिकारी से वरिष्ठ नेतृत्व तक

अल्ट्राटेक सीमेंट के साथ उनका सफर अप्रैल 1989 में तकनीकी अधिकारी के रूप में शुरू हुआ। शुरुआती दौर में उन्होंने तकनीकी उत्पादों और बिरला व्हाइट के अनुप्रयोग को बढ़ावा देने का अनुभव प्राप्त किया। इसके बाद बिक्री, विपणन, क्षेत्रीय कारोबार, व्यवसाय विकास, परियोजनाओं तथा संचालन एवं रखरखाव से जुड़ी जिम्मेदारियां निभाईं। लगभग तीन दशक के कार्यकाल में वे वरिष्ठ नेतृत्व की भूमिकाओं तक पहुंचे और जुलाई 2022 से जुलाई 2023 तक संयुक्त अध्यक्ष के पद पर रहे। उत्तर भारत, गुजरात से दक्षिण और पश्चिम भारत तक के अनुभव ने उन्हें बाजार की विविध परिस्थितियों, ग्राहकों की जरूरतों और कारोबार संचालन की चुनौतियों को समझने का अवसर दिया।

आरएमसी कारोबार के विस्तार में योगदान

जोशी की विशेष पहचान रेडी मिक्स कंक्रीट कारोबार के विकास में योगदान से बनी। आरएमसी में कंक्रीट नियंत्रित प्लांट में तैयार कर मिक्सर वाहनों से निर्माण स्थल तक पहुंचाया जाता है। इस व्यवस्था में गुणवत्ता, समयबद्धता, परिवहन और लागत का सटीक तालमेल आवश्यक होता है। उनके जीवनवृत्त में हैदराबाद में शुरुआती आरएमसी प्लांट स्थापित करने और दक्षिण भारत में कारोबार के विस्तार में उनकी भूमिका का उल्लेख है। अलग-अलग कार्यकालों से संबंधित विवरणों के अनुसार, उन्होंने करीब 500 प्लांटों की स्थापना में योगदान दिया। यह आंकड़ा उनके अनुभव के व्यापक दायरे को दर्शाता है।

लागत दक्षता और पूंजी का बेहतर उपयोग

जोशी की कार्यशैली में कारोबार विस्तार के साथ लागत और पूंजी की उत्पादकता पर भी जोर रहा। उनके पेशेवर परिचय में मंदी के बाद पूंजीगत व्यय को अधिक कुशल बनाने और हल्के परिसंपत्ति-मॉडल पर काम करने का उल्लेख है। इसके साथ वित्त वर्ष 2015-16 से 2017-18 के बीच लाभ दोगुना और निवेशित पूंजी पर प्रतिफल तीन गुना होने का दावा दर्ज है। औद्योगिक प्रबंधन में सफलता का अर्थ केवल अधिक प्लांट लगाना नहीं, बल्कि उपलब्ध संसाधनों से बेहतर परिणाम हासिल करना भी है।

पर्यावरण और सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता

आरएमसी कारोबार में पानी का उपयोग, कंक्रीट अवशेषों का प्रबंधन और धुलाई से उत्पन्न अपशिष्ट महत्वपूर्ण पर्यावरणीय चुनौतियां हैं। जोशी के जीवनवृत्त में शून्य-डिस्चार्ज प्लांटों, पर्यावरण प्रबंधन और हरित प्रमाणन से जुड़े प्रयासों का उल्लेख है। अल्ट्राटेक आरएमसी को वर्ष 2018 में गोल्डन पीकॉक पर्यावरण प्रबंधन पुरस्कार और वर्ष 2019 में ग्रीनप्रो प्रमाणन सहित अन्य मान्यताएं मिलने का विवरण भी इसमें शामिल है। इन संस्थागत उपलब्धियों में प्रबंधन और तकनीकी टीमों की सामूहिक भूमिका महत्वपूर्ण होती है। सुरक्षा के क्षेत्र में उनके प्रोफाइल में लॉस्ट टाइम इंजरी फ्रीक्वेंसी रेट को 4.12 से घटाकर 0.12 करने का आंकड़ा दर्ज है। संबंधित अवधि और गणना-पद्धति की पुष्टि के बाद यह कार्यस्थल सुरक्षा में सुधार का प्रभावशाली उदाहरण बन सकता है। औद्योगिक नेतृत्व की असली चुनौती उत्पादन और लाभ के साथ कर्मचारियों की सुरक्षा तथा पर्यावरणीय मानकों को प्राथमिकता देना भी है।

उद्योग के मंच पर नेतृत्व और सम्मान

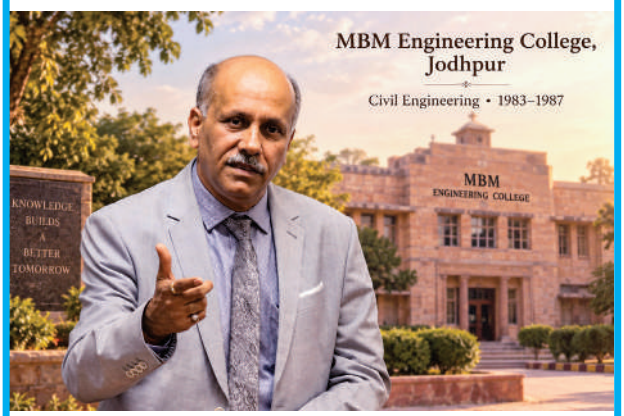
जोशी उद्योग-संगठन और गुणवत्ता प्रबंधन के क्षेत्र में भी सक्रिय रहे। वे 2016 से 2023 तक रेडी मिक्स्ड कंक्रीट मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष रहे। उन्होंने बिट्स पिलानी, भारतीय मानक ब्यूरो (BIS) और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर आरएमसी उद्योग से जुड़े विषयों पर व्याख्यान देकर अपनी विशेषज्ञता साझा की। वे आदित्य बिडला ग्रुप के डब्लूसीएम अवॉर्ड्स के लीड असेसर और सीआईआई-एक्जिम अवॉर्ड के असेसर भी रहे। सीआईआई के ईएफक्यूएम मॉडल में प्रमाणन तथा सीआईआई-एक्जिम पुरस्कारों के मूल्यांकन से जुड़ाव उनके गुणवत्ता प्रबंधन अनुभव को दर्शाता है। वर्ष 2006 मेंआदित्य बिरला समूह का इंडीजिवल चैयरमैन अवार्ड का सम्मान , वैल्यू रोल माडल, अनडीफिटेड,एवं डब्लूसीएम जैसे कई महत्वपूर्ण अवाड्र्स में शामिल होना उनके करियर की उल्लेखनीय उपलब्धी है। रामकृष्ण बजाज राष्ट्रीय गुणवत्ता पुरस्कार, बेस्ट मैन्युफैक्चरिंग प्रैक्टिस अवॉर्ड, इकोनॉमिक टाइम्स स्पेशल प्रोडक्ट अवॉर्ड और लगातार तीन वर्षों तक एसएमई श्रेणी में सेफ्टी गोल्ड अवॉर्ड भी उनके पेशेवर परिचय में दर्ज हैं। एनसीसी से बेस्ट क्वालिटी एंड सर्विस अवॉर्ड भी मिला। भवन से पीजीडीएमएस तथा आईएसबी, हैदराबाद से 'शीर्ष प्रबंधन हेतु नेतृत्व कौशल' विषय पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पूर्ण किया। जोशी ने भारत सरकार के कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय के अधीन भारतीय कॉर्पोरेट कार्य संस्थान (IICA) से स्वतंत्र निदेशक बनने की योग्यता प्राप्त की तथा इंस्टीट्यूट ऑफ डायरेक्टर्स से कॉर्पोरेट निदेशक का प्रमाणपत्र हासिल किया।

एक झलक उपलब्धियों की



रेडी-मिक्स कंक्रीट उद्योग में नवाचार, विस्तार और नेतृत्व की मिसाल

- **1998 में पहल:** अल्ट्राटेक के पहले व्यावसायिक आरएमसी प्लांट की स्थापना की पहल हैदराबाद में कर उद्योग के विस्तार में योगदान दिया।
- **शिष्ट प्लांट स्थापना:** एनसीसी के लिए हैदराबाद में अल्ट्राटेक का पहला ग्राहक-स्थल आधारित समर्पित आरएमसी प्लांट स्थापित किया।
- **सीमेंट विनिर्माण प्लांट:** सीमेंट विनिर्माण प्लांट के भीतर कैप्टिव खपत के लिए पहला समर्पित आरएमसी प्लांट स्थापित करने में भी योगदान दिया।
- **शिष्ट परियोजनाएं:** मेट्रो रेल, बंदरगाह, पुल, राजमार्ग तथा आवासीय-वाणिज्यिक परियोजनाओं के लिए समर्पित प्लांट स्थापित किए।
- **श्री सीमेंट में विस्तार:** आरएमसी कारोबार की शुरुआत का नेतृत्व करते हुए लगभग ढाई वर्ष में सबसे तेज विश्वस्तरीय 36 प्लांट स्थापित किए।
- **हरित ऊर्जा:** श्री सीमेंट मे जयपुर में देश का पहला सौर ऊर्जा संचालित आरएमसी प्लांट स्थापित करने की पहल की।
- **अंतरराष्ट्रीय अनुभव:** अमेरिका, यूरोप, चीन, सिंगापुर, नॉर्वे और मध्य-पूर्व सहित विभिन्न क्षेत्रों में पेशेवर अनुभव प्राप्त किया।
- **500 प्लांट:** पेशेवर सफर में करीब 500 आरएमसी प्लांटों की स्थापना में योगदान।



शिक्षा और कौशल विकास

एमबीएम इंजीनियरिंग कॉलेज, जोधपुर से पूर्व छात्र के रूप में आत्मीय जुड़ाव बनाए रखते हुए प्रति वर्ष तीन छात्राओं को शिक्षा के लिए स्कॉलरशिप प्रदान कर रहे हैं। युवा इंजीनियरों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों और मैनुअल विकास में नेतृत्व देकर नई पीढ़ी के कौशल निर्माण को भी बढ़ावा दे रहे हैं।

प्रबंधक के भीतर कवि

जोशी के व्यक्तित्व का एक अलग पहलू कविता है। विद्यार्थी जीवन में वे वाद-विवाद, नाटक और छात्र नेतृत्व की गतिविधियों में सक्रिय रहे। उनके परिचय के अनुसार, सात अखिल भारतीय युवा महोत्सवों में भागीदारी, आकाशवाणी से छह बार कविताओं का प्रसारण और अजमेर में राष्ट्रीय कविता प्रतियोगिता में पुरस्कार उनकी रचनात्मक यात्रा के हिस्से हैं।

तकनीकी प्रबंधन और कविता पहली नजर में दो अलग संसार लगते हैं। एक में आंकड़े, समय-सीमा और लागत प्रमुख होते हैं, जबकि दूसरे में संवेदना, कल्पना और अभिव्यक्ति। लेकिन नए विचारों को जन्म देने और समस्याओं को अलग दृष्टि से देखने की क्षमता दोनों में महत्वपूर्ण है। यही रचनात्मक पक्ष उनके पेशेवर व्यक्तित्व को अलग आयाम देता है।

आंकड़ों से आगे नवाचार की कहानी

रमेश जोशी की यात्रा तकनीकी दक्षता, कारोबारी दूरदृष्टि और नवाचार का संगम है। दुनिया भर के आरएमसी प्लांटों का अध्ययन कर उन्होंने अपने अनुभव को व्यावहारिक नवाचार में बदला। हैदराबाद में पहला आरएमसी प्लांट स्थापित करने की उनकी पहल के बाद शहर में आज 200 से अधिक सक्रिय प्लांटों का होना इस कारोबार के विस्तार को दर्शाता है। उनकी कहानी बताती है कि मजबूत निर्माण के लिए बेहतर सामग्री के साथ मजबूत विचार और भविष्यदर्शी दृष्टि भी जरूरी है। कोरोना काल (2020-23)की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में 200 प्लांट स्थापित करने का कीर्तिमान रचने वाले रमेश जोशी की सफलता की कहानी में अभी कई नए अध्याय जुड़ने बाकी हैं।

युवा नेतृत्व एवं व्यावसायिक संगठनों में सक्रिय भूमिका

रमेश जोशी ने अपने विद्यार्थी जीवन में ही नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया। वे दो वर्ष तक जोधपुर विश्वविद्यालय युवा मंच के अध्यक्ष रहे। वे सिविल इंजीनियर्स एसोसिएशन, एमबीएम इंजीनियरिंग कॉलेज के सचिव के रूप में सक्रिय रहे। विद्यार्थी जीवन से विकसित नेतृत्व क्षमता और इंजीनियरिंग क्षेत्र से जुड़ाव उनके व्यक्तित्व के महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं।

विलायती मुहर से मिली मेट्रो की इज्जत

जयपुर मेट्रो को आए 11 साल से ज्यादा हो गए। करोड़ों देसी यात्री इसमें धक्के खाकर नहीं, बाकायदा टिकट लेकर सफर कर चुके हैं। मगर मेट्रो की असली इज्जत तब जागी, जब एक विलायती मेम ने सफाई देखकर तारीफ कर दी। बस, सोशल मीडिया ऐसा उछला, मानो जयपुर मेट्रो चांद पर पहुंच गई हो! सिर्फ 54 रुपये के टिकट पर दो यात्रियों का सफर हुआ, लेकिन वाहवाही का भाव सातवें आसमान पर पहुंच गया। देसी यात्री रोज सफर करें, सफाई देखें, व्यवस्था पर राय दें। उनकी बात में कौन-सा विदेशी करंट है! विलायती मेम ने रेटिंग क्या दी, मेट्रो को अंतरराष्ट्रीय प्रमाण-पत्र मिल गया। अपना भी गजब का आत्मविश्वास है! जब तक विदेशी हमारी पीठ न थपथपाए, हमें अपनी पीठ सीधी करने में भी संकोच होता है। अपने शहर की तारीफ खुद करें तो आत्ममुग्धता, विदेशी कर दे तो वैश्विक उपलब्धि! वैसे मेट्रो साफ है, अच्छी बात है। मगर सफाई और व्यवस्था का इम्तिहान एक वायरल वीडियो नहीं, रोज सफर करने वाले यात्रियों का अनुभव है। देसी जनता टिकट काटे, सरकारें प्रचार करें और तारीफ की मुहर विलायती मेम लगाए। वाह रे आत्मनिर्भर भारत, आत्मसम्मान अभी आयात में है!

संस्कारों का विदेशी आयात!

पाली के परशुराम महादेव मंदिर में विदेशी पर्यटक धोती-कुर्ता पहनकर, माथे पर त्रिपुंड लगाकर 'हर-हर महादेव' कर रहे हैं। विदेशी हमारी संस्कृति अपनाने पहाड़ों की सीढ़ियां उतर रहे हैं और हम हैं कि अपनी परंपराओं को पिछड़ेपन की गठरी समझकर उतार फेंकने में जुटे हैं! कमाल है! विदेशी मंदिर में मर्यादा सीख रहे हैं और हम मर्यादा को अपनी आजादी में बाधा मान बैठे हैं। वे शिवभक्ति में रम रहे हैं, हम सोशल मीडिया पर भक्ति का स्टेटस लगाकर कर्तव्य पूरा समझ लेते हैं। अब तो पर्यटन विभाग को विदेशी श्रद्धालुओं के साथ एक प्रमाण-पत्र भी देना चाहिए कि आपने भारतीय संस्कृति को अपनाकर देशवासियों को संस्कारों का महत्त्व समझाया। लगता है, अब संस्कृति स्वदेशी है, लेकिन संस्कारों की मांग विदेशी बाजार से पूरी होगी!



किसान की दीपावली में इस बार अंधेरा!

मानसून की बेरुखी ने किसानों की दीपावली का उजाला छीन लिया। जवाई बांध में बीस प्रतिशत से भी कम पानी बचा है, खेत सूखे हैं और किसानों की आंखों में भविष्य की चिंता। जिन हाथों को फसल काटकर घर में खुशहाली लानी थी, वे अब अगली बारिश की बाट जोह रहे हैं। दीपावली पर बाजारों में रौनक होगी, मिठाइयों की खरीदारी होगी, घर जगमगाएंगे और आतिशबाजी आसमान रोशन करेगी। मगर किसान के घर इस बार त्योहार भी हिसाब-किताब लेकर आएगा। बच्चों की फीस, घर का खर्च और अगली फसल की चिंता के बीच मिठाई खरीदना भी सवाल बन गया है। किसान तेजाराम और पेमाराम जैसे परिवारों के लिए दीपावली अब उत्सव कम, मजबूरी ज्यादा है। विडंबना देखिए, जिस अन्नदाता के पसीने से दूसरों के घरों में समृद्धि के दीप जलते हैं, उसी के घर उम्मीद का दीया बुझने की कगार पर है। बांध सूखे तो पानी की चिंता बढ़ी, लेकिन किसान की आंखों में सूखे आंसुओं का हिसाब कौन रखेगा? इस दीपावली शहर रोशनी से नहाएगा, मगर पाली के किसान का घर पूछेगा जब खेत ही उजड़ गया, तो त्योहार में खुशियां कहां से बोएं?

इलाज का बिल, हिसाब बेहिसाब!

निजी अस्पतालों के चमचमाते बोर्ड पर सेहत की गारंटी लिखी होती है, मगर भीतर के हिसाब-किताब की सेहत कैसी है, यह आयकर विभाग की दस्तक ही बताती है। झुंझुनूं के एक निजी अस्पताल में कथित 20 करोड़ रुपये की टैक्स चोरी की आशंका ने सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं की बिलिंग पर सवालिया निशान लगा दिया है। मरीज अस्पताल में बीमारी लेकर पहुंचता है और उम्मीद करता है कि सरकारी योजना उसका आर्थिक दर्द कम करेगी। मगर बिलों का मर्ज ही गंभीर हो, तो इलाज किसका होगा मरीज का या खातों का? पांच गाड़ियों में पहुंची अधिकारियों की टीम तीन दिन से कागजों और कम्प्यूटरों की नब्ज टटोल रही है। अब देखना यह है कि रिकॉर्ड से कितनी सच्चाई बाहर आती है। विडंबना देखिए, मरीज को छुट्टी मिलते ही अस्पताल से विदा होना पड़ता है, लेकिन हिसाब-किताब की जांच को छुट्टी नहीं मिल रही। आखिर स्वास्थ्य सेवाओं में पारदर्शिता भी जरूरी है, क्योंकि बीमारी का इलाज होना चाहिए, बिलों का खेल नहीं!

बाघ बढ़े जंगल में, इंसान घटाए जंगल!

सरिस्का में बाघिन एसटी-26 दो नन्हे शावकों के साथ कैमरे में क्या कैद हुई, खुशियों का कुनबा बढ़ गया! बाघों की कुल संख्या 58 पहुंचने की खबर ने वन्यजीव प्रेमियों के चेहरे खिला दिए। मगर सवाल यह है कि बाघों की आबादी बढ़ रही है, तो उनके रहने के लिए जंगल कितना बढ़ रहा है? बाघिन ने न उद्घाटन समारोह किया, न विकास का श्रेय लिया और न ही शावकों के स्वागत में होर्डिंग लगवाए। चुपचाप अपना परिवार बढ़ा लिया। इधर इंसान है कि जंगल काटकर कंक्रीट के जंगल खड़े करता है और फिर वन्यजीव संरक्षण के नारे लगाता है। हमारी तरक्की का गणित भी गजब है। पहले पेड़ काटो, जमीन पर कब्जे बढ़ाओ, सड़कों का जाल फैलाओ और फिर बाघों के आबादी में आने पर चिंता जताओ। बाघ जंगल में दिख जाए तो रोमांच, सड़क पर आ जाए तो सेल्फी और बस्ती में घुस जाए तो हंगामा! वन विभाग के लिए भी अब असली परीक्षा है। कैमरा ट्रैप में शावकों की तस्वीर कैद होना अच्छी खबर है, लेकिन उनकी सुरक्षा तस्वीरों से नहीं, सुरक्षित आवास और शिकार की उपलब्धता से होगी। बाघों की गिनती बढ़ाना उपलब्धि है, लेकिन उनका घर बचाना असली जिम्मेदारी। वरना इंसान जंगल निगलता रहेगा और बाघ कैमरों में ही अच्छे लगेंगे!

▪ बलवंत राज मेहता, व्यंग्यकार

मारवाड़ी मेरे दिल की जुबान : के.सी. बोकाड़िया

जयपुर प्रवास के दौरान फिल्म निर्माता के.सी. बोकाड़िया ने 'राजस्थान टुडे' के लिए वरिष्ठ पत्रकार बलवंत राज मेहता से बातचीत की। पढ़ें प्रमुख अंश-

फिल्मों की दुनिया बदल गई है। कहानी कहने का तरीका बदला है, दर्शकों की पसंद बदली है और सिनेमा के माध्यम भी बदल गए हैं। लेकिन कुछ फिल्मकार ऐसे हैं जिनके लिए सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज, रिश्तों और जीवन-मूल्यों को अभिव्यक्त करने का माध्यम भी रहा है। फिल्म निर्माता-निर्देशक के.सी. बोकाड़िया उन्हीं नामों में हैं। बोकाड़िया ने वर्तमान फिल्मों, पारिवारिक मूल्यों, राजस्थान, मारवाड़ी बोली, जैन संस्कारों और अपने फिल्मी सफर से जुड़े कई पहलुओं पर खुलकर बात की।

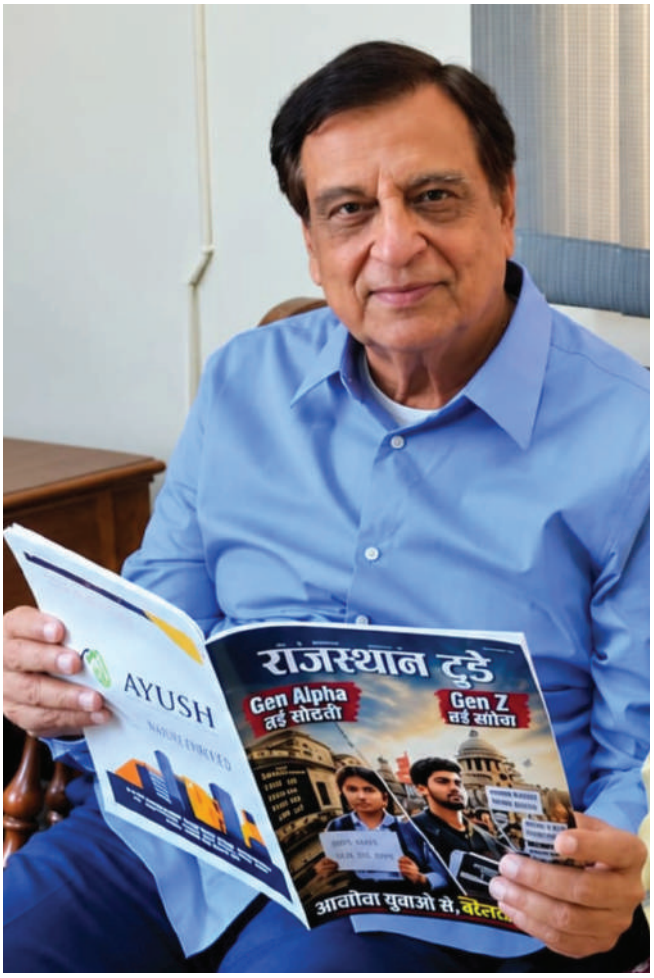
वर्तमान फिल्मों पर चर्चा चली तो उन्होंने अपने अंदाज में कहा, 'आजकल की फिल्मों में वो बात नहीं है, जो मेरी सोच है। समझ के बाहर है। दाल-रोटी के स्वाद का शौकीन दूसरे स्वाद को कैसे पसंद करेगा।' उनके इस कथन में केवल फिल्मों को लेकर असहमति नहीं, बल्कि अपनी पसंद, अपनी सोच और अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहने की भावना भी दिखाई देती है।

निर्माता और निर्देशक के रूप में उन्होंने हिंदी सिनेमा की कई चर्चित फिल्मों से जुड़कर अपनी अलग पहचान बनाई। इस दौरान उन्होंने अनेक बड़े कलाकारों के साथ काम किया और व्यावसायिक सिनेमा से लेकर पारिवारिक तथा सामाजिक सरोकारों वाले विषयों तक अपनी रचनात्मक उपस्थिति दर्ज कराई। लेकिन इस लंबे फिल्मी सफर के बीच उनके व्यक्तित्व में राजस्थान की मिट्टी से जुड़ाव आज भी दिखाई देता है। वे मूलतः मेड़ता (राजस्थान) से हैं। मारवाड़ी का जिक्र आया तो बोकाड़िया का अंदाज आत्मीय हो गया। उन्होंने कहा, 'मारवाड़ी मेरे दिल की जुबान है। घर में आज भी मारवाड़ी में ही संवाद होता है। कोई मुझसे मारवाड़ी में बात करता है तो मुझे बहुत खुशी होती है और मैं भी उससे मारवाड़ी में ही बतियाता हूं।' बोकाड़िया के लिए मारवाड़ी अपने घर, अपने लोगों और अपनी सांस्कृतिक स्मृतियों से जुड़ने का माध्यम है। मारवाड़ी में किसी का संवाद करना महज बातचीत नहीं, बल्कि अपनत्व का अहसास है। परिवार और संस्कारों को उन्होंने अपने दिल के करीब बताया।

के.सी. बोकाड़िया द्वारा लिखित और निर्मित धारावाहिक 'संस्कार' दूरदर्शन नेशनल पर प्रसारित होने वाला लोकप्रिय पारिवारिक धारावाहिक रहा है। इसकी केंद्रीय भावना परिवार, रिश्तों और जीवन-मूल्यों के इर्द-गिर्द रही। संयुक्त परिवार की एकता, आपसी प्रेम और मानवीय संवेदनाओं को कथा के माध्यम से सामने रखने का प्रयास इसमें किया गया। 'संस्कार' की मूल भावना यह है कि आधुनिक जीवन की आपाधापी के बीच परिवार और नैतिक मूल्य अपनी प्रासंगिकता न खोएं।

बोकाड़िया के लिए यह विषय केवल पटकथा का विषय नहीं लगता। बातचीत में उनके शब्दों से महसूस होता है कि परिवार और संस्कार उनके निजी जीवन-दर्शन से भी जुड़े हुए हैं। राजस्थान की चर्चा होते ही बोकाड़िया के भीतर का राजस्थानी मन सामने आता है। उन्होंने राजस्थानी विषयों और संस्कृति के साथ-साथ नारी सशक्तिकरण जैसे विषयों में भी अपनी रुचि व्यक्त की। राजस्थान की लोकसंस्कृति, भाषा, जीवनशैली और सामाजिक परिवेश में ऐसी अनेक कहानियां मौजूद हैं जिन्हें बड़े पर्दे तक पहुंचाया जा सकता है। उनका मानना है कि सिनेमा में मनोरंजन के साथ सामाजिक सरोकारों के लिए भी जगह होनी चाहिए। विशेषकर महिलाओं के संघर्ष, आत्मसम्मान और अपनी पहचान बनाने की कहानियां समाज के सामने सकारात्मक संवाद खड़ा कर सकती हैं। राजस्थान की लोककथाओं और सामाजिक जीवन में भी ऐसे अनेक चरित्र और प्रसंग हैं जिनमें सिनेमा के लिए पर्याप्त कथात्मक संभावनाएं हैं।

बातचीत का एक आत्मीय पहलू तब सामने आया जब जैन संस्कारों का जिक्र हुआ। बोकाड़िया ने कहा कि जैन संस्कार उनके लिए आदर्श रहे हैं। जैन परंपरा में अहिंसा, संयम और अपरिग्रह जैसे मूल्यों को विशेष महत्व दिया जाता है। बोकाड़िया



के अपने शब्दों में इन संस्कारों का उनके जीवन और काम पर प्रभाव दिखाई देता है।

उन्होंने फिल्म शूटिंग के दौरान खान-पान को लेकर अपने अनुशासन का भी उल्लेख किया। उनके अनुसार उनके शूटिंग सेट पर मांसाहार पर सख्त पाबंदी रहती है, चाहे कलाकार कितना भी बड़ा क्यों न हो। उनके लिए यह व्यक्तिगत आस्था और जीवन-पद्धति से जुड़ा निर्णय है।

फिल्म उद्योग में जहां सितारों की लोकप्रियता और बाजार की मांग अक्सर निर्णयों को प्रभावित करती है, वहीं बोकाड़िया अपने व्यक्तिगत मूल्यों को लेकर स्पष्ट दिखाई देते हैं। लंबे फिल्मी सफर में उन्होंने अनेक बड़े कलाकारों के साथ काम किया, लेकिन बातचीत में स्टारडम से अधिक जोर कहानी, संस्कार और अपनी सोच पर दिखाई देता है। मायानगरी में दशकों बिताने के बाद भी अपनी मातृभूमि और अपनी बोली से उनका रिश्ता सहज बना हुआ है।

मेड़ता की मिट्टी से शुरू हुई यात्रा मुंबई की चकाचौंध तक पहुंची। बड़े पर्दे पर अनेक कहानियां बनीं, बड़े सितारों के साथ काम हुआ और फिल्मी दुनिया में लंबा सफर पूरा हुआ। लेकिन उन्होंने अपनी मिट्टी से जुड़ाव बनाए रखा। मायानगरी के फिल्मकार के भीतर आज भी मेड़ता की मिट्टी की खुशबू है, घर में मारवाड़ी की मिठास है।

शायद इसीलिए 'संस्कार' उनके लिए महज एक धारावाहिक का नाम नहीं, बल्कि उस सोच का विस्तार है जिसे वे जीवन में भी महत्वपूर्ण मानते हैं। समय बदल सकता है, जीवनशैली बदल सकती है, लेकिन अच्छे संस्कारों और अपनी जड़ों से जुड़ाव की जरूरत कभी खत्म नहीं होती।

समाजसेवा के सच्चे प्रतीक

ठाकुर सुजान सिंह जी आशिया

संघर्ष से सफलता तक का सफर- सेवा, संस्कार और समर्पण की प्रेरणादायी मिसाल

"जिनकी पहचान उनके पद से नहीं, बल्कि उनके परोपकार से होती है; जिनकी महानता उनके धन से नहीं, बल्कि जरूरतमंदों के प्रति उनके समर्पण से पहचानी जाती है—ऐसे ही व्यक्तित्व हैं ठाकुर सुजान सिंह जी आशिया।"

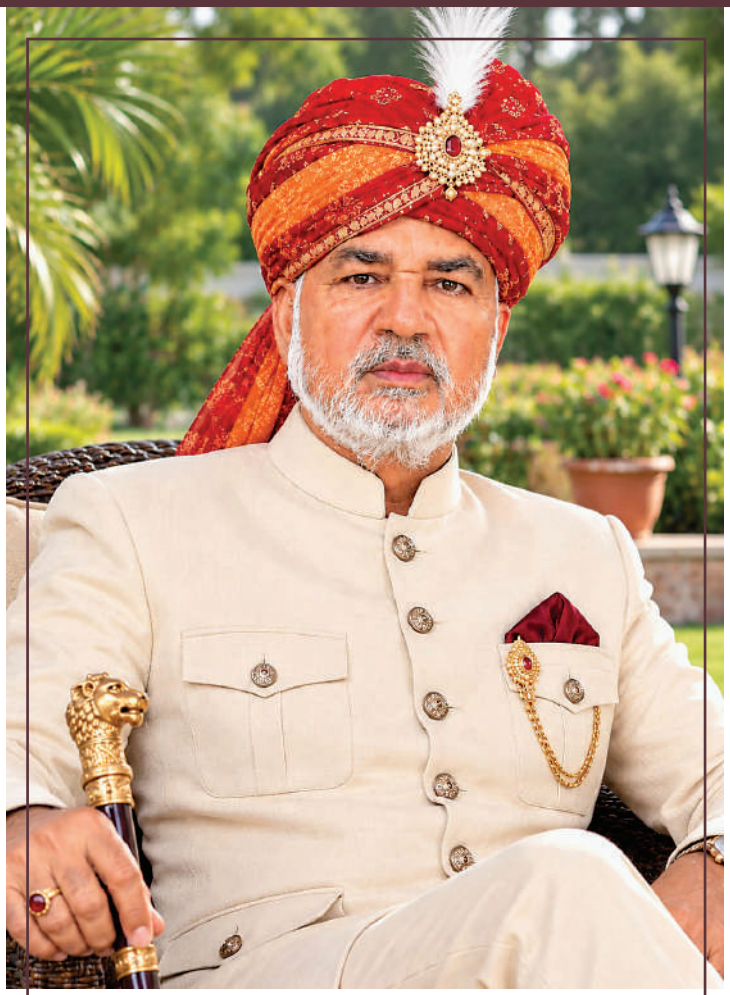
संघर्षमय जीवन से सफलता के शिखर तक

राजस्थान की वीरभूमि पाली जिले के ग्राम बिजलियावास से संबंध रखने वाले ठाकुर सुजान सिंह जी आशिया का जीवन संघर्ष, परिश्रम, आत्मसम्मान और सेवा भावना की प्रेरणादायी कहानी है।

आपके पिता रामसिंह जी आशिया ग्राम बिजलियावास में ठाकुर थे तथा गांव में समाजसेवा और जनहित के कार्यों के लिए अपनी विशिष्ट पहचान रखते थे। पिता से मिले संस्कारों ने सुजान सिंह जी के जीवन को सेवा, सद्भाव और सामाजिक जिम्मेदारी की दिशा प्रदान की।

अपने जीवन में अनेक उतार-चढ़ावों का सामना करते हुए सुजान सिंह जी कई वर्ष पूर्व पाली आए। यहां उन्होंने कठिन परिश्रम और ईमानदारी के साथ अपने जीवन की नई शुरुआत की। पाली की प्रसिद्ध उम्मेद मिल में कई वर्षों तक विभिन्न पदों पर नौकरी कर उन्होंने मेहनत, लगन और कर्मठता का परिचय दिया।

इसके पश्चात वे जोधपुर में रहे और अपना कामकाज किया। बाद में पाली लौटकर होटल व्यवसाय से जुड़े और अपनी मेहनत, दूरदर्शिता तथा व्यावहारिक अनुभव से एक नई पहचान स्थापित की।



होटल व्यवसाय में स्थापित की विशिष्ट पहचान

- ठाकुर सुजान सिंह जी आशिया ने पाली एवं ब्यावर क्षेत्र में होटल व्यवसाय को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पिछले लगभग 30 वर्षों से वे और उनका परिवार होटल व्यवसाय से जुड़े हुए हैं।
- उन्होंने विशेष रूप से देसी भोजन, पारंपरिक राजस्थानी व्यंजनों और ढाबे के असली स्वाद को नई पहचान दिलाने की दिशा में निरंतर मेहनत की।
- उनकी कार्यशैली में केवल कारोबार ही नहीं, बल्कि आत्मीयता, अतिथि सत्कार और आमजन से जुड़ाव भी प्रमुख रहा है।
- उनके बड़े पुत्र नरेंद्र सिंह जी आशिया उर्फ पप्सा तथा छोटे पुत्र अजीत सिंह जी ने भी पिता के साथ जुड़कर इस व्यवसाय को आगे बढ़ाया।
- बड़े पुत्र नरेंद्र सिंह जी के असमय निधन से परिवार को गहरा आघात पहुंचा, लेकिन परिवार ने साहस और धैर्य के साथ अपनी जिम्मेदारियों को निभाया। इसके बाद अजीत सिंह जी ने व्यवसाय को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- आज भी पाली क्षेत्र में सोजत हाइवे पर उनकी होटल अपने देसी स्वाद और विशिष्ट पहचान के लिए जानी जाती है।

समाजसेवा ही सबसे बड़ी पहचान

ठाकुर सुजान सिंह जी आशिया का व्यक्तित्व समाजसेवा के प्रति समर्पण का प्रतीक है। वे वर्षों से अपने सामर्थ्य के अनुसार जरूरतमंदों, गरीबों, असहायों और यात्रियों की सहायता करते आए हैं।

उनके सेवाभावी कार्यों की प्रमुख विशेषताएं—

- सड़क दुर्घटना में सहायताः हाईवे पर सड़क दुर्घटना में घायल लोगों को अपने वाहनों से अस्पताल पहुंचाने में मदद करना तथा जरूरत के समय पीड़ितों के साथ खड़े रहना।
- **जरूरतमंदों को निशुल्क भोजनः** गरीब, असहाय, जरूरतमंद यात्रियों को बिना किसी भेदभाव के भोजन उपलब्ध करवाना।
- **वस्त्र एवं आवश्यक सामग्री वितरणः** जरूरतमंदों को कपड़े और दैनिक जीवन में उपयोगी सामान उपलब्ध करवाने में सहयोग देना।
- **गोसेवाः** गायों की सेवा और उनके संरक्षण से जुड़े कार्यों में अपनी भागीदारी निभाना।
- **पक्षी सेवाः** पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता रखते हुए उनकी देखभाल और सेवा के कार्य करना।
- **जल समस्या के समाधान में सहयोगः** गांव में पानी की समस्याओं को दूर करने व जनहित के कार्यों में आगे रहना।
- **मानवता का संदेशः** जरूरत के समय लोगों की सहायता करना और समाज में परस्पर सहयोग, भाईचारे तथा सद्भाव को बढ़ावा देना।

हाईवे पर वर्षों तक होटल व्यवसाय करते हुए उन्होंने यात्रियों की परेशानियों को करीब से समझा। यही कारण है कि जरूरतमंद राहगीरों की मदद करना उनके जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया। पाली से लेकर राजस्थान के विभिन्न जिलों में उनके सेवाभावी कार्यों के कारण उनकी सामाजिक पहचान बनी है।

नरेंद्र सिंह जी आशिया



कोरोना महामारी में मानवता की मिसाल

कोरोना महामारी और लॉकडाउन का समय देशभर के लोगों के लिए कठिन दौर था। हजारों यात्री अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए परेशान थे। ऐसे समय में भोजन और आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता भी बड़ी चुनौती बन गई थी। इस कठिन परिस्थिति में ठाकुर सुजान सिंह जी आशिया और उनके पुत्र अजीत सिंह जी ने सेवा भावना का परिचय देते हुए हाईवे पर हजारों यात्रियों को निशुल्क भोजन करवाने में योगदान दिया। इसके साथ ही कच्ची बस्तियों में जरूरतमंद लोगों तक निशुल्क भोजन और आवश्यक वस्तुएं पहुंचाने में भी सहयोग किया। संकट के समय जरूरतमंद के काम आना ही सच्ची मानवता है—और यही भावना इस परिवार की समाजसेवा में दिखाई देती है।

धर्म, आस्था और धार्मिक स्थलों के विकास में योगदान

ठाकुर सुजान सिंह जी आशिया का परिवार धार्मिक आस्था, परंपराओं और सामाजिक सद्भाव को विशेष महत्व देता है। परिवार विभिन्न धार्मिक कार्यों तथा मंदिरों से जुड़े विकास कार्यों में अपनी सामर्थ्य के अनुसार सहयोग करता रहा है।

प्रमुख धार्मिक स्थलों में—

- श्री करणी माता मंदिर, भालेलाव रोड, पाली।
- चादर वाले बालाजी मंदिर, पाली।
- ग्राम मंदिर, बिजलियावास।
- क्षेत्र के अन्य धार्मिक एवं सामाजिक आयोजन।

परिवार धार्मिक स्थलों के विकास, आवश्यक व्यवस्थाओं और जनहित के कार्यों में सहयोग के लिए आगे रहता है। किसी भी धार्मिक आयोजन में अपनी भूमिका निभाना व समाज को धर्म, सद्भाव, संस्कारों से जोड़ना इनके पारिवारिक मूल्यों में हैं।

अनाथालय के बच्चों के प्रति विशेष सहयोग... ठाकुर सुजान सिंह जी आशिया के परिवार का पाली स्थित अनाथालय के बच्चों के प्रति विशेष सहयोग रहा है। परिवार विभिन्न अवसरों पर बच्चों को निशुल्क कपड़े, भोजन तथा आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए आगे रहता है। अनाथालय में रहने वाले बच्चों की जरूरतों को समझना, उनके लिए उपयोगी वस्तुओं की व्यवस्था करना और उनके जीवन में अपनत्व का भाव बनाए रखना सामाजिक संवेदनशीलता का महत्वपूर्ण उदाहरण है। बच्चों के चेहरे पर मुस्कान लाना, जरूरतमंदों को सहारा देना और असहाय लोगों के जीवन में उम्मीद जगाना—यही परोपकार की सच्ची भावना है।

शिक्षा और उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ती नई पीढ़ी

ठाकुर सुजान सिंह जी आशिया का परिवार जहां एक ओर समाजसेवा और व्यवसाय के क्षेत्र में अपनी पहचान रखता है, वहीं दूसरी ओर परिवार की नई पीढ़ी शिक्षा, परिश्रम और उज्ज्वल भविष्य के सपनों के साथ आगे बढ़ रही है।

अजीत सिंह जी आशिया



पीयूष सिंह आशिया प्रशासनिक सेवा का सपना



- स्वर्गीय नरेंद्र सिंह जी आशिया के पुत्र पीयूष सिंह आशिया अभी राजस्थान प्रशासनिक सेवा (RAS) की तैयारी कर रहे हैं।
- उनका लक्ष्य प्रशासनिक सेवा में उच्च पद प्राप्त कर परिवार का नाम रोशन करना और अपनी मेहनत के बल पर समाज के लिए उपयोगी कार्य करना है।

सौरभ सिंह आशिया डॉक्टर बन सेवा का संकल्प



- अजीत सिंह जी आशिया के पुत्र सौरभ सिंह आशिया वर्तमान में राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (NEET) की तैयारी कर रहे हैं।
- उनका सपना डॉक्टर बनकर चिकित्सा के क्षेत्र में अपना योगदान देना और जरूरतमंद लोगों की सेवा करना है।

टिंकल आशिया, शिक्षा के क्षेत्र में योगदान का लक्ष्य

- परिवार की पौत्री टिंकल आशिया बी.एड. (B.Ed.) की पढ़ाई कर शिक्षिका बनना चाहती हैं।
- उनका उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़कर बच्चों के भविष्य को संवारने तथा ज्ञान और संस्कारों के प्रसार में योगदान देना है।



परिवार, संस्कार और सामाजिक प्रतिष्ठा... वर्तमान में ठाकुर सुजान सिंह जी आशिया अपने परिवार के साथ पाली के राजेंद्र नगर में निवास करते हैं। उनका जीवन परिवार के प्रति जिम्मेदारी, कठिन परिश्रम, धार्मिक आस्था और समाज के प्रति संवेदनशीलता का परिचायक है।

सम्मान और प्रेरणा के पात्र... ठाकुर सुजान सिंह जी आशिया

एक ऐसा व्यक्तित्व, जिसने संघर्ष को अपनी ताकत बनाया।
एक ऐसा सेवाभावी इंसान, जिसने जरूरतमंदों की सहायता को अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया।
एक ऐसा परिवार, जिसने व्यवसाय के साथ धर्म, संस्कार, शिक्षा और समाजसेवा को भी महत्व दिया।
एक ऐसी विरासत, जिसे आने वाली पीढ़ी शिक्षा, परिश्रम और सेवा के माध्यम से आगे बढ़ाने का सपना देख रही है।

HAPPY

Diwali

FESTIVAL OF LIGHTS

मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी एवं आर. सीटू
की ओर से आप सभी को
दिवाली की हार्दिक शुभकामनाएं...

आईये इस मौके सब मिलकर साम्प्रदायिक सद्भाव को मजबूत करें।



कामरेड गोपीकिशन, कामरेड बृजकिशोर,
कामरेड नदीम खान, दयालराम गुर्जर,
दिलीपसिंह, वहीदुद्दीन, हबीबुर्रहमान

मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी यूनाइटेड (एम.सी.पी.आई.यू.) एवं राजस्थान ट्रेड यूनियन केंद्र (आर. सीटू) जोधपुर

चकाचौंध में गुम हो रहीं असली खुशियां

बाज़ारों की चकाचौंध, सोशल मीडिया और दिखावे की अंधी दौड़ में त्योहारों की असली सादगी, आत्मीयता व मानसिक शांति खो रही है। जानिए खुशियों की ख़रीदारी के बीच परंपरा बचाने की ज़रूरत।





मधुलिका सिंह ✍ वरिष्ठ पत्रकार

मानसून की विदाई के साथ ही हवा में एक हल्की सी सिहरन घुलती है और इसके साथ ही दस्तक देता है त्योहारों का वह अनवरत सिलसिला, जो हर भारतीय के दिल की धड़कन से जुड़ा है। झिलमिलाती रोशनी, मिट्टी के दीयों की सोंधी महक, अपनों का साथ और पकवानों की खुशबू—यही तो पहचान रही है हमारे उत्सवों की।

लेकिन, पिछले कुछ दशकों में इस खुशनुमा माहौल के समानांतर एक और बदलाव बहुत खामोशी से हमारे घरों में दाखिल हुआ है। त्योहारों के आने की आहट अब दिल में कम और स्मार्टफोन के नोटिफिकेशन, ई-कॉमर्स वेबसाइटों के 'मेगा सेल' के विज्ञापनों और बाजारों की अंधी चकाचौंध में ज्यादा सुनाई देती है। आज जब हम त्योहारों के मौसम में खुद को चारों तरफ से सामानों से घिरा पाते हैं, तो एक गंभीर और बुनियादी सवाल हमारे अंतर्मन को झकझोरता है— क्या हम सचमुच त्योहार मना रहे हैं, या सिर्फ खरीदारी कर रहे हैं? क्या खुशी खरीदने की इस अंतहीन होड़ में हम अपनी जेब, अपनी मानसिक शांति, अपनी सादगी और सबसे बढ़कर अपनी वास्तविक खुशियों को कहीं खोते तो नहीं जा रहे हैं?

शो आफ इवेंट में बदल रहे त्योहार

- आखिर ऐसा क्या हुआ कि जो त्योहार कभी मन की शुद्धि, प्रकृति के प्रति आभार और अपनों से मेल-मिलाप का जरिया थे, वे आज एक दिखावापूर्ण 'इवेंट' में तब्दील हो गए हैं? क्यों त्योहार आते ही नई गाड़ी, महंगे इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स, डिजाइनर कपड़े, आलीशान उपहार और दूसरों से बेहतर दिखने की एक अदृश्य, मगर बेहद क्रूर होड़ शुरू हो जाती है?
- इसका सीधा संबंध आधुनिक समाज की सबसे बड़ी बीमारी से है, जिसे हम उपभोक्तावाद कहते हैं। उपभोक्तावाद की मूल फिलासफी ही इस बात पर टिकी है कि 'आपके पास जो है, वह पर्याप्त नहीं है, और जब तक आप नया या अधिक नहीं खरीदेंगे, तब तक आप खुश या सफल नहीं कहलाएंगे।' जब यह विचारधारा हमारे पारंपरिक उत्सवों से हाथ मिला लेती है, तो जन्म लेता है एक भयावह सामाजिक दबाव ।
- आज के दौर में स्टेटस सिंबलह मारे अस्तित्व की पहचान बन गया है। हम क्या हैं, इससे ज्यादा महत्वपूर्ण यह हो गया है कि हमारे पास क्या-क्या है। इस सामाजिक दबाव का सबसे बड़ा शिकार देश का मध्यवर्ग हो रहा है। पड़ोस के घर में आई बड़ी स्क्रीन की टीवी, रिश्तेदारों द्वारा भेजे गए महंगे मेवों के हैम्पर्स या किसी परिचित की महंगी विदेश यात्रा की तस्वीरें—ये सब मिलकर आम इंसान के भीतर एक हीनभावना और असुरक्षा पैदा करते हैं। 'हम किसी से कम न दिखें' या 'समाज में हमारी नाक न कट जाए', इस झूठी प्रतिष्ठा को बचाए रखने के लिए लोग अपनी क्षमता से बाहर जाकर खर्च करते हैं। स्थिति यहाँ तक पहुँच चुकी है कि लोग त्योहार मनाने के लिए 'पर्सनल लोन' ले रहे हैं या अपने क्रेडिट कार्ड को उसकी आखिरी सीमा तक स्वाइप कर रहे हैं। हम कर्ज लेकर जो खुशियां घर ला रहे हैं, वे असल में खुशियां हैं ही नहीं, बल्कि आने वाले महीनों का मानसिक तनाव हैं।

विज्ञापन कंपनियां और सोशल मीडिया का अल्गोरिदम



हम अक्सर सोचते हैं कि बाजार से कोई सामान खरीदना हमारा अपना स्वतंत्र फैसला होता है। लेकिन क्या यह सच है? वास्तविकता यह है कि आज के डिजिटल युग में हमारी इच्छाएं अब हमारी अपनी नहीं रहीं, उनकी बाकायदा 'प्रोग्रामिंग' की जा रही है। कॉरपोरेट जगत, विज्ञापन कंपनियां और सोशल मीडिया के एल्गोरिदम मिलकर एक ऐसा मायाजाल बुनते हैं, जिसमें फंसा हुआ आम उपभोक्ता खुद को असहाय पाता है।

विज्ञापनों की दुनिया अब सिर्फ सामान के फीचर्स (गुण) नहीं बेचती, वे आपकी भावनाओं, आपके रिश्तों और आपकी आकांक्षाओं को बेचते हैं। एक विज्ञापन आपको दिखाता है कि अगर आप एक खास ब्रांड की महंगी हीरे की अंगूठी अपनी पत्नी को नहीं देते, तो आपका प्यार अधूरा है। दूसरा विज्ञापन यह संदेश देता है कि जब तक आप एक महंगे ब्रांड की सिल्क साड़ी पहनकर पूजा में नहीं बैठतीं, तब तक त्योहार की शुचिता अधूरी है। ये विज्ञापन हमारे भीतर एक कृत्रिम आवश्यकता पैदा करते हैं। वे हमें यह विश्वास दिलाने में सफल हो जाते हैं कि भौतिक वस्तुओं को खरीदे बिना खुशी का अहसास असंभव है।

इस आग में घी डालने का काम करता है सोशल मीडिया सोशल मीडिया ने हर व्यक्ति के हाथ में एक ऐसा मंच दे दिया है जहाँ हर कोई अपनी जिंदगी का केवल 'बेस्ट और सबसे चमकीला हिस्सा' ही प्रदर्शित कर रहा है। त्योहारों के दिनों में जब हम अपनी स्क्रीन स्क्रॉल करते हैं, तो हमें केवल परफेक्ट फैमली फोटोज, परफेक्टली डेकोरेटेड होम्स और डिजाइनर कपड़ों में मुस्कुराते हुए चेहरे दिखते हैं। इस 'डिजिटल चकाचौंध' का मनोवैज्ञानिक असर यह होता है कि इंसान अपनी वास्तविक, साधारण और सुंदर जिंदगी से भी असंतुष्ट होने लगता है। हमें लगता है कि बाकी पूरी दुनिया बेहद खुश और समृद्ध है, बस कमी हमारे ही जीवन में है। इस खालीपन को भरने के लिए हम तुरंत ऑनलाइन शॉपिंग ऐप्स का रुख करते हैं और उस सामान को भी आर्डर कर देते हैं जिसकी हमें कोई वास्तविक जरूरत नहीं थी।

क्या खो रहे हैं हम इस अंधी दौड़ में?

जब हम खुशी खरीदने की इस होड़ में शामिल होते हैं, तो हम केवल पैसा नहीं खोते। पैसा तो एक ऐसी चीज है जो आज गया है, तो कल दोबारा कमाया जा सकता है। लेकिन इस होड़ में हम कुछ ऐसा खो रहे हैं जिसकी भरपाई दुनिया की कोई भी दौलत नहीं कर सकती:

- **मानसिक शांति** : जब त्योहारों का उद्देश्य आनंद होना चाहिए, तब हम बजट के बिगड़ने, उपहारों की लिस्ट तैयार करने, दूसरों से बेहतर दिखने की प्लानिंग करने के चक्कर में भयंकर एंग्जायटी और तनाव के शिकार हो जाते हैं। उत्सव के दिन हम अंदर से शांत होने के बजाय थके हुए और चिड़चिड़े होते हैं।
- **रिश्तों की गर्माहट**: पहले त्योहारों का मतलब होता था— हफ्तों पहले से रिश्तेदारों के आने का सिलसिला, घर के आंगन में मिलकर पापड़-मठरी बनाना, देर रात तक गप्पें मारना और एक-दूसरे के सुख-दुख साझा करना। आज हमने इस शारीरिक और भावनात्मक उपस्थिति को 'डिजिटल फॉरवर्डेड मैसेज' और महंगे रेडीमेड 'गिफ्ट हैम्पर्स' से बदल दिया है। हम उपहार तो भेज रहे हैं, लेकिन उनमें से आत्मीयता गायब है।
- **हमारी जड़ें और परंपराएं**: कुम्हार के चाक पर बनी मिट्टी के दीयों की जगह जब चीन से आई सस्ती और चमकीली प्लास्टिक की झालरें ले लेती हैं, तो हम केवल एक दीया नहीं खोते, हम अपनी संस्कृति का एक हिस्सा और उस गरीब कारीगर की रोजी-रोटी भी खो देते हैं। सादगी, जो हमारे त्योहारों का मूल मंत्र थी, वह अब कॉर्पोरेट कमर्शियलाइजेशन (व्यावसायिकता) की भेंट चढ़ चुकी है।

सादगी की वापसी: क्या कम खर्च में उत्सव सार्थक हो सकता है?



इस उपभोक्तावादी संस्कृति के बीच, क्या हमारे पास कोई विकल्प है? क्या यह संभव है कि हम बिना भारी-भरकम खर्च किए भी त्योहारों को उतनी ही धूमधाम और सार्थकता से मना सकें? जवाब है— हाँ, यह न केवल संभव है, बल्कि आज के समय की सबसे बड़ी जरूरत भी है।

जरा अपनी स्मृतियों के गलियारे में पीछे मुड़कर देखिए। अपने बचपन के उन त्योहारों को याद कीजिए जब न तो इतने बड़े-बड़े शॉपिंग मॉल्स थे, न ही हर हाथ में स्मार्टफोन था। ई-कॉमर्स की सेल का तो तब नामोनिशान भी नहीं था। फिर भी, वे त्योहार आज भी हमारे जीवन की सबसे खूबसूरत और जीवंत यादें क्यों हैं? क्योंकि तब त्योहारों का पैमाना 'खर्च' नहीं, बल्कि 'जुड़ाव' था।

कम खर्च में त्योहार को सार्थक बनाने के कुछ बेहद सरल और व्यावहारिक तरीके हमारे ही पास मौजूद हैं

- **हाथ से बनी चीजों को तरजीह देना** : बाजार से महंगी सजावट खरीदने के बजाय अगर पूरा परिवार मिलकर घर पर ही रंगोली बनाए, कागज के तोरण तैयार करे या पुराने दीयों को दोबारा रंगों से सजाए, तो वह समय परिवार को एक सूत्र में बांधता है। वह सजावट केवल घर को नहीं, बल्कि रिश्तों को भी महकाती है।
- **किचन में अपनों का साथ** : बाजार की मिलावटी और महंगी मिठाइयों को खरीदने की जगह, घर पर पारंपरिक पकवान बनाना एक उत्सव जैसा अनुभव होता है। रसोई से उठती हुई इलाइची और घी की खुशबू बच्चों के जहन में उम्र भर के लिए त्योहार की पहचान बन जाती है।
- **अनुभवों पर निवेश** : उपहारों पर हजारों रुपए खर्च करने के बजाय, वह समय और पैसा किसी ऐसी गतिविधि में लगाएं जो यादें बनाए। जैसे— परिवार के साथ मिलकर किसी अनाथालय या वृद्धाश्रम में जाकर खुशियां बांटना, या किसी जरूरतमंद बच्चे की शिक्षा का जिम्मा उठाना। दूसरों के चेहरे पर लाई गई एक सच्ची मुस्कान जो आत्मिक संतोष देगी, उसकी तुलना किसी महंगे गैजेट से नहीं की जा सकती।

खुशियों का कोई प्राइस टैग नहीं होता... हमें एक समाज के रूप में सामूहिक तौर पर जागना होगा और इस सच को स्वीकार करना होगा कि खुशियों का मूल्य कभी भी खर्च की गई रकम से तय नहीं होता, बल्कि उनके अनुभव से तय होता है। बाजार हमें भ्रम बेचता है। वह हमें यह समझाता है कि भौतिक वस्तुएं ही सुख का पर्याय हैं। लेकिन सच यह है कि कोई भी महंगी कार, ब्रांडेड कपड़े या पांच सितारा होटल का डिनर हमें कुछ पलों का संभ्रमित (अस्थायी) सुख तो दे सकता है, पर आंतरिक शांति और सच्चा आनंद नहीं दे सकता।

सच्चा आनंद संतुष्टि से आता है, प्रदर्शन से नहीं। त्योहार हमें खुद को खाली करने और दूसरों को अपनाने का संदेश देते हैं, न कि अपने घरों को फालतू के सामान से भरने का। हमें अपनी आने वाली पीढ़ी को भी यही सिखाना होगा कि उत्सव का मतलब 'कंज्यूम करना' (उपभोग करना) नहीं, बल्कि 'शेयर करना' (बांटना) है।

उत्सव मेरा, जिम्मेदारी भी मेरी

दीपावली केवल घर की चौखट तक खुशियां और रोशनी समेटने का पर्व नहीं है। उत्सव की असली सार्थकता तब है, जब हमारी रौनक दूसरों के लिए परेशानी न बने और सार्वजनिक परिवेश स्वच्छ रहे।





डॉ. मधु बैनर्जी, ✍ वरिष्ठ पत्रकार

दीपावली रोशनी, खुशियों और आपसी मेल-मिलाप का त्योहार है। घरों की सफाई से शुरू होने वाली तैयारियां गलियों, बाजारों और मोहल्लों तक उत्सव का रंग बिखेर देती हैं। दीप जलते हैं, आतिशबाजी होती है, मिठाइयां बांटी जाती हैं और लोग अपनों के साथ खुशियां साझा करते हैं। लेकिन पर्व का उल्लास धीमा पड़ते ही एक दूसरी तस्वीर भी सामने आने लगती है। सड़कों पर बिखरे पटाखों के अवशेष, प्लास्टिक की थैलियां, मिठाइयों के डिब्बे और जगह-जगह जमा गंदगी एक जरूरी सवाल खड़ा करती है। क्या हमारी भूमिका केवल पर्व मनाने तक सीमित है, या उसके बाद आसपास के परिवेश को स्वच्छ बनाए रखना भी हमारा कर्तव्य है?

दरअसल, किसी भी आयोजन की सार्थकता इस बात में है कि उसका उल्लास दूसरों के लिए असुविधा या संकट का कारण न बने। हम अपने घर को चमकाने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं, लेकिन दहलीज के बाहर कदम रखते ही सार्वजनिक स्थलों के प्रति हमारा दायित्व बोध कमजोर पड़ जाता है। जिस गली से हम रोज गुजरते हैं, जिस पार्क में हमारे बच्चे खेलते हैं और जिस सड़क का इस्तेमाल पूरा मोहल्ला करता है, उसकी स्वच्छता को हम अक्सर नगर निगम या सफाईकर्मियों की जिम्मेदारी मान लेते हैं। यही सोच बदलने की जरूरत है।

नागरिकता केवल अधिकार नहीं, जिम्मेदारी भी

- नागरिक होने का अर्थ केवल सुविधाएं प्राप्त करना, अधिकारों की मांग करना या प्रशासन से अपेक्षाएं रखना नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ उस साझा जीवन के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाना भी है, जिसका हिस्सा हम सभी हैं। सड़क, पार्क, बाजार और सार्वजनिक चौक किसी एक व्यक्ति के नहीं होते। इनका उपयोग सभी करते हैं, इसलिए इन्हें साफ और व्यवस्थित रखने में भी सबकी भागीदारी जरूरी है।
- यदि हम अपने घर का कचरा सड़क पर डालकर आगे बढ़ जाते हैं, तो कुछ क्षणों के लिए सुविधा जरूर मिल सकती है, लेकिन उसका नुकसान पूरे समुदाय को उठाना पड़ता है। यही स्थिति सार्वजनिक स्थानों पर थूकने, प्लास्टिक फैलाने और तेज आवाज में लाउडस्पीकर या आतिशबाजी करने से पैदा होती है। हमारी छोटी-सी लापरवाही किसी दूसरे के लिए बड़ी परेशानी बन सकती है।
- इसलिए स्वच्छता को केवल सफाई अभियान या सरकारी कार्यक्रम मानने के बजाय नागरिक संस्कार के रूप में अपनाना होगा। सार्वजनिक जगहों को भी अपने घर का विस्तार समझने की आदत विकसित हो जाए, तो स्वच्छता के लिए केवल निर्देशों और जुर्माने पर निर्भर रहने की जरूरत कम हो सकती है।

उत्सव के बाद कचरे का सवाल

दीपावली के दौरान खरीदारी, मिठाइयों की पैकिंग, उपहारों की सजावट और आतिशबाजी के कारण कचरे की मात्रा बढ़ जाती है। कागज, गत्ता, प्लास्टिक, फूल-मालाएं और पटाखों के अवशेष अलग-अलग तरह के कचरे के रूप में सामने आते हैं। इन्हें बिना छंटाई के एक साथ फेंक देने से उपयोगी सामग्री के पुनर्चक्रण की संभावना भी कम हो जाती है।

समस्या केवल कचरे की मात्रा नहीं, बल्कि उसके निस्तारण की हमारी आदत भी है। गीले और सूखे कचरे को अलग रखना, प्लास्टिक का इस्तेमाल कम करना और पटाखों के अवशेषों को सुरक्षित तरीके से समेटना उपयोगी कदम हैं। इनके लिए बड़े बजट की नहीं, बल्कि जागरूकता और नियमितता की जरूरत है। ध्वनि प्रदूषण पर ध्यान देना भी उतना ही जरूरी है। त्योहार की खुशी किसी बुजुर्ग, बीमार व्यक्ति, छोटे बच्चे या ध्वनि के प्रति संवेदनशील व्यक्ति के लिए परेशानी नहीं बननी चाहिए। उत्सव मनाते समय दूसरों की सुविधा और स्वास्थ्य का ध्यान रखना सामाजिक संवेदनशीलता का हिस्सा है। खुशी तभी सार्थक है, जब उसमें दूसरों के सम्मान और सुरक्षा का भी ध्यान रखा जाए।

मोहल्ले से शुरू हो सकती है बदलाव की पहल

सामुदायिक जीवन की ताकत यह है कि छोटे स्तर पर मिलकर किए गए प्रयास बड़े बदलाव का आधार बन सकते हैं। दीपावली के अगले दिन मोहल्ले के लोग अपने आसपास की सफाई की पहल कर सकते हैं। आवासीय सोसायटियां सफाईकर्मियों के साथ समन्वय बनाकर कचरा एकत्र करने के लिए उचित स्थान तय कर सकती हैं। स्थानीय दुकानदार अपनी दुकानों के बाहर कूड़ेदान रखें और ग्राहकों को भी कचरा निर्धारित स्थान पर डालने के लिए प्रेरित करें।

बच्चों और युवाओं की भागीदारी इस दिशा में विशेष रूप से उपयोगी हो सकती है। स्कूलों, कॉलोनियों और सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से उन्हें कचरा पृथक्करण, स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण के व्यावहारिक तरीके सिखाए जा सकते हैं। बच्चे जब अपने घर में कचरा अलग-अलग रखने की आदत अपनाते हैं, तो वे कई बार बड़ों को भी इसके लिए प्रेरित करते हैं।

हालांकि, सामुदायिक सफाई का अर्थ यह नहीं है कि लोग सुरक्षा की परवाह किए बिना पटाखों के अवशेष उठाने लगें। सफाई के दौरान दस्ताने, उचित उपकरण और सुरक्षित निस्तारण की व्यवस्था जरूरी है। खतरनाक अवशेषों को प्रशिक्षित सफाईकर्मियों या संबंधित एजेंसी की मदद से हटाया जाना चाहिए।

स्थानीय संस्थाएं और प्रशासन निभाएं अपनी भूमिका

- मोहल्ला समितियां, आवासीय सोसायटियां, व्यापार मंडल, युवा संगठन और सामाजिक संस्थाएं लोगों को एक मंच पर लाकर स्वच्छता की पहल को नियमित बना सकती हैं। इसके लिए प्रत्येक मोहल्ले में सफाई संबंधी समस्याओं की पहचान, कचरा संग्रहण के समय और स्थान की जानकारी, गीले और सूखे कचरे के लिए अलग-अलग डिब्बों की व्यवस्था तथा प्लास्टिक के स्थान पर पुनः उपयोग योग्य थैलों को प्रोत्साहन जैसे कदम उठाए जा सकते हैं।



- सफाई व्यवस्था में कमी दिखाई देने पर संबंधित विभाग को सूचना देना और समाधान होने तक संवाद बनाए रखना भी जरूरी है। केवल एक दिन का औपचारिक कार्यक्रम आयोजित करने के बजाय नियमित प्रयास किए जाएं, तो उनका असर अधिक स्थायी हो सकता है।
- इस पूरी व्यवस्था में नगर निकायों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। त्योहारों के बाद बढ़ने वाले कचरे को देखते हुए सफाई और कचरा संग्रहण की व्यवस्था स्थानीय जरूरतों के अनुरूप मजबूत की जानी चाहिए। नियमित कचरा उठाव, पर्याप्त संसाधन और नागरिकों की शिकायतों पर समयबद्ध कार्रवाई से व्यवस्था अधिक प्रभावी बन सकती है। नागरिकों से जिम्मेदारी निभाने की अपेक्षा के साथ प्रशासन को भी अपनी जिम्मेदारी पूरी करनी होगी। स्वच्छता का स्थायी समाधान दोनों के सहयोग से ही संभव है।

बदलाव की शुरुआत अपने व्यवहार से

किसी भी सामाजिक परिवर्तन की शुरुआत दूसरों को उपदेश देने से नहीं, अपने व्यवहार में बदलाव लाने से होती है। हम चाहते हैं कि हमारी सड़कें साफ रहें और सार्वजनिक पार्क सुंदर दिखें, लेकिन क्या हम स्वयं कचरा निर्धारित स्थान पर डालते हैं? क्या खरीदारी और उत्सव की तैयारियों में अनावश्यक प्लास्टिक का इस्तेमाल कम करते हैं? इन सवालों के जवाब ही हमारी नागरिक चेतना को परिभाषित करते हैं।

सफाईकर्मियों के काम का सम्मान केवल उनके प्रति धन्यवाद व्यक्त करने में नहीं, बल्कि उनका काम अनावश्यक रूप से बढ़ने से रोकने में भी है। कचरा इधर-उधर न फैलाना, उसे अलग-अलग रखना और निर्धारित व्यवस्था का पालन करना उनके श्रम को सार्थक बनाने में हमारा योगदान है।

बच्चों के सामने हमारा व्यवहार भी एक उदाहरण बनता है। हम उन्हें स्वच्छता का पाठ पढ़ाएं, लेकिन स्वयं सड़क पर कचरा फेंकें, तो हमारा संदेश प्रभावी नहीं होगा। इसके विपरीत, जब परिवार के सभी सदस्य अपने आसपास की सफाई का ध्यान रखते हैं, तो यह आदत धीरे-धीरे जीवनशैली का हिस्सा बन सकती है।

खुशियां ऐसी हों, जिनकी कीमत समाज न चुकाए

- त्योहारों का उद्देश्य जीवन में उत्साह, सकारात्मकता और सामुदायिक संबंधों को मजबूत करना है। इसलिए जरूरी है कि हमारी खुशियों का बोझ दूसरों को न उठाना पड़े। रोशनी के साथ स्वच्छता, उत्साह के साथ संवेदनशीलता और उत्सव के साथ पर्यावरण संरक्षण भी जुड़ना चाहिए।
- दीपावली के बाद हर परिवार अपने घर के बाहर के हिस्से को स्वच्छ रखने का ध्यान दे, हर दुकानदार अपनी दुकान के आसपास कचरा न फैलने दे और हर सोसायटी सफाई व्यवस्था में सहयोग करे, तो बदलाव के लिए किसी बड़े अभियान का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। छोटी-छोटी पहलें मिलकर एक स्वच्छ और जिम्मेदार समाज की नींव रख सकती हैं।



- अंततः, सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता केवल किसी विभाग की कार्यसूची का विषय नहीं, बल्कि हमारी सामाजिक समझ और नागरिक संस्कारों की पहचान है। प्रशासन की जिम्मेदारी अपनी जगह है और नागरिकों का दायित्व अपनी जगह। दोनों के बीच सहयोग ही स्थायी समाधान का रास्ता है।
- इस दीपावली के बाद हम केवल अपने घरों में सहेजी गई रोशनी और यादों को ही न देखें, बल्कि आसपास की सड़कों, गलियों और सार्वजनिक स्थलों को भी उसी अपनत्व से देखें, जिस अपनत्व से अपने घर को देखते हैं। क्योंकि उत्सव मेरा है, तो उसे सुंदर, स्वच्छ और जिम्मेदार बनाने की जिम्मेदारी भी मेरी है।

हुनर का नया बाजार





डॉ. त्रिलोक शर्मा प्रशिक्षक, करियर विश्लेषक

डिजिटल मंचों ने पारंपरिक कारीगरों और युवाओं के लिए बिना बड़ी पूंजी के स्वरोजगार के द्वार खोले हैं। जरूरत सिर्फ अपने हुनर को गुणवत्ता, भरोसे और डिजिटल समझ के साथ नए बाजार से जोड़ने की है।

राजस्थान के किसी कस्बे में बैठी महिला सुंदर कढ़ाई करती है, दीवाली पर कोई कुंभकार सुंदर दीये बनाता है, कोई युवक मोबाइल की मरम्मत जानता है और किसी परिवार के अचार की पूरे मोहल्ले में तारीफ होती है। कुछ साल पहले तक इस हुनर के ग्राहक वही थे, जो दुकान, कुंभकार के चाक या हाट तक पहुंच पाते थे। आज वही कढ़ाई, वही अचार और कुम्हार का वही दीया मोबाइल की स्क्रीन पर दिखता है। ऑर्डर किसी दूसरे शहर से आता है और भुगतान यूपीआई से। मिट्टी वही है, हाथ वही हैं, हुनर वही है; बदला है तो सिर्फ रास्ता। लेकिन दरवाजा खुलना और कारोबार चल पड़ना अलग बातें हैं। इनके बीच भरोसे, गुणवत्ता और कारोबारी समझ की मेहनत है।

नौकरी खोजने से काम रचने तक

रोजगार की चर्चा अक्सर नियुक्ति पत्र पर आकर रुक जाती है, जबकि आजीविका का एक रास्ता अपनी क्षमता से किसी वास्तविक जरूरत को पूरा करना भी है। यह बात मैंने अपने ही घर में देखी। मेरा बड़ा बेटा दिव्यांशु बेंगलुरु में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में अच्छे पद पर था। कोविड के दौर में कंपनी की खर्च-कटौती में उसकी नौकरी चली गई। निराश होने के बजाय उसने मुझसे कहा कि अब वह किसी नौकरी के भरोसे नहीं रहेगा, अपना काम करेगा। सच कहूं तो मैं आश्वस्त नहीं था। पर दो वर्ष की लगातार मेहनत के बाद आज वह घर बैठे ऑनलाइन मंचों के जरिए एआई ट्रेनर का काम कर रहा है। कमाई दस से पांच की नौकरी से बेहतर है और दफ्तर के घंटों का कोई बंधन नहीं।

डिजिटल मंचों ने एक तीसरा रास्ता खोला है: न पूरी तरह नौकरी, न बड़ी पूंजी वाला व्यापार, बल्कि हुनर पर टिका छोटा उद्यम। ई-कॉमर्स मंच बिना दुकान के देशभर का बाजार देते हैं। व्हाट्सऐप, इंस्टाग्राम और यूट्यूब अपने आप में दुकान, विज्ञापन और ग्राहक-सेवा केंद्र बन गए हैं। सरकारी पहल वाला खुला नेटवर्क ओएनडीसी बड़े मंचों पर निर्भरता घटाने का विकल्प देता है और पीएम विश्वकर्मा योजना पारंपरिक कारीगरों को प्रशिक्षण, औजार और ऋण से जोड़ती है।

अवसर केवल उत्पाद बेचने में नहीं हैं। कोई युवा आसपास के पांच दुकानदारों की ऑनलाइन सूची बना सकता है, कोई कारीगरों के उत्पादों की तस्वीरें खींचने और ग्राहकों को जवाब देने का जिम्मा ले सकता है। बुजुर्गों का अनुभव और युवाओं की डिजिटल समझ मिल जाए, तो परिवार का पुराना काम नया बाजार पा सकता है।

सफलता की असली कहानियां

- उदयपुर के एक व्यवसायी का उदाहरण मैं नजदीक से जानता हूं। एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल पर उनका चांदी के उपहारों का बड़ा शोरूम था। कोविड में पर्यटन ठप हुआ तो किराया और वेतन भरना भारी पड़ने लगा। उन्होंने हिम्मत हारने के बजाय ऑनलाइन मंचों का सहारा लिया। दो-तीन साल की अथक मेहनत के बाद आज वह महंगा शोरूम बंद है, पूरा कारोबार घर से चलता है, बिक्री शोरूम के दिनों से अधिक है और पहले से ज्यादा लोग उनके यहां काम करते हैं।
- सेवा क्षेत्र में भी यही बदलाव है। मेरे एक सहपाठी मित्र आज यूट्यूब पर ज्योतिषीय मार्गदर्शन देते हैं। उनके चैनल से लाखों लोग जुड़े हैं और यही उनकी आय का बड़ा साधन है। आसपास नजर डालें तो पॉडकास्ट, चैनल या समाचार पोर्टल चलाने वाले कई परिचित मिल जाएंगे।
- सामूहिक प्रयास की मिसाल बाड़मेर का रूमा देवी ब्रांड है। ग्रामीण विकास एवं चेतना संस्थान ने कारीगरों के लिए उत्पादक कंपनी विकसित की, जिसका ऑनलाइन मंच यहां की कढ़ाई को देश-विदेश के खरीदारों तक ले जाता है। इसी मंच से जुड़ी छगनी देवी ने पारंपरिक कढ़ाई को प्रशिक्षण और मार्गदर्शन से निखारा, प्रदर्शनियों और फैशन आयोजनों में पहचान पाई और अपनी बेटियों को भी यह हुनर सिखाया। पड़ोसी गुजरात में ओखाई से जुड़ी लाखु बेन पहले निर्माण कार्य में पत्थर तोड़ती थीं; प्रशिक्षण के बाद कुशल शिल्पकार बनीं और उनकी कमाई बच्चों की पढ़ाई और घर बनाने में लगी। सीख साफ है: इंटरनेट पर तस्वीर डाल देना काफी नहीं, हुनर को प्रशिक्षण, संगठन और बाजार से जोड़ना होता है।

चमक के पीछे की चुनौतियां

- पहली चुनौती पहचान की है। एक जैसे हजारों उत्पादों के बीच ग्राहक आपको नहीं जानता; वह तस्वीर, कीमत और समीक्षाएं देखता है। इसलिए वास्तविक तस्वीरें, स्पष्ट कीमत, सामग्री, आकार और पहुंचने का समय सामने होना चाहिए।
- दूसरी चुनौती गुणवत्ता की निरंतरता है। हाट में ग्राहक सामान छूकर खरीदता है, ऑनलाइन वह तस्वीर पर भरोसा करता है। कपड़ा रंग छोड़ दे या अगली खेप का स्वाद बदल जाए, तो एक खराब समीक्षा महीनों की मेहनत पर पानी फेर देती है। मैं ऐसे कई लघु उद्यमियों को जानता हूं, जिन्हें पैकिंग और गुणवत्ता की छोटी-सी चूक के कारण कम समय में भारी नुकसान उठाकर कारोबार बंद करना पड़ा। वहीं कुछ ऐसे भी हैं, जिन्होंने गुणवत्ता, पैकिंग और ग्राहक सेवा को सर्वोपरि रखा, "कम मुनाफा, ज्यादा बिक्री" का सिद्धांत अपनाया और आज केवल ऑनलाइन मंचों से करोड़ों का कारोबार कर रहे हैं।
- तीसरी चुनौती पैसे की है। बिक्री की रकम पूरी कमाई नहीं होती। कच्चा माल, अपनी मेहनत, पैकिंग, भेजने का खर्च, मंच का कमीशन, प्रचार और लौटे सामान का नुकसान घटाने के बाद असली बचत निकलती है। 500 रुपये की वस्तु पर ये खर्च 430 रुपये हों, तो बचत सिर्फ 70 रुपये है। भुगतान का समय भी अहम है; माल बनाने में पैसा आज लगता है और रकम हफ्तों बाद आए तो अगली खेप अटक जाती है। इसलिए मंच की भुगतान-अवधि, कटौतियां और वापसी की शर्तें पहले लिखित में समझें, हर लेनदेन का रिकॉर्ड रखें और एक ही मंच पर पूरी तरह निर्भर न रहें।

इन्हीं अवसरों की आड़ में ठग भी सक्रिय हैं। बिना कौशल के निश्चित मोटी कमाई, वीडियो पसंद करने के बदले पैसे या कमाई निकालने से पहले "शुल्क" की मांग खतरे के संकेत हैं। ग्राहक के भेजे स्क्रीनशॉट के बजाय अपने खाते में रकम की पुष्टि करें। पैसा पाने के लिए यूपीआई पिन डालने की जरूरत नहीं होती, इसलिए ओटीपी या पिन किसी से साझा न करें। ठगी हो जाए तो तुरंत बैंक को सूचित करें, 1930 पर फोन करें और cybercrime.gov.in पर शिकायत दर्ज करें।

युवाओं के लिए राह... शुरुआत अपने आसपास की जरूरत पहचानने से करें। दस संभावित ग्राहकों से बात करें, सीमित नमूने बनाएं और तीस दिन में देखें कि लोग किस कीमत पर खरीदते हैं, शिकायत क्या है और दोबारा मांग आती है या नहीं। हुनर पहले, मंच बाद में; ऐप बदलते रहेंगे, कौशल ही असली पूंजी है। और अपनी कहानी बताइए, क्योंकि ग्राहक उत्पाद के साथ उसके पीछे का इंसान और परंपरा भी खरीदता है।



जाम्बवान की भूमिका... रामायण में समुद्र तट पर जब सारे वानर निराश बैठे थे, तब अपार बल के धनी हनुमान जी अपनी शक्ति भूले हुए थे। जाम्बवान जी ने उन्हें उनकी क्षमता का स्मरण कराया और वही हनुमान जी सौ योजन का समुद्र लांघ गए। हमारे गांवों और कस्बों में ऐसे लाखों "हनुमान" हैं: हाथ में हुनर, मन में लगन, पर अपनी क्षमता से अनजान। उन्हें जाम्बवान चाहिए।

अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मेरे पास ऐसे कई युवा आते हैं, जिनके मन में नए विचार होते हैं और जो उन्हें जमीन पर उतारने की सलाह चाहते हैं। उनमें से कई ने ऑनलाइन काम शुरू किया, अपनी क्षमता पहचानी और छोटे से प्रयास को आज एक बड़ी व्यावसायिक फर्म में बदल दिया है। परिवारों को भी घर से होने वाले काम को "खाली समय का शौक" मानना छोड़ना होगा; महिला उद्यमी को समय, जगह और घरेलू सहयोग चाहिए।

समाज के लिए संदेश... आज हमारे हाथ के मोबाइल का अधिकांश उपयोग उपभोग में होता है: रील देखने, खरीदारी करने और समय बिताने में। पर जो उपकरण हमें ग्राहक बनाता है, वही हमें विक्रेता, शिक्षक, कलाकार और उद्यमी भी बना सकता है। यदि हर परिवार अपने बच्चे से पूछे, "आज तुमने मोबाइल से क्या सीखा या क्या बनाया?", तो आने वाली पीढ़ी नौकरी मांगने वाली नहीं, नौकरी देने वाली बनेगी।

इस दीपावली जब आप हाथ से बना कोई दीया खरीदें, तो याद रखिए कि आप केवल एक वस्तु नहीं ले रहे। आप किसी के हुनर को पहचान दे रहे हैं और किसी परिवार की आजीविका का दीपक जला रहे हैं।

कुछ साझा सूत्र

सफल उद्यमी क्या करते हैं	असफल प्रयास कहां चूकते हैं
एक छोटे, स्पष्ट ग्राहक-वर्ग से शुरुआत	'सबको सब कुछ' बेचने की कोशिश
गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं	जल्दी कमाई के लिए गुणवत्ता घटाना
ग्राहक से सीधा, विनम्र संवाद	शिकायत को अनदेखा करना
कमाई का हिसाब और नकदी की योजना	पूरी कमाई तुरंत खर्च कर देना
धैर्य: पहले भरोसा, फिर बिक्री	पहले महीने में ही निराश होकर छोड़ देना
लगातार सीखना (वीडियो, फोटो, पैकिंग)	'मुझे सब आता है' वाला भाव

युवाओं के लिए पांच व्यावहारिक सीख

1. **हुनर पहले, मंच बाद में:** ऐप बदलते रहेंगे, पर आपका कौशल आपकी असली पूंजी है।
2. **छोटे से शुरू करें, पर ईमानदारी से:** दस संतुष्ट ग्राहक सौ आधे-अधूरे ग्राहकों से बेहतर हैं।
3. **अपनी कहानी बताइए:** ग्राहक केवल उत्पाद नहीं, उसके पीछे का इंसान और परंपरा भी खरीदता है।
4. **डिजिटल सुरक्षा और हिसाब सीखिए:** भुगतान की पुष्टि बैंक खाते में ही करें, स्क्रीनशॉट पर नहीं। हर लेन-देन का रिकॉर्ड रखें।
5. **सरकारी योजनाओं और स्थानीय नेटवर्क का लाभ लें:** उद्यम पंजीकरण, स्वयं सहायता समूह और कौशल प्रशिक्षण अकेले संघर्ष को सामूहिक शक्ति में बदल देते हैं।

प्रभु के सेवानुष्ठान की सामग्री है अन्नकूट



डा. राकेश तैलंग शिक्षाविद् एवं पूर्व शिक्षा अधिकारी



अन्नकूट उत्सव के आयोजन से आनन्दित हुए भक्तों के अभिज्ञान के लिए यह जानकारी प्रस्तुत करते हुए हमें गौरव है, क्योंकि जिसे हम प्रायः अल्प ज्ञान के कारण मात्र स्वादेन्द्रिय को तृप्त करने वाला भोजन मानकर उपेक्षित कर देते हैं, वह भोग सखड़ी, अनसखड़ी, दूधघर और शाकघर के वर्गीकरण के साथ प्रभु सेवा यज्ञ की हवन सामग्री है और इस प्रसंग में कितना पवित्र है, इसे समझ लेने के बाद वह हमारे लिए यज्ञ या अनुष्ठान का ही भाग बन जाता है। तब उसके प्रति कदाचित् अन्य भाव ला ही नहीं सकते।

यह विशाल सामग्री यज्ञ का भाग कैसे है, इसे याज्ञवल्क्य और राजा जनक के संवाद द्वारा शुक्ल यजुर्वेद में समझाया गया है।

तदनुसार कच्ची रसोई या सखड़ी उपयोग लाए जाने वाली समस्त प्रकार की यज्ञ सामग्री है। जैसे पांच प्रकार की समिधाएं यज्ञ का महत्वपूर्ण भाग होती हैं, वैसे ही पक्की रसोई या पक्वान्न या अनसखड़ी को अन्नकूट यज्ञ में सम्मान है। यज्ञ में वन से लाए काष्ठ को हवन के लिए अनिवार्य अंग माना जाता है, वैसे ही इस उत्सव में हमें सूखे मेवे से बनी सामग्री को मान देना चाहिए। यज्ञ में घी और दूध का उपयोग सर्वविदित है, वैसे ही इस उत्सव में दूधघर का भोग सम्मानपूर्वक उपयोग के लिए तैयार किया जाता है। समग्रतः अन्नकूट केवल भोजन का ढेर मात्र नहीं। वह तो स्वयं भगवान द्वारा किया गया यज्ञ है। ऐसा बोध हमें बार-बार होना जरूरी है। तभी हम इस प्रकार के उत्सवों का आनंद पाने के अधिकारी बनते हैं। क्या कभी इस भाव से आप और हम देवालयों में आकर इस यज्ञ में स्वयं यज्ञकर्ता होने का आनंद ले पाते हैं? अन्यथा तो मिठाई की बहुत बड़ी दुकान और अन्नकूट महामहोत्सव के बीच कोई अंतर ही नहीं होगा।



डांडिया की खनक से गूंजा ब्ल्यू सिटी, उत्सव के रंगों में रंगा जोधपुर

राजस्थान की समृद्ध लोक संस्कृति, की मधुर लय और डांडिया की खनक का अनूठा संगम देखने को मिला, जब ब्ल्यू सिटी जोधपुर उत्सव के रंगों में सराबोर हो उठा। चैनल 24+ न्यूज और राजस्थान टुडे की मेजबानी में 17-18 अक्टूबर को होटल बद्री पैलेस में आयोजित 'ब्ल्यू सिटी डांडिया महोत्सव' ने पारंपरिक संस्कृति और आधुनिक उत्सवी अंदाज का शानदार समन्वय प्रस्तुत किया। रंग-बिरंगे परिधान, थिरकते कदम और उमंग से भरे माहौल ने इस दो दिवसीय आयोजन को यादगार बना दिया।







महोत्सव में डांडिया और गरबा की मनमोहक प्रस्तुतियों ने उपस्थित लोगों को झूमने पर मजबूर कर दिया। पारंपरिक परिधानों में सजे प्रतिभागियों ने लोक संस्कृति की खूबसूरती को जीवंत कर दिया। संगीत की मधुर धुनों और डांडिया की खनक के बीच पूरा परिसर उत्साह और उल्लास से सराबोर नजर आया। इस दौरान रंगकर्मी शैलेन्द्र गौड़ का 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' फेम चंपक चाचा के रूप में नजर आना विशेष आकर्षण का केंद्र रहा।

महोत्सव ने मनोरंजन के साथ सामाजिक मेलजोल और सांस्कृतिक एकता को भी बढ़ावा दिया। ऐसे आयोजन नई पीढ़ी को भारतीय परंपराओं से जोड़ने और लोक संस्कृति के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।





दोनों दिन मां दुर्गा की पूजा-अर्चना से हुआ शुभारंभ

- महोत्सव के दोनों दिन कार्यक्रम की शुरुआत मां दुर्गा की पूजा-अर्चना के साथ हुई। इस अवसर पर मारवाड़ मीडिया प्लस के ग्रुप हेड अजय अस्थाना, मैनेजर-सेल्स प्रवीण गिरी, डेन नेटवर्क के मैनेजर राजेन्द्रसिंह खींची, टेक्निकल हेड गिरधारी शर्मा, संजय अस्थाना सहित अन्य सदस्यों ने अतिथियों का स्वागत किया।
- चैनल 24+ न्यूज और राजस्थान टुडे की इस पहल ने जोधपुर की सांस्कृतिक पहचान को एक सशक्त मंच प्रदान किया। रंग, संगीत और परंपरा से सजे इस आयोजन ने शहरवासियों को यादगार पल दिए और उत्सवधर्मिता की भावना को मजबूत किया। 'ब्ल्यू सिटी डांडिया महोत्सव' जोधपुर की सांस्कृतिक जीवंतता और सामूहिक उल्लास का प्रतीक बनकर उभरा।
- कार्यक्रम का शानदार संचालन एंकर शिल्पा नेगी और आरजे शैलेष भूरानी ने किया।



विशिष्ट अतिथियों की रही गरिमामय उपस्थिति

महोत्सव में जनप्रतिनिधियों, प्रशासनिक एवं न्यायिक क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों, सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों और विभिन्न व्यावसायिक संस्थानों के प्रतिनिधियों ने शिरकत की।

- श्री प्रसन्नचंद मेहता, महापौर, जोधपुर
- श्री विजयसिंह पंवार, उपमहापौर, जोधपुर
- श्री अतुल भंसाली, विधायक, जोधपुर शहर
- श्रीमती मनीषा पंवार, पूर्व विधायक
- श्री राजेन्द्र कुमार पालीवाल, जिलाध्यक्ष, जोधपुर शहर भाजपा
- श्री ओमकार वर्मा, जिलाध्यक्ष, जोधपुर शहर कांग्रेस
- श्री नाथूसिंह राठौड़, अतिरिक्त महाधिवक्ता, राजस्थान हाईकोर्ट
- श्री शशिप्रकाश प्रजापत, पूर्व प्रदेश मंत्री, भाजपा ओबीसी मोर्चा
- श्रीमती मीनाक्षी कोठारी, नगर निगम पार्षद
- श्री विक्रम पंवार, नगर निगम पार्षद
- श्री संजय बिश्नोई, नगर निगम पार्षद
- श्री गिरीश माथुर, अध्यक्ष, नव शिक्षा समाज
- श्री नवीनपाल सिंह शेखावत, जीएम, डेन नेटवर्क
- श्री दिलीपसिंह, एक्सईएन, जेडीए
- श्री आदर्श शर्मा, यूथ आइकॉन
- श्री अंकित सिकंद, रीजनल मैनेजर, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
- श्री नितिन अरोड़ा, प्राइम प्रॉपर्टीज
- श्री जगदीश नाहटा, नाहटा जिन्दल स्टील
- सुश्री गुनगुन उपाध्याय, एमडी, गुन-2 कॉफी
- श्री मनीष कच्छवाहा, स्फटिक बिल्डर्स (स्काई रेजिडेंसेज)
- श्री प्रदीप सांखला, होटल बद्री पैलेस
- श्री करण लौंगवानी,करण टेक्नोलॉजिज
- श्री रवि, लाडली बैंगल्स



कविता का लोकतंत्र और लोकतंत्र की कविता

बाज़ार, भीड़ और आभासी लोकप्रियता के दौर में कविता साध्य न रहकर साधन बनती जा रही है।



दिनेश सिंदल, कवि, लेखक



लोकतंत्र हर सामान्य नागरिक की आवाज़ है, उसकी चेतना है और यही उसकी ताक़त भी है। कविता भी जन-सामान्य की आवाज़ को संवेदनात्मक तरीक़े से प्रकट करती है। लेकिन लोकतंत्र में योग्यता को मान्यता नहीं मिलती, लोकप्रियता को मिलती है। जिसके पीछे ज़्यादा भीड़, उसके हाथ में ताक़त। लोकतंत्र ने भीड़ को ताक़त दी। सुप्रीम कोर्ट के चीफ़ जस्टिस के वोट की क़ीमत भी उतनी ही है जितनी किसी आदिवासी अनपढ़ महिला के वोट की।

आजकल कवि भी लोकप्रियता के पीछे भाग रहा है। वह अपने फ़ॉलोअर्स बढ़ा रहा है, लाइक्स व कमेंट्स की चिंता कर रहा है। इसके लिए वह जनता का मूड देखकर लिख रहा है। यानी कि जनता (भीड़) के स्तर पर उतर कर बात कर रहा है, जबकि होना यह चाहिए था कि वह जनता के स्तर को ऊपर उठाकर अपने स्तर तक ले आए।

लोकप्रियता श्रेष्ठता का आधार हो गई। यह बाज़ार का प्रभाव है। बाज़ार में किसी वस्तु की क़ीमत उसकी मांग से होती है। इस बाज़ार की दुनिया में कविता भी वस्तु बन गई। वह साधन होकर रह गई, साध्य नहीं। पद, प्रतिष्ठा, पुरस्कार पाने का साधन; अपने राजनीतिक, सामाजिक एजेंडे को प्रकट करने का साधन।

फ़ोकस कविता बेचने पर

- आज के कवि का फ़ोकस कविता बेचने पर है। वह बाज़ार में खड़ा है। बाज़ार में सफल होने के लिए लोगों के इमोशंस को टच करना होता है। अगर किसी को किसी काम के लिए राज़ी करना है या मजबूर करना है, तो तर्क से बात नहीं बनेगी। उसके इमोशंस को हवा देनी होगी, उसके लालच को हवा देनी होगी। इंसान का दिमाग़ इंसेंटिव को फ़ॉलो करता है, एडवाइस को नहीं।
- कविता स्वतःस्फूर्त प्रेरणा है। इंसेंटिव बाहरी कारण है जो किसी व्यक्ति को कुछ करने के लिए प्रेरित करता है। इंसेंटिव किसी लक्ष्य की प्राप्ति के बाद दिया जाने वाला पुरस्कार होता है। यानी कि इसमें देने वाले का स्वार्थ सिद्ध होता है। इस तरह इंसेंटिव धोखेबाज़ को पावरफ़ुल बनाता है।
- कविता अकेले की यात्रा है। रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा था- 'एकला चलो रे'। कविता बाज़ार की तलाश नहीं, अपनी तलाश है। यह भीतर की यात्रा है। मैंने कभी कहा था कि कवि कविता रचता है और कविता उस कवि को रचती है। कविता के साथ-साथ कवि का रूपांतरण भी होता है।
- बाज़ारोन्मुख कवि हर क़ीमत पर चमकना चाहता है, चाहे उसे चमक के लिए कितने ही अंधेरों से समझौता क्यों न करना पड़े। वह सफल होना चाहता है। सफल यानी जिस लक्ष्य को लेकर चला है उसका पूरा होना।

व्यापक होती है कवि की दृष्टि

राजनीति का हित इसमें है कि लोग बंटे हुए रहें। वह लोगों को जाति, धर्म, भाषा, लिंग के नाम पर बांटेगी। बाज़ार भी नहीं चाहेगा कि क्रेता और विक्रेता के बीच कोई भावनात्मक रिश्ता बने।

आज हमारी कविता भी नव-विमर्श के नाम पर इन्हीं खांचों में बंट गई, जबकि कविता जोड़ने का काम करती है। वह इन सब बैरियर्स को तोड़कर मनुष्य को मनुष्य की तरह देखने का आग्रह करती है। कविता परिवर्तन की चेतना निर्मित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

कवि की दृष्टि व्यापक होती है। वह सभी वादों, विचारधाराओं से ऊपर उठकर बात करता है। उसके लिए मनुष्य और समाज का हित पहले है। कविता असहमति को समर्थन देती है। साहित्य के संसार में अनेक विचार, अनेक स्वर, अनेक अनुभव व अनेक दृष्टियां एक साथ उपस्थित रहती हैं।

लोकतांत्रिक चेतना से संपन्न कविता का दायित्व केवल लोकप्रिय होना नहीं, बल्कि जनता में विवेक जगाना भी है। कवि जनता का प्रतिनिधि होता है। जनता की बात को सच्चाई से, पुरज़ोर तरीक़े से सामने रखता है।

कविता का प्रतिरोध केवल नारे लगाने से उत्पन्न नहीं होता। कविता की वास्तविक शक्ति उसकी कलात्मक और वैचारिक स्वतंत्रता के मेल में निहित है।

कवि का दायित्व किसी राजनीतिक दल या विचारधारा का स्थायी प्रवक्ता बन जाना नहीं है। उसकी निष्ठा मनुष्यता, सत्य, न्याय व संवेदना के प्रति होनी चाहिए। सत्ता की प्रशंसा में आलोचनात्मक दृष्टि छूट जाती है और उसके विरोध के आग्रह में कलात्मकता व विचारशीलता छूट जाती है। हमारे देश में 'लोक' राज नहीं करता है, पार्टियां राज करती हैं। और पार्टी जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र के आधार पर बनती है और इन्हीं का सहारा लेकर अपने को मज़बूत करती है। माना कि लोकतंत्र जीवित रखने के लिए संस्थाओं की आवश्यकता होती है, लेकिन ये संस्थाएं स्वयं कितनी लोकतांत्रिक हैं?

सवाल यह भी है कि जब हम 'लोक' की बात करते हैं तो कौन-सा लोक? वह जो गांव में श्रम करते हुए कुछ नया सृजित कर रहा है, सीमा पर मोर्चा ताने खड़ा सरहद की रक्षा कर रहा है, खेतों में धरती का सीना चीर कर अन्न उपजा रहा है, या वह जो जंतर-मंतर पर सत्ता को गरिया रहा है? हमारा लोक बंटा हुआ है।

कविता इन सब की आवाज़ बनती है। कविता न चुनाव लड़ती है, न क़ानून बनाती है और न ही शासन चलाती है, फिर भी वह नागरिक चेतना को प्रभावित करती है। कविता संवाद की संभावना को जीवित रखती है। जिस कविता में मनुष्य की स्वतंत्रता, समानता तथा गरिमा के लिए जगह है, वह लोकतंत्र को अधिक मानवीय बनाने में योगदान देती है। कविता लोकतंत्र की संवेदनशील सहयात्री होनी चाहिए।

स्क्रीन के हवाले बचपन

आभासी दुनिया की चमक में बच्चों का वास्तविक बचपन और मानसिक शांति दोनों खोते जा रहे हैं। अत्यधिक स्क्रीन टाइम और सोशल मीडिया के एडिक्शन से उपजी चिंताओं, शोध के साक्ष्यों और खेल, स्वाध्याय व वास्तविक मेलजोल जैसे व्यावहारिक समाधानों पर विचार करता सामयिक आलेख।



डॉ. गौरव बिस्सा
एसोसिएट प्रोफेसर, राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, बीकानेर

अति-भौतिकवादी युग में परिवारों में एकल संस्कृति जन्म ले रही है। संबंध दरकते से नजर आ रहे हैं। अहंकार, परिवारों में सत्ता के केंद्र का बदलाव, सोशल मीडिया का अनुचित दखल, अत्यंत व्यस्त जीवनशैली, ज़बरदस्त उपभोक्तावाद और पैसे कमाने की अंधी दौड़ के चलते आज बच्चों का बचपन छिन-सा गया है। बच्चे बच्चे होकर भी मानो बच्चे नहीं हैं, क्योंकि वे स्क्रीन के मायाजाल में उलझे हैं। सोशल मीडिया और इंटरनेट के भरोसे आज बचपन मानो कैद है। छोटे बच्चे को भोजन करवाने से लेकर पढ़ाई तक, हर जगह स्क्रीन का जाल प्रमुखता से नजर आ रहा है।

मोबाइल और इंटरनेट मनुष्यों की सुविधा के लिए हैं; जीवन के आनंद को छीनने के लिए नहीं। इसके एडिक्शन ने जीवन का सुख और रस मानो छीन लिया है। स्टेटस अपडेट के प्रति दीवानगी, हर पल वीडियो बनाने की आतुरता और आभासी दुनिया में जीने की ललक ने मानो युवा वर्ग को 'सेल्फ सेंटर्ड' बना दिया है। किसी समारोह में जाते ही सबसे पहले उस समारोह के वीडियो बनाने या फोटो खिंचवाने की बात करना, समारोह का आनंद लेने के बजाय यह विचार करते रहना कि किस फोटो या वीडियो को स्टेटस बनाना मुफ़ीद रहेगा, हर समस्या का जवाब गूगल पर तलाशना और कागज़ की किताब पढ़ने के बजाय ई-बुक्स को प्रमुख मानना आज का नया शगल है। इसके कारण स्क्रीन टाइम इतना बढ़ गया है कि यह एक स्वास्थ्य संकट के रूप में उभर रहा है। शोध भी यही समझाते हैं।



77 फीसदी युवा 'नोमोफोबिया' के शिकार

- इंटरनेट एडिक्शन पर हुए शोध इसके गंभीर परिणाम उजागर करते हैं। समूचे विश्व की 164 प्रमुख इंटरनेट कंपनियों ने अमरीका के 'सेंटर फॉर मिसिंग एंड एक्सप्लॉइटेड चिल्ड्रन' से शोध करवाया, जिसकी रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2019 में वेबसाइट्स पर बाल यौन उत्पीड़न संबंधी 7 करोड़ फोटोज़ या वीडियोज शेयर किए गए। इस संख्या में एक साल में ही 50 फीसदी उछाल आया है, जो अत्यंत भयावह है। वहीं, महीने में औसतन 11 जीबी इंटरनेट डेटा खर्च करके हम भारतीय दुनिया में सबसे आगे हैं। एक मोबाइल हैंडसेट निर्माता कंपनी के अनुसार 84 फीसदी लोग सुबह उठते ही 15 मिनट मोबाइल देखते हैं। औसतन एक भारतीय प्रतिदिन लगभग साढ़े सात घंटे स्क्रीन पर बिताता है और एक घंटे में पांच बार फोन अनलॉक करता है। इसके अलावा, 'सिक्योर एनवॉय' के शोध के मुताबिक 18 से 24 वर्ष के 77 फीसदी युवा 'नोमोफोबिया' के शिकार हैं, यानी मोबाइल से दूर होने पर लगने वाला भय और डिस्ट्रक्टिव एंग्जायटी।
- ऊपरी दिखावा जीवन का सच नहीं हो सकता। इंटरनेट एडिक्शन यह दर्शाता है कि हमारे परस्पर प्रेमपूर्ण संबंध इतने कमज़ोर हो चुके हैं कि हमें अपने हर कार्य पर दूसरों की टिप्पणी की ज़रूरत महसूस होने लगी है। दूसरे आपकी बात का समर्थन करें, क्या यह आवश्यक है? सोशल मीडिया पर हर बात लिखकर आप सराहना और दूसरों से स्वीकारोक्ति ही तो चाहते हैं। अब पुनः सोचें कि क्या आप खुद की नज़र में इतने अशक्त और निर्बल हैं कि जब तक दूसरे लोग आपके कृत्यों को अच्छा नहीं कह देते या उसे स्वीकार नहीं कर लेते, तब तक आपको यह विश्वास ही नहीं होता कि आपने कुछ अच्छा किया है? इस पर विचार करना ज़रूरी है।

सोशल मीडिया के उपयोग पर प्रतिबंध पर विचार

क्या ऐसी स्थिति में सोशल मीडिया को एक उम्र-विशेष तक प्रतिबंधित किया जाना एक समाधान हो सकता है? हाल ही में कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में 16 वर्ष से कम आयु वर्ग के लिए सोशल मीडिया का प्रयोग प्रतिबंधित किया गया है। ऑस्ट्रेलिया में भी 16 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया का उपयोग प्रतिबंधित है। स्पेन, ब्रिटेन, यूनान आदि देश इस दिशा में कानून बनाने की तैयारी में हैं और भारत सरकार भी इस दिशा में विचारशील है।

स्क्रीन के इस चक्रव्यूह को तोड़ने का पहला उपाय है- खेलिए। समझें कि वर्चुअल दुनिया ही सब कुछ नहीं होती। बेशक इंटरनेट बहुत ज़रूरी है, लेकिन प्रत्येक समस्या का समाधान इंटरनेट पर खोजना मूर्खता है। ईमेल, इंटरनेट आदि की जानकारी और



एक्सपर्टीज ज़रूर होनी चाहिए, लेकिन इसका दास बनना अनुचित है। स्क्रीन पर उंगलियां घुमाने के बजाय शरीर को कार्यशील बनाने से समाज और स्वास्थ्य में ऊर्जा आती है। स्क्रीन पर गेम्स खेलने से शरीर सक्रिय नहीं होता, मैदान पर जाकर खेलने से सक्रियता बढ़ती है। अपने हमउम्र बच्चों के साथ खेलना व्यक्तित्व के समग्र विकास की रीढ़ है। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी ने 3 से 7 साल तक के 1,700 बच्चों पर शोध करके यह निष्कर्ष निकाला है कि जो बच्चे अपने हमउम्र साथियों के साथ खेलते हैं, उनका मानसिक और शारीरिक विकास कहीं अधिक बेहतर होता है।

दूसरा उपाय है- पढ़िए। हमारी वर्तमान स्थिति ऐसी है कि किसी भी जानकारी के लिए पुस्तकों का अध्ययन करना तो बीते ज़माने की बात लगने लगा है। हर प्रश्न को नेट पर सर्च करना अनुचित है; जो ज्ञान कागज़ की पुस्तक दे सकती है, वह इंटरनेट नहीं दे सकता। वर्तमान समय में बढ़ रहे अपराधों को कम करना हो या अपनी संस्कृति व मूल्यों का संरक्षण करना हो, पुस्तकों को पढ़ने की आदत से ही इन समस्याओं का समाधान मुमकिन है। जातिवाद, अंधविश्वास, गृह-क्लेश और तलाक आदि मुद्दों के बढ़ने का एक प्रमुख कारण स्वाध्याय (सेल्फ स्टडी) की कमी भी है। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले युवाओं के अलावा, आज के सामान्य युवा वर्ग को समाज, राष्ट्र, वित्त, विदेश नीति आदि की न्यूनतम जानकारी भी नहीं है। रोज़ पुस्तक का सिर्फ एक पृष्ठ पढ़ने, मात्र सौ शब्द लिखने और रोजाना आधा घंटा समाचार सुनने से जो आत्मविश्वास बढ़ता है, वह अकल्पनीय है।

उल-जुलूल कंटेंट देखने की लत



ज़रा सोचिए कि अपने मूल काम करने के बाद बच्चा अपने घर पर क्या करता है? उसका जवाब है टीवी देखना, इंटरनेट पर उल-जुलूल कंटेंट देखना या गेम्स खेलना और अंत में सोशल मीडिया पर अनावश्यक समय बिताना। इसमें अभिभावक भी कम दोषी नहीं हैं, क्योंकि स्क्रीन एडिक्शन की बीमारी से वे खुद भी त्रस्त हैं, इसलिए वे बच्चों को इसका बुरा असर समझाने में नाकाम रहते हैं। साथ ही, बड़ों में भी किताबें पढ़ने की प्रवृत्ति घट रही है। क्या सिर्फ कमाना, खाना-पीना और सोशल मीडिया देखना ही जीवन है? दरअसल मनुष्य कमा रहा है, शारीरिक कसरत भी कर रहा है, लेकिन उसे मेंटल फिटनेस की चिंता कतई नहीं है। मानसिक सुदृढ़ता सोशल मीडिया से नहीं, बल्कि पुस्तकें पढ़ने से आती है। मानसिक संबल और ज्ञानार्जन के लिए अभिभावकों द्वारा स्वयं पढ़ना और बच्चों में पठन की आदत डालना समय की मांग है।

तीसरा उपाय है- पारस्परिक मेलजोल बढ़ाना। आज के दौर में सोशल मीडिया क़रीब लाने के बजाय दूरियां बढ़ाता प्रतीत हो रहा है। पहले साल में दो से तीन बार अपनों से मिल लिया जाता था, उनकी कुशलक्षेम पूछी जाती थी। त्योहार के बहाने मिलने पर कई गिले-शिकवे दूर हो जाया करते थे, मन का गुबार निकलता था और मेंटल वेंटिलेशन होता था। अब दुनिया एक स्क्रीन और अंगूठे तक सीमित हो गई है। मेलजोल, संवाद और हंसी-मज़ाक से अनेक मानसिक समस्याएं स्वतः दूर हो जाती हैं, अतः इस मानवीय संपर्क को पुनः जीवित करना होगा।

अंततः आंतरिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना सर्वाधिक आवश्यक है। सोचिए कि किसी व्यक्ति को सांप ने काट लिया, तो वह सबसे पहले क्या करेगा? ज़हर का असर समाप्त करने के लिए एंटी-वेनम इंजेक्शन लेगा। इससे यह स्पष्ट है कि खून के अंदर फैले ज़हर को खत्म करना पहली प्राथमिकता है। अब दूसरे पहलू पर विचार कीजिए—शरीर से आप स्वस्थ हैं, लेकिन अंतर्मन से अशांत हैं, क्योंकि सोशल मीडिया पर आपकी फोटो पर आए किसी कमेंट या परिचित द्वारा पोस्ट लाइक न करने की बात मन को पीड़ा दे रही है। अब इलाज किसका करेंगे- बाहरी शरीर का या अंतर्मन का? आभासी इंटरनेट की दुनिया मायाजाल है; वहां जो दिखता है, वह पूर्ण सत्य नहीं है। न तो वहां की हर प्रशंसा सच्ची है और न ही हर आलोचना। इसे समझें और अनावश्यक टिप्पणियों की परवाह किए बिना अपने वास्तविक कर्म पर ध्यान दें। जीवन की समस्त गुत्थियों का समाधान इंटरनेट नहीं हो सकता; इसका उपयोग विवेकपूर्ण और बुद्धिमत्ता से होना चाहिए, यही स्वस्थ जीवन का मूल मंत्र है।

AYUSHI
BUILDCON PVT. LTD.

AYUSHI
BUILDERS & DEVELOPERS



221-222, Shyam Nagar, Pal Link Road, Jodhpur - 342 003 (Raj.)
Tel. : 0291-2710071 Mobile : 94141 27593, 93147 11416
E-mail : mdsharma74@live.in

ग्रहों की चाल



विपुल डोभाल, ज्योतिष, पीठाधीश्वर।
श्री शनिधाम आश्रम, विकासनगर देहरादून
ईमेल : vipravaani@gmail.com मोबाइल : 9928424374



मेष

नवंबर का महीना मेष राशि के जातकों के लिए नई ऊर्जा और नई संभावनाओं का संकेत देता है। कार्यक्षेत्र में लंबे समय से रुके हुए काम गति पकड़ सकते हैं। व्यापारियों के लिए नए संपर्क बनाना लाभकारी रहेगा, लेकिन किसी भी नए निवेश से पहले उसकी पूरी जानकारी अवश्य प्राप्त करें। आर्थिक दृष्टि से आय के अवसर बन सकते हैं, फिर भी अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण रखना आवश्यक होगा। पारिवारिक जीवन में छोटी-छोटी बातों को प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाएं। विद्यार्थियों को एकाग्रता बढ़ाने की आवश्यकता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से दिनचर्या नियमित रखें।



वृषभ

वृषभ राशि के जातकों के लिए नवंबर का महीना स्थिरता और भविष्य की योजनाओं को व्यवस्थित करने का समय रहेगा। नौकरी में आपकी मेहनत का महत्व बढ़ सकता है और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ संबंधों में सुधार की संभावना है। व्यापार में पुराने ग्राहकों से लाभ मिल सकता है, जबकि नए समझौतों में शर्तों को अच्छी तरह पढ़ना जरूरी रहेगा। संपत्ति, वाहन अथवा घर से संबंधित योजनाओं पर विचार आगे बढ़ सकता है। दांपत्य जीवन में भावनाओं का सम्मान करें। विद्यार्थियों को नियमित अध्ययन से अच्छे परिणाम पाने में सहायता मिलेगी।



मिथुन

मिथुन राशि के जातकों के लिए यह महीना संपर्क, संवाद और बौद्धिक क्षमता के उपयोग से आगे बढ़ने का अवसर लेकर आ सकता है। नौकरी में नई जिम्मेदारी मिलने अथवा किसी परियोजना से जुड़ने की संभावना रहेगी। व्यापार करने वाले जातकों को प्रचार-प्रसार, मार्केटिंग और नए लोगों से संपर्क बनाने में लाभ मिल सकता है। हालांकि, एक साथ बहुत सारे काम हाथ में लेने से बचें। आमदनी के साथ खर्च भी बढ़ सकता है। परिवार में आपकी राय को महत्व मिल सकता है। जीवनसाथी के साथ आपसी समझ बढ़ेगी। विद्यार्थियों के लिए अनुशासन महत्वपूर्ण रहेगा।



कर्क

कर्क राशि के जातकों के लिए नवंबर का महीना पारिवारिक जिम्मेदारियों और कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने के अवसर लेकर आ सकता है। महीने के प्रारंभ में कुछ काम अपेक्षा से अधिक समय ले सकते हैं, लेकिन धैर्य से सफलता मिलेगी। व्यापारियों के लिए पुराने संपर्कों से लाभ की संभावना रहेगी। परिवार से संबंधित खर्च बढ़ सकते हैं, इसलिए बचत पर ध्यान दें। जीवनसाथी की भावनाएं समझें। घर में किसी शुभ कार्य की चर्चा हो सकती है। विद्यार्थियों के लिए नियमित अभ्यास लाभकारी रहेगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से पर्याप्त नींद और संतुलित दिनचर्या आवश्यक है।



सिंह

सिंह राशि के जातकों के लिए नवंबर का महीना आत्मविश्वास और महत्वपूर्ण निर्णयों का समय बन सकता है। कार्यक्षेत्र में प्रतिभा दिखाने के अवसर मिलेंगे, लेकिन सफलता के लिए अहंकार के बजाय विनम्रता को महत्व देना होगा। व्यापार में साझेदारी में काम करने वाले जातकों को हिसाब-किताब में स्पष्टता रखनी चाहिए। महीने के मध्य में जल्दबाजी या क्रोध के कारण किसी अच्छे अवसर को प्रभावित न होने दें। पारिवारिक जीवन में आपका व्यवहार वातावरण को प्रभावित करेगा। जीवनसाथी के साथ मतभेद हो तो बातचीत से समाधान निकालें। विद्यार्थी लक्ष्य तय कर आगे बढ़ें।



कन्या

कन्या राशि के जातकों के लिए नवंबर का महीना आत्मविश्लेषण और अधूरे कार्यों को व्यवस्थित करने का अवसर प्रदान कर सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को जिम्मेदारियों का निर्वहन सावधानीपूर्वक करना होगा। कार्यस्थल पर छोटी गलतियों से बचने के लिए दस्तावेजों की दोबारा जांच करें। व्यापारियों को नए निवेश से पहले बाजार का आकलन करना चाहिए। आर्थिक दृष्टि से अनावश्यक खरीदारी पर नियंत्रण रखना लाभकारी होगा। प्रेम संबंधों में अपेक्षाओं को लेकर स्पष्ट संवाद जरूरी रहेगा। विद्यार्थी पढ़ाई में निरंतरता बनाएं। स्वास्थ्य के लिए पर्याप्त आराम करें।



तुला

तुला राशि के जातकों के लिए नवंबर का महीना सामाजिक संपर्कों और भविष्य की योजनाओं के लिहाज से महत्वपूर्ण रह सकता है। कार्यक्षेत्र में आपकी बातचीत करने की क्षमता और संतुलित दृष्टिकोण लाभ पहुंचा सकते हैं। नौकरी में किसी नई जिम्मेदारी अथवा परियोजना पर काम करने का अवसर मिल सकता है। व्यापारी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए आय और व्यय का हिसाब व्यवस्थित रखें व महत्वपूर्ण समझौतों में सावधानी रखें। पारिवारिक जीवन में आपसी सहयोग बना रहेगा। दांपत्य संबंधों में समय देना आवश्यक होगा। विद्यार्थी समय प्रबंधन पर ध्यान दें।



वृश्चिक

वृश्चिक राशि के जातकों के लिए नवंबर का महीना करियर, प्रतिष्ठा और जिम्मेदारियों के क्षेत्र में विशेष महत्व रख सकता है। महीने के मध्य में सूर्य के वृश्चिक राशि में प्रवेश के बाद पारंपरिक ज्योतिषीय दृष्टि से आत्मविश्वास और व्यक्तिगत लक्ष्यों पर ध्यान बढ़ाने का समय माना जा सकता है। नौकरीपेशा जातकों को अपने काम की गुणवत्ता पर ध्यान देना चाहिए। व्यापार में नए अवसरों की तलाश की जा सकती है। आर्थिक मामलों में पुराने बकाया अथवा भुगतान की समीक्षा उपयोगी रहेगी। पारिवारिक जीवन में संतुलन बनाएं। विद्यार्थियों के लिए नियमित अभ्यास आवश्यक रहेगा।



धनु

धनु राशि के जातकों के लिए नवंबर का महीना ज्ञान, आध्यात्मिक चिंतन और भविष्य की दिशा निर्धारित करने का अवसर बन सकता है। जातक को अपनी योजना के अनुसार नियमित प्रयास करने चाहिए। नौकरी में जिम्मेदारियों के साथ नई चीजें सीखने का अवसर मिल सकता है। व्यापारियों के लिए नए बाजारों की जानकारी उपयोगी साबित हो सकती है। आर्थिक मामलों में किसी की सलाह पर तुरंत निवेश करने के बजाय स्वयं भी जांच-पड़ताल करें। परिवार के वरिष्ठ सदस्यों का मार्गदर्शन लें। दांपत्य जीवन में एक-दूसरे की राय को महत्व दें। यात्रा से पहले आवश्यक दस्तावेज जांच लें।



मकर

मकर राशि के जातकों के लिए नवंबर का महीना आर्थिक अनुशासन, व्यावसायिक जिम्मेदारियों और दीर्घकालीन योजनाओं पर ध्यान देने का समय रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मेहनत का परिणाम पाने के लिए निरंतरता बनाए रखनी होगी। कार्यक्षेत्र में किसी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को संभालने का अवसर मिल सकता है। व्यापार करने वाले जातक पुराने लेन-देन, कर संबंधी कागजात और साझेदारी के हिसाब को व्यवस्थित रखें। संपत्ति के मामले में दस्तावेजों की जांच अवश्य कराएं। पारिवारिक जीवन में अपनों के लिए समय निकालना आवश्यक रहेगा। स्वास्थ्य के लिए संतुलन बनाए रखें।



कुंभ

कुंभ राशि के जातकों के लिए नवंबर का महीना साझेदारी, सामाजिक संबंधों और कार्यक्षेत्र में अपनी भूमिका को बेहतर बनाने का समय हो सकता है। नौकरी में सहकर्मियों के साथ तालमेल बनाए रखना महत्वपूर्ण रहेगा। व्यापारियों को ग्राहकों की आवश्यकताओं को समझकर निर्णय लेना चाहिए। आर्थिक मामलों में दूसरों के कहने पर जोखिम लेने से बचें। परिवार में किसी महत्वपूर्ण विषय पर आपकी राय मांगी जा सकती है। दांपत्य जीवन में शांतिपूर्वक चर्चा करना बेहतर रहेगा। विद्यार्थियों को पढ़ाई के लिए व्यवस्थित समय-सारणी बनानी चाहिए। मानसिक शांति के लिए ध्यान करें।



मीन

मीन राशि के जातकों के लिए नवंबर का महीना कार्यक्षेत्र में अनुशासन, जिम्मेदारियों के निर्वहन और अपनी दिनचर्या को बेहतर बनाने का संदेश देता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को लंबित कामों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करने का प्रयास करना चाहिए। व्यापारियों के लिए ग्राहकों की सेवा, हिसाब-किताब और कार्यप्रणाली में सुधार उपयोगी रह सकता है। पारिवारिक जीवन में अपनों की समस्याओं को समझने का प्रयास करें। जीवनसाथी के साथ संवाद बनाए रखें। विद्यार्थियों को नियमित अभ्यास करने की आवश्यकता होगी। स्वास्थ्य के लिए संतुलित आहार पर ध्यान दें।

स्वाद वो जो बना दे बात
मनभाती महक, लाजवाब स्वाद, भरपूर पौष्टिकता

CELEBRATING 42 YEARS OF TRUST
THE LIQUID GOLD

ISO 22000 2018

सोना सिक्का®©

शुद्धता, स्वाद और सेहत वाली थाली
सोना सिक्का के संग मनाएं दिवाली



प्रीमियम कच्ची घानी सरसों तेल | रिफाइंड मूंगफली तेल | डबल फिल्टर्ड मूंगफली तेल

मिलते-जुलते नाम और अशुद्ध ब्रांड से सावधान. आपके स्वास्थ्य से बढ़कर कुछ नहीं

Shyam and Shyam Oils Pvt. Ltd. Jodhpur

Plot No. B 5,6,7 (A), 1st Phase, Basni Industrial Area, Jodhpur, (Raj.) डिस्ट्रीब्यूटर बनने एवं डीलरशिप हेतु टोल फ्री नं. पर सम्पर्क करें: 1800 313 3292

0291-2512333, 2512338
sonasikka.com info@sonasikka.com sonasikka
Available on : amazon Flipkart

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda
भारत का अंतर्राष्ट्रीय बैंक

मिसेज एवं मिस्टर कुमार का
मास्टरस्ट्रोक
bob Home Loan

- कम ब्याज दरें
- अधिक ऋण राशि
- त्वरित ऋण प्रोसेसिंग

आवेदन के लिए स्कैन करें



अनुज और प्रिया का
मास्टरस्ट्रोक
bob Auto Loan

- कम ब्याज दरें
- फ्लोटिंग ब्याज दर वाले व्यक्तिगत ऋणों के लिए कोई समय-पूर्व परिसमापन शुल्क नहीं है
- डिजिटल ऋण प्रोसेसिंग

आवेदन के लिए स्कैन करें



टोल-फ्री नंबर (24x7): 1800 5700 / 1800 5000 पर कॉल करें | https://bankofbaroda.bank.in/ | हमें फॉलो करें